शोध पत्रों को प्रकाशित करने के लिए विधि मान्य आई.एस.एस.एन 2321-9645

विश्व स्नेह समाज

वर्ष 20, अंक 01-02, दिसम्बर 2020

एक रचनात्मक क्रान्ति

मूल्यः 15/-रू

सर्वोत्तम तीन काव्य एवं प्रश्नोत्तरी के विजेता

तृतीय काव्य सम्राट प्रतियोगिता

पुरस्कार राशि 11000/रुपये मात्र

इस प्रतियोगिता में उम्र का कोई बंधन नहीं है. देश-विदेश का कोई भी रचनाकार इसमें प्रतिभाग कर सकता है. दिए गए विषय पर आपको अपनी एक रचना पठनीय हस्तलिपि अथवा टंकित कराकर भेजनी होगी। रचना के साथ अपना पूरा नाम, पता, एक फोटो, व्हाट्सएप नंबर अगर ई-मेल हो ईमेल आईडी भेजना होगा। इस बात का विशेष ध्यान रखें कि रचना वाचन में अधिकतम पांच मिनट की हो.

नियम एवं शर्तें:

१. रचना मौलिक होनी चाहिए. इसके लिए मौलिकता का प्रमाण देना आवश्यक होगा। किसी भी स्तर पर मौलिकता में कमी सिद्ध होने पर प्रतिभागिता रद्द कर दी जाएगी।

२. प्रतियोगिता तीन चरणों में होगी. प्रत्येक चरण के विजयी प्रतिभागियों को ह्वाट्स समूह, ई-मेल के माध्यम से जानकारी दी जाएगी.

३. प्रथम चरण के विजयी प्रतिभागियों को विश्व स्नेह समाज की मासिक पत्रिका एक वर्ष की सदस्यता तथा एक सौ रुपये मूल्य की पुस्तकें निःशुल्क दी जाएगी।

४. द्वितीय चरण के लिए केवल 15 रचनाकारों का चयन किया जाएगा. द्वितीय चरण के विजयी प्रतिभागियों को विश्व स्नेह समाज की मासिक पत्रिका दो वर्ष की सदस्यता तथा दो सौ रुपये की पुस्तकें निःशुल्क दी जाएगी।

५. तृतीय एवं अंतिम चरण के लिए 11 रचनाकारों का चयन किया जाएगा. तृतीय चरण में पहुंचने वाले प्रतिभागियों को स्वयं उपस्थित होकर काव्य पाठ करना होगा। प्रथम स्थान पाने वाले प्रतिभागी को 11000/रुपये नगद एवं काव्य सम्राट की उपाधि, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वालों को स्मृति चिन्ह और प्रमाण पत्र तथा शेष 08 प्रतिभागियों को प्रशस्ति पत्र प्रदान किया जाएगा। तृतीय चरण के समस्त प्रतिभागियों को विश्व स्नेह समाज की मासिक पत्रिका पंचवर्षीय सदस्यता तथा तीन सौ रुपये मूल्य की पुस्तकें निःशुल्क दी जाएगी।

६. प्रतिभागियों को मांगे गये विवरण के साथ रुपये पांच सौ का चेक/डीडी/आरटीजीएस/नेफ्ट/आन लाईन अथवा सीधे संस्थान के खाते में जमा कर जमा रसीद की प्रति भेजना अनिवार्य होगा।

खाता धारक का नामः 'सचिव विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद'

बैंक का नाम : यूनियन बैंक ऑफ इंडिया शाखा : प्रीतम नगर, इलाहाबाद

खाता संख्याः 538702010009259 आई.एफ.एस. कोडः यूबीआईएन 0553875

आवेदन की अंतिम तिथि 15 फरवरी 2021

विषय : पर्यावरण एवं प्रकृति

सचिव, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान,
65ए/2, रामचन्द्र मिशन रोड, लक्सों कंपनी के सामने, मुण्डेरा, इलाहाबाद-211011
ह्वाटसएप नं०: 9335155949, sahityaseva@rediffmail.com, hindiseva15@gmail.com

कल, आज और कल भी बहुपयोगी

विश्व स्नेह समाज

मासिक, वर्षः20, अंकः 01—03
दिसम्बर : 2020

इस अंक में......

हिन्दी वालों की हिन्दी वालों से हिन्दी के लिए लड़ाई

.... 6

मातृभाषा-समर्थक संत व जैन आचार्य श्री विद्यासागर जी

.................11

इतनी अच्छी पोस्ट जरूर पढ़िएगा.

........................16

हस्तिनापुर की कहानी

........................24

स्थायी स्तम्भ

अपनी बातः तकनीक ने हिन्दी की बिंदी को चमकाया....................04
विनाशोन्मुख विकास 14
सोसल मीडिया से— जंगल के स्कूल का रिजल्ट...........................15
प्रेरक प्रसंग 21
ये आग कब बुझेगी 25
धारावाहिक उपन्यास मुगल—ए—आजम की विरासत.......................27
कुप्रथा 42
कविताए/गीत/ग़ज़लः डॉ0 मुक्ता कौशिक, डा. मंजु रुस्तगी, शबनम शर्मा, डॉ0 हितेश कुमार शर्मा, डॉ0 पूनम माटिया,, लक्ष्मी प्रसाद गुप्त 'किंकर', डॉ0 राम सहाय बरैया, डॉ0 ज्योति जैन, बलवन्त, ...31
कहानीः छुटकी, युक्ति, स्टार 22,34,41
साहित्य समाचार, ...19, 32, 36, 43, 46
लघु कथाएंः शबनम शर्मा, श्री सीताराम गुप्ता, रोहित यादव....,..37
स्वास्थ्यः स्वास्थ्य सूत्र 48
समीक्षाः 49

मुख्य संरक्षक
श्री बुद्धिसेन शर्मा
संरक्षक सदस्य
श्री डी.पी.उपाध्याय, बलिया, उ.प्र.

प्रबंध सम्पादक
श्रीमती जया
विज्ञापन प्रबंधक
महेन्द्र कुमार अग्रवाल

ब्यूरो
ब्रज बिहारी ब्रजेश, खीरी
निगम प्रकाश कश्यप, मिर्जापुर, उ.प्र.

सम्पादक
गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

संपादकीय कार्यालयः
एल.आई.जी.—93, नीम सराय कालोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद —211011 का0: 09335155949
ई—मेलःvsnehsamaj@rediffmail.com

सभी पद अवैतनिक हैं
पत्रिका में प्रकाशित रचना का कोई भी पारिश्रमिक देय नहीं है।
प्रिंट लाईन—विश्व स्नेह समाज राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका, यूपीहिन्दी/2001/8380, सर्वाधिकार सुरक्षित है. स्वामी की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुर्न प्रकाशन प्रतिबंधित है. स्वतत्वाधिकारी स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक और संपादक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी के द्वारा भार्गव प्रेस बाई का बाग, इलाहाबाद से प्रकाशित किया.

नोटःपत्रिका में प्रकाशित रचनाओं, समाचारों इत्यादि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं हैं. इसके लिए लेखक, रचनाकार, सूचनाकार स्वयं ही उत्तरदायी हैं. जन—जन को सूचना मिलने के उद्देश्य से सभी के विचार, संदेश, आलोचना, शिकायत छापी जाती है. पत्रिका से सम्बन्धित किसी भी प्रकार के वाद—विवाद का निपटारा केवल इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, की अदालतों में होगा.

अपनी बात

तकनीक ने हिन्दी की बिंदी को चमकाया

हर देश और हर भाषा के जीवन में कुछ ऐसे क्षण आते हैं जो उन्हें चिर काल के लिए बदल देते हैं. विभिन्न स्तर पर प्रयास चलते रहते हैं कि अंग्रेजी के हौवे को थोड़ा कम कर और इस भाषा की पकड़ को तनिक ढीलाकर भारतीय भाषाओं को आगे लाया जाए. उग्र राजनीति के इस युग में हिंदी के मसले पर राष्ट्रीय सहमति बन पाना लगभग असंभव दिखता है, लेकिन हिंदी और साथ ही अन्य सभी भारतीय भाषाओं के लिए डिजिटल क्रांति एक मौका है जिसे यदि पकड़ लिया जाए तो निश्चित रूप से एक बड़ी छलांग लगाई जा सकती है.

टेक्नोलाजी वह चीज है जिसके दम पर पिछलग्गू भी एक क्षण में कतार में सबसे आगे आ खड़ा हो सकता है. तकनीक के क्षेत्र में अभूतपूर्व विकास और विस्तार हुआ है, लेकिन तकनीक के क्षेत्र में हिंदी की स्थिति कोई बहुत बेहतर नहीं. हालांकि आज कई एप्प अपने आप को हिंदी में ला रहे हैं. ये मुख्यतः बैंकिंग, यात्रा और ई-कामर्स से जुड़े हैं. कोरोना काल में नई तकनीक ने हिन्दी को बढ़ावा देने में काफी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है. ऑन लाईन पुस्तकों के प्रकाशन ने जहां एक तरफ पाठकों तक पहुंच को आसान एवं सरल बनाया है वहीं दूसरी ओर नवलेखकों को कम लागत में अपनी पुस्तकें तैयार करवाने में काफी सहूलियत मिली है. एक तरफ कवि सम्मेलन, सेमिनार बंद हुए तो ऑन लाईन कवि सम्मेलनों ने काव्य प्रेमियों को जीवंत रखा. सेमिनार के बदले वेबिनारों ने अपनी धूम मचाए रखी. यू-ट्यूब, ब्लाग, फेसबुक, ह्वाटसएप भी कुछ खामियों के बावजूद कहीं न कहीं हिन्दी को आम आदमी तक सुगम, सरल तरीके से पहुचाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहे है.

लेकिन साथ में यह भी उल्लेख करना समीचीन होगा कि ये सभी माध्यम कहीं न कहीं अंग्रेजियत को धारण किए हुए है. इनमें हमें कहीं न कहीं अंग्रेजी का सहारा लेना पड़ता है. इसके लिए भारतीय भाषाओं में एक भारतीय इंटरनेट का निर्माण करने की आवश्यकता है ताकि उसका स्वरूप भारत की भाषाओं की विशेषता के हिसाब से हो. ऐसे उपायों से ही हिंदी का सही मायनों में विकास हो सकेगा और उसका दायरा और व्यापक हो सकेगा. इस मामले में सरकार एक सीमा से ज्यादा कुछ नहीं कर सकती. स्पष्ट है कि हिंदी समाज को ही जिम्मेदारी लेनी होगी.

भारत की जनसंख्या का जो सात-आठ प्रतिशत अंग्रेजी बोलता है वह आनलाइन हो चुका है. शेष जो आनलाइन हो रहे हैं वे भारतीय भाषा भाषी हैं. शायद इनके लिए कोई एप्प विकसित करना एक व्यावसायिक विफलता हो. ऐसे में यह जिम्मेदारी उन हिंदी भाषियों की है जो पहले से आनलाइन हैं और अंग्रेजी में सेवाओं का उपयोग कर रहे हैं. उन्हें नए उत्पादों की मांग करनी चाहिए. इसमें केंद्र सरकार से ज्यादा जिम्मेदारी राज्य सरकारों की है जो हिंदी में बाजार खड़ा करने का एक वातावरण तैयार कर सकती है. सबसे पहले सभी छात्रों को हिंदी टाइपिंग अनिवार्य रूप से कक्षा 10 के पहले सिखाई जानी चाहिए. अंग्रेजी में टाइप करना तो बच्चे आज जल्दी ही सीख लेते हैं, पर हिंदी अगर मजबूरी न हो तो कभी नहीं सीखेंगे. हिंदी में साफ्टवेयर निर्माण के लिए थोड़ा जोर लगाने की जरूरत है. सरकार की भूमिका सिर्फ प्रोत्साहन देने तक की हो सकती है. हिंदी में साफ्टवेयर बनाने के लिए थोड़े से वित्तीय संसाधन और कुछ हिंदी प्रेमी तकनीकी दक्ष युवा पर्याप्त हैं. ध्यान रहे कि आज ऐसे दक्ष युवाओं की कोई कमी नहीं है.

आज हिंदी की एक ही समस्या है कि हिंदी वालों के लिए निजी क्षेत्र में ज्यादा पैसे वाली नौकरियां नहीं हैं. इसका एक मुख्य कारण ऐसी नौकरियों का बडे शहरों में केंद्रित होना है. हिंदी को आगे बढ़ना है तो पहले हिंदी में चलने

वाले उद्योगों जैसे-मनोरंजन, कला, समाचार, धारावाहिक और रेडियो का संपूर्ण हिंदीकरण करना होगा. आज इनमें से किसी के लिए भी आपको किसी खास जगह होने की आवश्यकता नहीं है. आज मनोरंजन, समाचार, धारावाहिक आदि यू-ट्यूब पर ज्यादा देखे जाते हैं. छोटे शहरों के हमारे होनहार यू-ट्यूब पर सेलिब्रिटी बन चुके हैं, लेकिन प्रसिद्ध होने के बाद कूल होने के लिए वे अंग्रेजी के पीछे भागते हैं. यू-ट्यूब उनसे हिंदी में बात नहीं करता. वहां टिप्पणी भी रोमन हिंदी में ही आती है. इसका जवाब यू-ट्यूब का हिंदीकरण नहीं, बल्कि हिंदी का अपना यू-ट्यूब होना है जहां हिंदी में लिखा जाना ही कूल समझा जाए. बस एक तकनीकी सफलता चाहिए और फिर हिंदी छलांग लगाती दिखेगी. वैश्वीकरण के जमाने में सरकार से यह उम्मीद करना ठीक नहीं कि वह फेसबुक, यू-ट्यूब ट्विटर की अनदेखी कर दे या फिर चीन की तरह रवैया अपनाए परंतु सरकार तकनीक के क्षेत्र में हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं के प्रोत्साहन को प्राथमिकता तो दे ही सकती है.

शिक्षा के क्षेत्र में मशीन लर्निंग द्वारा संसार का सारा ज्ञान हमारी भाषा में आसानी से उपलब्ध कराया जा सकता है और अच्छे षिक्षक एक जगह पर होते हुए भी लाखों छात्रों द्वारा देखे-सुने जा सकते हैं. यदि यह मौका छूटा तो हिंदी हमेशा उपयोग-उपभोग की भाषा बनने के लिए अभिशप्त होगी, जैसे कि आज का बालीवुड, जहां बस बोलने के लिए ही हिंदी है. तेजी से बदल रहे संदर्भों में हमें अपने कान, आंख और दिमाग की खिड़कियां खुली रखनी होंगी तभी युवाओं की अभिलाषा को पूर्ण करने में हिंदी एक सेतु का काम कर सकेगी.

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी
संपादक

1996 से त्रैमासिक एवं 2001 से मासिक के रूप में निरन्तर प्रकाशित

कल, आज और कल भी बहुपयोगी

विश्व स्नेह समाज हिन्दी मासिक

एक प्रति–15/रुपये, वार्षिक–150/रुपये,
पंचवर्षीय–750/रुपये, आजीवन–1500/रुपये, संरक्षकः 11000/रुपये

खाता धारक– विश्व स्नेह समाज, **बैंक का नामः** बैंक ऑफ बड़ौदा,
खाता संख्या–66600200000154, **आईएफएससी** कोड–बीएआरबी0वीजेपीआरईई (BARB0VJPREE (0-ZERO) सीधे खाते में जमा, आरटीजीएस, नेफ्ट, ऑन लाइन स्थानान्तरण कर, जमा पर्ची की कापी व पत्र व्यवहार का पता ई–मेल या ह्वाट्सएप कर देवें।

पताः एल.आई.जी–93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा,
इलाहाबाद–211011, मो0: 9335155949, ई–मेलः
vsnehsamaj@rediffmail.com

हिन्दी वालों की हिन्दी वालों से हिन्दी के लिए लड़ाई

असफल होने पर विद्यार्थियों द्वारा आत्महत्याएं अब आम हो चुकी है. यूपीपीएससी में जहाँ पहले अंग्रेजी माध्यम से परीक्षा देने वाले दस से पंद्रह प्रतिशत प्रतिभागी सफल होते थे वहां नियमों में परिवर्तन कर देने से चयनित अभ्यर्थियों में अंग्रेजी माध्यम वालों की संख्या दो तिहाई हो गई. ग्रामीण परिवेश के हिन्दी माध्यम वाले अभ्यर्थी औंधे मुंह गिर पड़े. कभी आईएएस-पीसीएस का हब कहे जाने वाले इलाहाबाद से अब इन सेवाओ में सफल होने वाले अभ्यर्थियों की संख्या नगण्य होती है.

-डा. अमरनाथ

'पूजनीय बड़े पिता जी और माता जी, आप लोग मुझे माफ कर देना. मैं आपका अच्छा बेटा नहीं बन पाया... मैं जा रहा हूं. मैं जिन्दगी से परेशान हो गया हूँ. आप लोग मुझे माफ करना.' राजीव के सुसाइट नोट का यह एक अंश है. 11 सितंबर 2020 को यूपी पीसीएस का रिजल्ट आया. मेधावी छात्र राजीव पटेल को इस बार पूरी उम्मीद थी किन्तु चयन नहीं हुआ. वह दिन भर परेशान था और 12 की रात को उसने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली.

कहा जा सकता है कि असफल होने पर विद्यार्थियों द्वारा इस तरह की आत्महत्याएं अब आम हो चुकी हैं. किन्तु राजीव की आत्महत्या इससे अलग थी. वह प्रतिभाशाली भी था और परिश्रमी भी. उसकी आत्महत्या के पीछे का कारण यह था कि उसने हिन्दी माध्यम से परीक्षा दी थी और आयोग द्वारा परीक्षा प्रणाली में किए गए बदलाव के कारण हिन्दी माध्यम इस वर्ष यूपीपीएससी के परीक्षार्थियों पर आफत का पहाड़ बनकर टूट पड़ा.

यूपीपीएससी में जहाँ पहले अंग्रेजी माध्यम से परीक्षा देने वाले दस से पंद्रह प्रतिशत प्रतिभागी सफल होते थे वहां इस वर्ष नियमों में ऐसा परिवर्तन कर दिया गया कि चयनित अभ्यर्थियों में अंग्रेजी माध्यम वालों की संख्या लगभग दो तिहाई हो गई. ग्रामीण परिवेश के हिन्दी माध्यम वाले अभ्यर्थी औंधे मुंह गिर पड़े. कभी आईएएस-पीसीएस का हब कहे जाने वाले इलाहाबाद से अब इन सेवाओ में सफल होने वाले अभ्यर्थियों की संख्या नगण्य होती है. हिन्दी माध्यम वालों को दिए जाने वाले प्रश्न-पत्र भी आमतौर पर अस्पष्ट तथा विवादों के घेरे में रहते हैं क्योंकि वे मूलतः अंग्रेजी में तैयार किए गए प्रश्नों के अनुवाद होते हैं.

राजीव की आत्महत्या के बाद से हिन्दी माध्यम से परीक्षा देने वाले अभ्यर्थी प्रयागराज की सड़कों पर हैं. वे अहिंसात्मक तरीके से धरना प्रदर्शन कर रहे हैं, कैंडिल मार्च और जुलूस निकाल रहे हैं. ताकि यूपीपीएससी के चेयरमैन के दिल में हिन्दी के प्रति थोड़ी हमदर्दी पैदा हो सके. किन्तु डेढ़ महीने से ज्यादा बीत जाने के बाद भी चेयरमैन महोदय पीड़ित छात्रों के दुख दर्द को सुनने के लिए समय नहीं निकाल सके. हाँ, उ.प्र.प्रतियोगी छात्र मंच के अध्यक्ष संदीप सिंह के अनुसार कोरोना काल में इकट्ठा होने के नाम पर आन्दोलन में शामिल छात्रों पर मुकदमा करके उनकी आवाज दबाने का प्रयास मुस्तैदी से किया जा रहा हैं.

दरअसल आज अंग्रेजी का जो वर्चस्व कायम है उसके लिए रास्ता साफ किया कांग्रेस सरकार ने. वैश्वीकरण के बाद 1995 में होने वाले गैट समझौते से अंग्रेजी का तेजी से बढ़ता हुआ दबाव महसूस किया गया. यह उदारीकरण की स्वाभाविक परिणति थी. जब पश्चिम का माल आने लगा, पश्चिम की संस्कृति आने लगी तो पश्चिम की भाषा को भला कैसे रोका जा सकता था? इसके बाद 2005 में मनमोहन सिंह की सरकार द्वारा गठित ज्ञान आयोग ने जो संस्तुति की उससे अंग्रेजी के मार्ग का बचा खुचा अवरोध भी हट गया. ज्ञान आयोग के अध्यक्ष सैम पित्रोदा ने 40 लाख नए अंग्रेजी शिक्षकों को नियुक्त करने और तत्कालीन मौजूद शिक्षकों को अंग्रेजी में प्रशिक्षित करने की सलाह दे डाली. ऐसा तो गुलामी के दौर में मैकाले भी नहीं कर सका था.

इन्ही परिस्थितियों में भाजपा की राष्ट्रवादी सरकार, स्वदेशी का नारा देती हुई सत्ता में आई. इसने कांग्रेस

विहीन भारत का भी नारा दिया. इस सरकार से उम्मीद थी कि वह अंग्रेजी की आँधी को रोकेगी और भारतीय संस्कृति की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं को सम्मानजनक स्थान बहाल करने के लिए प्रभावी कदम उठाएगी. किन्तु इस सरकार ने जो किया वह सबसे बढ़कर था. इसने शिक्षा को पूरी तरह व्यापारियों के हवाले कर दिया और पिछली सरकारों ने जहाँ एक विषय के रूप में अंग्रेजी पढ़ाने पर जोर दिया था, इस सरकार ने अंग्रेजी को शिक्षा का माध्यम ही बना दिया.

मुख्यमंत्री बनने के बाद योगी आदित्यनाथ जी ने 2017 में सबसे पहला काम यह किया कि प्रदेश के पांच हजार प्राथमिक विद्यालयों को अंग्रेजी माध्यम में बदल दिया. निजी क्षेत्र के विद्यालय तो अंग्रेजी माध्यम के होते ही हैं, जो बचे-खुचे सरकारी विद्यालय हैं उनको भी अंग्रेजी माध्यम में बदल देने के पीछे का तर्क मेरी समझ में आजतक नहीं आया. जनता ने इसकी मांग की हो, इसके लिए कोई आन्दोलन किया हो, ऐसा भी सुनने में नहीं आया था. इतना बड़ा निर्णय लेने के पहले योगी आदित्यनाथ जी ने विशेषज्ञों की समिति बनाकर उनसे कोई सुझाव लेना या पूर्व में गठित आयोगों की सिफारिशों को देखना भी जरूरी नहीं समझा. अखबारों से जो सूचनाएं मिलीं उनसे पता चला कि अभिभावकों की व्यापक मांग को ध्यान में रखते हुए योगी जी ने यह निर्णय लिया था.

मुझे मुंशी प्रेमचंद द्वारा कहा गया एक प्रसंग याद आ रहा है. उन्होंने एकबार जौनपुर के एक मुस्लिम परिवार के बच्चों को थोड़ी अंग्रेजी पढ़ लेने की सलाह दी थी तो उस परिवार के मुखिया ने अंग्रेजी को 'टर्र टर्र की भाषा' कहकर उसकी खिल्ली उड़ाई थी और कहा था कि फारसी पढ़कर उनके घर के तीन लोग मुंसिफ हैं और आराम से बैठे-बैठे फैसले सुनाते हैं, फिर वे टर्र टर्र की भाषा (अंग्रेजी के बहुत से शब्दों के साथ 'टर' जुड़ा है जैसे कलक्टर, बैरिस्टर, इंस्पेक्टर आदि) पढ़ने की जहमत क्यों उठाएं? मैंने बचपन में भोजपुरी की एक कहावत भी सुनी थी- 'पढ़ें फारसी बेचें तेल, यह देखों किस्मत का खेल.' यानी, उस जमाने में फारसी पढ़ने वाले को तेल बेचने की नौबत नहीं आ सकती

मैंने बचपन में भोजपुरी की एक कहावत सुनी थी-'पढ़ें फारसी बेचें तेल, यह देखों किस्मत का खेल.' फारसी उन दिनों कचहरियों तथा सरकारी काम-काज की भाषा थी और उसका बहुत सम्मान था.

थी. फारसी उन दिनों कचहरियों तथा सरकारी काम-काज की भाषा थी और उसका बहुत सम्मान था. यह सही है कि फारसी हमारे देश के किसी प्रान्त का भाषा नहीं थी किन्तु हुकूमत करने वालों की भाषा वही थी. उन दिनों जनतंत्र तो था नहीं. जनता के ऊपर फारसी लाद दी गई और पूरे छह सौ साल तक फारसी हमारे देश पर शासन करती रही. ठीक वही स्थिति आज अंग्रेजी की है. यद्यपि आज हम एक जनतंत्र में रह रहे हैं.

आज यदि अभिभावक अंग्रेजी माध्यम की मांग कर भी रहे हैं तो उसका कारण स्पष्ट है. अंग्रेजी पढ़ने से नौकरियां मिलती हैं. जब चपरासी तक की नौकरियों में भी सरकार अंग्रेजी अनिवार्य करेगी तो अंग्रेजी की मांग बढ़ेगी ही. यह एक ऐसा मुल्क बन चुका है जहां का नागरिक चाहे देश की सभी भाषाओं में निष्णात हो किन्तु एक विदेशी भाषा अंग्रेजी न जानता हो तो उसे इस देश में कोई नौकरी नहीं मिल सकती और चाहे वह इस देश की कोई भी भाषा न जानता हो और सिर्फ एक विदेशी भाषा अंग्रेजी जानता हो तो उसे इस देश की छोटी से लेकर बड़ी तक सभी नौकरियाँ मिल जाएंगी. छोटे से छोटे पदों से लेकर यूपीएससी तक की सभी भर्ती परीक्षाओं में अंग्रेजी का दबदबा है. वन सेवा, चिकित्सा सेवा, इंजीनियरिंग सेवा, रक्षा सेवा आदि में तो केवल अंग्रेजी में ही लिखने की अनिवार्यता है. पता चला है कि इस वर्ष यूपीएससी में 97 प्रतिशत अंग्रेजी माध्यम वाले अभ्यर्थी ही सफल हुए हैं. उच्चतम न्यायालय से लेकर देश के पच्चीस में से इक्कीस उच्च न्यायालयों में किसी भी भारतीय भाषा का प्रयोग नहीं होता है. यह ऐसा तथाकथित आजाद मुल्क है जहां के नागरिक को अपने बारे में मिले फैसले को समझने के लिए भी वकील के पास जाना पड़ता है और उसके लिए भी वकील को पैसे देने पड़ते हैं. मुकदमों के दौरान उसे पता ही नही चलता कि वकील और जज उसके बारे में क्या सवाल-जबाब कर रहे हैं. ऐसे माहौल में कोई अपने बच्चे को अंग्रेजी न पढ़ाने की भूल कैसे कर सकता है? दरअसल, अंग्रेजी इस देश के विकास में सबसे बड़ी बाधा है. सुदूर गांवों में दबी प्रतिभाओं, जिनमें ज्यादातर दलित और आदिवासी हैं, को मुख्य धारा में

शामिल होने से रोकने में अंग्रेजी सबसे बड़ा अवरोध बनकर खड़ी है. हाल ही में प्रकाशित अपनी पुस्तक 'द इंग्लिश मीडियम मिथ' में संक्रान्त सानु ने प्रति व्यक्ति सकल राष्ट्रीय उत्पाद के आधार पर दुनिया के सबसे अमीर और सबसे गरीब, बीस-बीस देशों की सूची दी है. बीस सबसे अमीर देशों के नाम हैं, क्रमशः स्विट्जरलैंड, डेनमार्क, जापान, अमेरिका, स्वीडेन, जर्मनी, आस्ट्रिया, नीदरलैंड, फिनलैंड, बेल्जियम, फ्रांस, ब्रिटेन, आस्ट्रेलिया, इटली, कनाडा, इजराइल, स्पेन, ग्रीस, पुर्तगाल और साउथ कोरिया. इन सभी देशों में उन देशों की जनभाषा ही सरकारी कामकाज की भी भाषा है और शिक्षा के माध्यम की भी.

इसके साथ ही उन्होंने दुनिया के सबसे गरीब बीस देशों की भी सूची दी है. इस सूची में शामिल हैं क्रमशः कांगो, इथियोपिया, बुरुंडी, सीरा लियोन, मालावी, निगेर, चाड, मोजाम्बीक, नेपाल, माली, बुरुकिना फैसो, रवान्डा, मेडागास्कर, कंबोडिया, तंजानिया, नाइजीरिया, अंगोला, लाओस, टोगो और उगान्डा. इनमें से सिर्फ एक देश नेपाल है जहां जनभाषा, शिक्षा के माध्यम की भाषा और सरकारी कामकाज की भाषा एक ही है नेपाली. बाकी उन्नीस देशों में राजकाज की भाषा और शिक्षा के माध्यम की भाषा भारत की तरह जनता की भाषा से भिन्न कोई न कोई विदेशी भाषा है. (द्रष्टव्य, द इंग्लिश मीडियम मिथ, पृष्ठ-12–13) इस उदाहरण से आसानी से समझा जा सकता है कि अंग्रेजी माध्यम हमारे देश के विकास में कितनी बड़ी बाधा है.

वास्तव में व्यक्ति चाहे जितनी भी भाषाएं सीख ले किन्तु वह सोचता अपनी भाषा में ही है. हमारे बच्चे दूसरे की भाषा में पढ़ते हैं फिर उसे अपनी भाषा में सोचने के लिए अनूदित करते हैं और लिखने के लिए फिर उन्हें दूसरे की भाषा में ट्रांसलेट करना पड़ता है. इस तरह हमारे बच्चों के जीवन का एक बड़ा हिस्सा दूसरे की भाषा सीखने में चला जाता है. इसीलिए मौलिक चिन्तन नहीं हो पाता. मौलिक चिन्तन सिर्फ अपनी भाषा में ही हो सकता है. पराई भाषा में हम सिर्फ नकलची पैदा कर सकते हैं. अंग्रेजी माध्यम वाली शिक्षा सिर्फ नकलची पैदा कर रही है.

वास्तव में व्यक्ति चाहे जितनी भी भाषाएं सीख ले किन्तु वह सोचता अपनी भाषा में ही है. हमारे बच्चों के जीवन का एक बड़ा हिस्सा दूसरे की भाषा सीखने में चला जाता है. अंग्रेजी माध्यम वाली शिक्षा सिर्फ नकलची पैदा कर रही है.

जब अंग्रेज नहीं आए थे और हम अपनी भाषा में शिक्षा ग्रहण करते थे तब हमने दुनिया को बुद्ध और महावीर दिए, वेद और उपनिषद दिए, दुनिया का सबसे पहला गणतंत्र दिए, चरक जैसे शरीर विज्ञानी और शूश्रुत जैसे शल्य-चिकित्सक दिए, पाणिनि जैसा वैयाकरण और आर्य भट्ट जैसे खगोलविज्ञानी दिए, पतंजलि जैसा योगाचार्य और कौटिल्य जैसा अर्थशास्त्री दिए. तानसेन जैसा संगीतज्ञ, तुलसीदास जैसा कवि और ताजमहल जैसी अजूबा इमारत दिए. हमारे देश में तक्षशिला और नालंदा जैसे विश्वविद्यालय थे जहां दुनिया भर के विद्यार्थी अध्ययन करने आते थे. इस देश को 'सोने की चिड़िया' कहा जाता था जिसके आकर्षण में ही दुनिया भर के लुटेरे यहां आते रहे. प्रस्तावित नई शिक्षा नीति में भी भारत के अतीत का गौरव-गान किया गया है और विश्व गुरु बनने का सपना देखा गया है (द्रष्टव्य, राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020, पृष्ठ-4). किन्तु इस बात की ओर ध्यान नहीं दिया गया है कि भारत की उक्त समस्त उपलब्धियाँ अपनी भाषाओं में अध्ययन का परिणाम थीं.

इसी तरह नई शिक्षा नीति में प्राचीन समृद्ध सभ्यताओं में भारत, मेसोपोटामिया, मिस्र, चीन और ग्रीस तथा आधुनिक सभ्यताओं में संयुक्त राज्य अमेरिका, जर्मनी, इजराइल, दक्षिण कोरिया और जापान को आदर्श के रूप में रेखांकित किया गया है (द्रष्टव्य, राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020, पृष्ठ 72). नीति निर्माताओं से पूछा जाना चाहिए कि क्या उपर्युक्त में से कोई भी देश पराई भाषा को अपने विद्यार्थियों की शिक्षा का माध्यम बनाया है? या राज काज का काम पराई भाषा में करता है?

हमारे प्रधानमंत्री जी ने जापान की तकनीक और कर्ज के बलपर जिस बुलेट ट्रेन की नींव रखी है उस जापान की कुल आबादी सिर्फ 12 करोड़ है. वह छोटे छोटे द्वीपों का समूह है. वहां का तीन चौथाई से अधिक भाग पहाड़ है और सिर्फ 13 प्रतिशत हिस्से में ही खेती हो सकती है. फिर भी वहां सिर्फ भौतिकी में 13 नोबेल पुरस्कार पाने वाले वैज्ञानिक हैं. ऐसा इसलिए है कि वहां शत प्रतिशत जनता अपनी भाषा 'जापानी' में ही शिक्षा ग्रहण करती है. इसी तरह जिस इजराइल के विकास

पर वे मुग्ध हैं उस इजराइल की कुल आबादी मात्र 83 लाख है और वहां 11 नोबेल पुरस्कार प्राप्त वैज्ञानिक हैं क्योंकि वहां भी उनकी अपनी भाषा 'हिब्रू' में शिक्षा दी जाती है.

हमारा पड़ोसी चीन उसी तरह का बहुभाषी विशाल देश है जिस तरह का भारत. किन्तु उसने भी अपनी एक भाषा चीनी (मंदारिन) को प्रतिष्ठित किया और उसे वहां पढ़ाई का माध्यम बनाया. चीनी बहुत कठिन भाषा है. चीनी लिपि दुनिया की संभवतरू सबसे कठिन लिपियों में से एक है. वह चित्र-लिपि से विकसित हुई है. आज चीन जिस ऊंचाई पर पहुंचा है उसका सबसे प्रमुख कारण यही है कि उसने अपने देश में शिक्षा का माध्यम और राजकाज की भाषा अपने देश की चीनी भाषा को बनाया.

जिस अमेरिका और इंग्लैंड की अंग्रेजी हमारे बच्चों पर लादी जा रही हैं उसी अमेरिका और इंग्लैण्ड में पढ़ाई के लिए दूसरे देश से जाने वाले हर सख्स को आइइएलटीएस (इंटरनेशनल इंग्लिश लैंग्वेज टेस्टिंग सिस्टम) अथवा टाफेल (टेस्ट आफ इंग्लिश एज फारेन लैंग्वेज) जैसी परीक्षाएं पास करनी अनिवार्य हैं. दूसरी ओर, हमारे देश के अधिकाँश अंग्रेजी माध्यम वाले स्कूलों में बच्चों को अपने देश की राजभाषा हिन्दी या मातृभाषा बोलने पर दंडित किया जाता है और हमारी सरकारें कुछ नहीं बोलतीं. यह गुलामी नहीं तो क्या है? बेशक गोरों की नहीं, काले अंग्रेजों की गुलामी.

इससे ज्यादा आश्चर्य की बात क्या हो सकती है कि जिस राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 की भूरि-भूरि प्रशंसा की जा रही है, हिन्दी-हितैषी सरकार की उस शिक्षा नीति में हिन्दी का कहीं जिक्र तक नहीं है. यदि यह शिक्षा नीति लागू हो गई तो हिन्दी सिर्फ जनता के बोलचाल, गीत-गवनई और मनोरंजन की भाषा बनकर रह जाएगी. आज जरूरत है सबके लिए समान, पूरी तरह मुफ्त और सबको अपनी मातृभाषाओं में गुणवत्ता युक्त शिक्षा की. संविधान का मूल संकल्प हमें 'अवसर की समानता' का अधिकार देता है. संविधान का अनुच्छेद 51ए भी देश के प्रत्येक नागरिक और बच्चों को वैज्ञानिक दृष्टिकोण वाली समान शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार देता है.

प्रश्न यह है कि आजादी की तीन चौथाई सदी बीत जाने के बाद भी सबको समान, मुफ्त और उनकी मातृभाषाओं में शिक्षा क्यों उपलब्ध नहीं कराई जा रही है? यदि सरकार चाहे तो यह सिर्फ चार-पांच वर्षों में संभव है. केन्द्रीय विद्यालयों जैसे विद्यालय देश के सभी हिस्सों में आवश्यकतानुसार क्यों नहीं बन सकते? नई शिक्षा नीति में भी शिक्षा के लिए जी.डी.पी. का छह प्रतिशत तय किया गया है. पहले की सरकारें भी शिक्षा के मद में लगभग इतना ही निर्धारित करती थीं किन्तु खर्च मात्र ढाई-तीन प्रतिशत ही करती थीं. शिक्षा का बजट कम से कम नौ से दस प्रतिशत तक होना चाहिए. आज देश का हर नागरिक अपनी आमदनी का एक बड़ा हिस्सा अपने बच्चों की शिक्षा पर खर्च करता है. यदि सरकार खुद बेहतर और सस्ती शिक्षा उपलब्ध कराती है तो जनता उसके लिए कुछ अधिक टैक्स देकर भी बहुत अधिक लाभ में रहेगी क्योंकि शिक्षा के नाम पर निजी शिक्षण संस्थाओं की लूट से वह मुक्त हो जाएगी.

नई शिक्षी नीति में विदेशी विश्वविद्यालयों को आमंत्रित किया गया है. यदि ऐसा हुआ तो ज्ञान, सत्ता और प्रतिष्ठित नौकरी चंद संपन्न लोगों के हाथ में सिमट कर रह जाएगी. ये विदेशी विश्वविद्यालय यहां शिक्षा का व्यापार करने और उससे अधिक से अधिक मुनाफा कमाने के लिए आएंगे. ऐसी दशा में शिक्षा इतनी मंहगीं हो जाएगी कि वह देश की बहुसंख्यक आबादी की पहुंच से बाहर हो जाएगी.

18 अगस्त 2015 को इलाहाबाद हाई कोर्ट ने एक ऐतिहासिक फैसला दिया था. इस फैसले में माननीय हाईकोर्ट ने आदेश दिया था कि राजकीय कोष से वेतन पाने वाले सभी नौकरशाहों, सरकारी कर्मचारियों, जन प्रतिनिधियों आदि के बच्चों कों सरकारी विद्यालयों में ही शिक्षा दी जाय. यदि ऐसा हो सके तो देश की शिक्षा व्यवस्था का काया कल्प होने में समय नहीं लगेगा. कल्पना करें कि जिस प्राथमिक विद्यालय में जिले के जिलाधिकारी का बच्चा पढ़ेगा उसमें क्या संसाधनों का अभाव रह पाएगा? किन्तु इलाहाबाद हाई कोर्ट का उक्त फैसला जहां देशभर में लागू होना चाहिए था, वहां अपने प्रदेश में ही उसे रद्दी की टोकरी में डाल दिया गया. हमारे पड़ोस के देश

भूटान में राज-परिवार के बच्चे भी सरकारी विद्यालयों में ही पढ़ते हैं. वहां भी निजी विद्यालय हैं किन्तु जिन बच्चों का प्रवेश सरकारी विद्यालयों में नहीं हो पाता वे ही निजी विद्यालयों में प्रवेश लेते है. हमारे दूसरे पड़ोसी चीन से लौटकर आने वाले लोग बताते हैं कि वहां गाँव का सबसे सुन्दर भवन उस गाँव का विद्यालय होता है.

नई शिक्षी नीति में विदेशी विश्वविद्यालयों को आमंत्रित किया गया है और देश में आने के लिए उन्हें सरकारी विश्वविद्यालयों जितनी सुविधाएं देने की बात कही गई है. यदि ऐसा हुआ तो ज्ञान, सत्ता और प्रतिष्ठित नौकरी चंद संपन्न लोगों के हाथ में सिमट कर रह जाएगी. आखिर विदेशी विश्वविद्यालय हमारे देश में ज्ञान-दान करने तो आएंगे नहीं. वे यहां शिक्षा का व्यापार करने और उससे अधिक से अधिक मुनाफा कमाने के लिए आएंगे. ऐसी दशा में शिक्षा इतनी मंहगीं हो जाएगी कि वह देश की बहुसंख्यक आबादी की पहुंच से बाहर हो जाएगी. पश्चिमी देशों की तरह उच्च्व शिक्षा की अभिलाषा रखने वालों को शिक्षा के लिए कर्ज लेना होगा और उसके बाद जीवन का बड़ा हिस्सा उस कर्ज को चुकाने में गंवा देना पड़ेगा.

अंगेजी के महत्व को भला कैसे अस्वीकार किया जा सकता है? किन्तु हमें कितनी अंग्रेजी चाहिए? क्या हमारे दैनिक जीवन का अंग्रेजी में चलना हमारे और हमारे देश के हित में है? एक विषय के रूप में अंग्रेजी भाषा की शिक्षा देना बुरा नहीं है, किन्तु बचपन में ही शिक्षा के माध्यम के रूप में बच्चों पर अंग्रेजी थोप देना और उनकी अपनी भाषाएं छीन लेना भीषण क्रूरता और अपराध है. इसके लिए भविष्य हमें कभी माफ नहीं करेगा.

जहाँ तक एक भाषा के रूप में अंग्रेजी सीखने का सवाल है, यूनेस्को का सुझाव है कि, 'यह स्वतः सिद्ध है कि बच्चे के लिए शिक्षा का सबसे बढ़िया माध्यम उसकी मातृभाषा है.... शैक्षिक आधार पर वह मातृभाषा के माध्यम से एक अनजाने माध्यम की अपेक्षा तेजी से सीखता है.' (भाषानीति के बारे में अंतर्राष्ट्रीय खोज, जोगा सिंह विर्क, पृष्ठ-4) इतना ही नहीं ब्रिटिश कौंसिल भी, जिसका काम ही अंग्रेजी सिखाना है, ठीक इसी तरह का सुझाव देता है.

एक विषय के रूप में अंग्रेजी भाषा की शिक्षा देना बुरा नहीं है, किन्तु बचपन में ही शिक्षा के माध्यम के रूप में बच्चों पर अंग्रेजी थोप देना और उनकी अपनी भाषाएं छीन लेना भीषण क्रूरता और अपराध है.

दरअसल स्वदेशी, स्वभाषा, भारतीयता, राष्ट्रवाद आदि अपने सिद्धांतों के विरुद्ध सरकार, हमारे बच्चों पर पराई भाषा अंग्रेजी इसलिए थोप रही है क्योंकि आज सरकार ही नहीं, किसी भी बड़े राजनीतिक दल के सामने मुख्य प्रश्न देश के विकास का नहीं है, संस्कृति का भी नहीं है. उनके सामने मुख्य प्रश्न कुर्सी का है और कुर्सी के लिए होने वाले चुनाव में खर्च, चंदा, कमीशन, रिश्वत आदि सबकुछ तो उद्योगपति ही देते हैं और इसमें सहयोग मिलता है ब्यूरोक्रेसी का. आज उद्योगपति ही नौकरशाहों की मिली-भगत से देश चला रहे हैं. सरकार अब उनकी दलाल की भूमिका में है. इसीलिए उद्योगपतियों और नौकरशाहों के हित को ध्यान में रखकर ही कायदे-कानून बन रहे हैं. 2011 की जनगणना रिपोर्ट के अनुसार हमारे देश में अंग्रेजी भाषियों की संख्या 0.02 प्रतिशत है. यानी, इस देश पर 0.02 प्रतिशत अंग्रेजी बोलने वाले लोग 99.08 प्रतिशत भारतीय भाषाएं बोलने वालों पर अंग्रेजी रूपी विलायती हथियार के बल पर शासन कर रहे हैं.

वैसे भी आज देश के बड़े औद्योगिक घरानों और बहुराष्ट्रीय कंपनियों को निरक्षर लेबर की जरूरत नहीं है. उन्हें और थोड़ी अंग्रेजी जानने वाले 'स्किल्ड लेबर' चाहिए. उन्हें ऐसे लेबर चाहिए जो जरूरत होने पर कंप्यूटर पर भी हाथ फेर सकें. सुसंस्कृत मनुष्य अथवा मौलिक चिन्तन करने वाले विद्वान या वैज्ञानिक तैयार करना अब नेताओं को अपने ही पैरों में कुल्हाड़ी मारने जैसा लग रहा है. अकारण नहीं है कि आज बुद्धिजीवी ही सर्वाधिक निशाने पर हैं.

फिलहाल, अभी तो प्रयागराज में संघर्षरत अभ्यर्थियों को आपकी मदद की गुहार है.

(लेखक कलकत्ता विश्वविद्यालय के पूर्व प्रोफेसर और हिन्दी विभागाध्यक्ष हैं)

मातृभाषा-समर्थक संत व जैन आचार्य श्री विद्यासागर जी

भारतीय संस्कृति को नजरअंदाज कर विदेशी संस्कृति को तरफ दौड़ लगाई जा रही है. यह जानते हुए कि विदेशी संस्कृति अपनाकर जीवन का उद्धार नहीं किया जा सकता. विदेशी संस्कृति सम्मानपूर्वक जीने की सीख नहीं देती है, बल्कि भारतीय संस्कारों का पतन कराने में अहम भूमिका निभाती है.

साहित्य, संस्कृति एवं समाज का दर्पण होता है. अंग्रेजी के कारण सब नष्ट हो रहा है.

- निर्मल कुमार पटौदी

देश में ऐसे संतों, धर्माचार्यों, योगाचार्यों, आचार्यों, आध्यात्मिक गुरुओं, कथावाचकों आदि की कमी नहीं, जिनके देश में लाखों अनुयायी हैं. ये ज्यादातर भारतीय संस्कृति व ज्ञान के समर्थक भी हैं. इनमें से कुछ के पास अकूत संपत्ति व संसाधन भी हैं. सब जानते -समझते हैं कि अपनी भाषाओं के बिना अपने धर्म और संस्कृति को बचाना संभव नहीं. यह जानते हुए भी इनमें शायद ही कोई भारतीय भाषाओं के साथ खड़ा हुआ हो. यदि ये अपनी भाषाओं के लिए सक्रिय योगदान दें तो प्राचीन ज्ञान-विज्ञान, आध्यात्म, धर्म-संस्कृति की रक्षा की जा सकती है. लेकिन एक संत हैं, कन्नड़ भाषी विद्वान, परम आदरणीय संत व जैन आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज, जो व्यक्ति के विकास के लिए मातृभाषा में शिक्षा को अति आवश्यक मानते हुए इसके लिए निरंतर प्रयासरत हैं.

आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज

भारत के इतिहास में जब भी संकट, विघ्न, बाधाएँ उत्पन्न हुई हैं, तब समय ने समाधान लिए किसी अवतार का अवतरण हुआ है. इसी परंपरा में विलक्षण संत हैं कन्नड़ भाषी, कवि, लेखक, प्रकाण्ड पण्डित, अध्यात्मवेत्ता, कठोर आत्म तपस्वी और परोपकारी विद्यासागर हमारे बीच में हैं. वे हैं तो दिगंबर मुनि, आचार्य, लेकिन जैन समाज ही नहीं अजैन समाज के लोग भी उनके प्रति अगाध श्रद्धाभाव रखते हैं. आपकी वाणी को सभी समुदाय के लोग पवित्र वचनों की तरह आत्मसात करते हैं. आपसे मिलने प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति, शंकराचार्य और हर ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र की विभिन्न विचारधार की सुविज्ञ हस्तियाँ पहुँची हैं. नई शिक्षा नीति नीति समिति के अध्यक्ष, सुविख्यात वैज्ञानिक और भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संस्थान के पूर्व अध्यक्ष कस्तूरी रंगन जी भी नई शिक्षा नीति के संबंध में अनसे मार्गदर्शन लेने के लिए उनसे मिलने गए थे.

दिव्यमूर्ति विद्यासागर जी महाराज का कहना है कि भारतीय संस्कृति को नजरअंदाज कर विदेशी संस्कृति को तरफ दौड़ लगाई जा रही है. यह जानते हुए कि विदेशी संस्कृति अपनाकर जीवन का उद्धार नहीं किया जा सकता। विदेशी संस्कृति सम्मानपूर्वक जीने की सीख नहीं देती है, बल्कि भारतीय संस्कारों का पतन कराने में अहम भूमिका निभाती है. हम ज्ञान भविष्य में बढ़ाना चाहते हैं, परंतु अतीत की तरफ नहीं देखते. शिक्षा एक संकेत है, जिसके चारों कोणों को जानना आवश्यक है. आंखें हैं, परंतु फिर भी देख नहीं पा रहे हैं. शिक्षा सूत्रों को खोलने की ओर इंगित करती है. उन्हें देख नहीं रहे हैं. शिक्षक गाइड नहीं हो सकता. मूल्य की ओर बढ़ने की जरूरत है. सत्य यह कि शिक्षा का मूल उद्देश्य ही ज्ञात नहीं हो पा रहा है. संकेत दिशा सूचक है. इसे श्रुतज्ञान कहते हैं. मतिज्ञान के बिना श्रुतज्ञान की कोई अवधारणा नहीं है. हेय और उपादेय जाग्रत होता है श्रुतज्ञान के माध्यम से. विषय तीन होते हैं-कर्ता, कार्य और कर्म. शिक्षा में इन तीनों का समावेश जरूरी है. आज भी शिक्षा की सही दिशा का निर्धारण नहीं हो पा रहा है. आत्म कल्याणी और भारतीय संस्कृति के पोषक संत शिरोमणि विद्यासागर का पक्का विश्वास है कि स्वराज्य की दिशा और दशा को बदलना है, तो शिक्षा, भाषा, न्याय और सरकार ये चारों एक-दूसरे के पूरक हैं. इनमें वांछित सुधार किए बिना वांछित परिवर्तन नहीं हो सकेगा. चारों क्षेत्रों में स्वाधीनता के मूल्यों की आवश्यकता के अनुसार समग्र सुधार करना होगा, तब ही भारत, भारतीय और भारतीयता से देश साक्षात्कार कर सकेगा. यह स्वभाषा से ही संभव है.

आंग्ल भाषा भारत देश की संस्कृति, इतिहास, जीवनदर्शन को नष्ट कर हमारे स्वाभिमान, गौरव एवं आस्था को नष्ट कर रही है. साहित्य,

संस्कृति एवं समाज का दर्पण होता है. अंग्रेजी के कारण सब नष्ट हो रहा है. अपनी विशिष्ट शैलि में सम्बोधित करते हुए-'भारतीयों सुन रहे हो ना, ये स्वाभिमान की बात है. स्वाभिमान का अर्थ समझते हो?' ये अभिमान की बात नहीं है, मर्यादा की बात है. हमने कायिक और वाचनिक स्वतंत्रता ही नहीं ली अपितु मानसिक स्वतंत्रता भी ली है. जिस कारण अपनी सांस्कृतिक धरोहर को पुनः जीवित कर ली. संस्कृति भाषा से संबंध रखती है. हमारा वैचारिक आदान-प्रदान, शिक्षण, पठन-पाठन, चिन्तन-मनन, लेखन-वाचन सब कुछ स्वभाषा में होना चाहिए. पूरा देश अंग्रेजी के मामले में सर्वसम्मत नहीं है, फिर भी सर्वतंत्र पर उसने अपना अधिकार जमा रखा है. इससे देश का स्वाभिमान कैसे बढ़ सकता है? आप माँ-पिता के साथ किस भाषा में बात करते हैं? परिवार के साथ आप किस भाषा में बात करते हैं? अपनी भावाभिव्यक्ति किस भाषा भाषा में करते हैं? मातृभाषा के बिना तो कर ही नहीं सकते. नहीं करते हैं तो आप घर के सदस्य कैसे माने जा सकते हैं? इंग्लिश सीख लेने से क्या आप इंग्लिश में रोते हो या इंग्लिश में हंसते हो?

वे कहते हैं, 'आज पूरे देश के शहरों में जहां भी जाओ भारतीय भाषाओं का लोप हो रहा है. सब जगह, इंग्लिश का बोलबाला हो गया है. इसके चलते महिलाएं भी सँस्कार खो बैठी हैं. वेशभूषा, खान-पान, रहन-सहन, शिक्षा-दीक्षा सब समाप्त हो गया है. क्या इसका नाम स्वतंत्रता है?...मैं इसे स्वतंत्रता नहीं मानता, मैं इसका समर्थक न था, न हूँ, और न रहूंगा. यदि मेरी बात अच्छी लगती हो, तो आप लोगों को इस दिशा में अभियान चालू कर देना चाहिए. यह कोई देशद्रोह नहीं होगा बल्कि देश की संस्कृति को सुरक्षित रखने का पवित्र अभियान होगा. स्वतंत्रता का झूठा अभिमान मत करो, किंतु मर्यादा सिखाने वाली संस्कृति को सुरक्षित करने का स्वाभिमान जागृत करो, यही एक मात्र देशभक्ति है.'

उनका कहना है कि भाषा के माध्यम से भावों का आदान-प्रदान होता है। ऐसे भावों का प्रचार-सम्प्रेषण करें जिससे भारत भारत वापस लौट आयें.

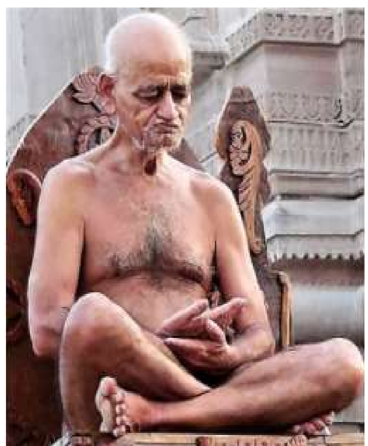

आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज

भाषा की स्वतंत्रता जब तक नहीं तब तक देश की उन्नति आप नहीं कर सकते. आज देशी-विदेशी विद्वानों ने, दार्शनिकों ने, वैज्ञानिकों ने कहा है-जिस राष्ट्र में अपनी भाषा नहीं उसका कभी भी ठीक से विकास नहीं हुआ, 'न भूतो, न भविष्यति.' संत विद्यासागर जी का स्पष्ट मानना है कि शिक्षा को सुलभ और भारतीय परंपरा के अनुरूप बनाने से ही राष्ट्र की तस्वीर को बेहतर बनाया जा सकेगा. आपका मानना है शिक्षा भारत में भारतीय भाषाओं के माध्यम से अनिवार्य होना चाहिए, तब ही भारत की तस्वीर बदल सकती है.

श्रमण संस्कृति के उपासक युगदृष्टा विद्यासागर जी महाराज का मानना है कि शब्दकोश के अभाव में कवि का अस्तित्व नहीं होता है. ग्राम में जो संग्राम हो रहा है, उस पर विराम लगाओ. जनता को उसके अधिकारों से वंचित नहीं रखों. युगांतकारी संत विद्यासागर का चिंतन है कि ज्ञान मेरा स्वभाव है, पर जब सामने कुछ होता है तब जान पाता हूँ. विचारों के लिए वस्तु चाहिए. कुछ कमी हो तो उसकी पूर्ति ज्ञान के माध्यम से कर सकते हैं. इसके लिए आवश्यक है स्वभाषा.

अब जो तरंग उठी है उसे और तेजी से उठाओ. हमें रणनीति और राजनीति से ऊपर उठकर प्राचीन भारत की नीति को अपनाने की जरुरत है. विचार करिए आज भारत के 90 प्रतिशत इंजीनियर बेकार हैं. यह सुनकर बुरा लगता है. ७३ वर्षों में भी हम जो होना चाहिए, कुछ कर नहीं पा रहे है. आज की शिक्षा कठिन दौर से गुजर रही है. निरुद्देश्य शिक्षा कोई मूल्य नहीं रखती है. वह तो ऋण को ही बढ़ाने वाली है. जबकि रोजगार की प्राप्ति नहीं हो पा रही है. सोचने की जरुरत है हम ऋणी क्यों होते जा रहे हैं, परंतु वास्तविक उन्नति तक. नहीं पहुंच पा रहे हैं. परलोक को स्वीकार कर रहे हैं, इहलोक को नहीं देख पा रहे हैं. विदेशी भाषा और शिक्षा नीति पर चल कर गर्त में जाने का रास्ता हम खुद ही बना रहे है. शिक्षा तो दिशाबोध है इष्ट की प्राप्ति के लिए, परंतु अनिष्ट की ओर बढ़ रहे हैं. आप कर्ता हैं, कार्य की दिशा में बढ़े, कर्म को प्रधानता दें और सही दिशा की ओर सही शिक्षा नीति की दिशा में संशोधन कें. विद्यालय का वास्तविक अर्थ जाने. आज विकास के नाम पर अंधानुकरण चल रहा है. जिसे भेड़ चाल कहा जाता है.

विदेशी भाषा में शिक्षा के कारण भारतीय युवा विदेशी सभ्यता को अपनाने के लिए कसरत कर रहे हैं, जो कि मात्र पतन का कारण बनता है. सरल आत्मानुभवी विद्यासागर जी ने जनवरी माह की पहली तारीख को विदेशी सभ्यता से दूर रहने की सीख देते हुए व्यक्त किया कि तारीख नहीं तिथि को सभ्यता मानकर मुहूर्त के अनुसार माँगलिक कार्य किये जाते हैं. भारतीयता के पोषक विद्यासागर जी का कहना है कि भारत का नया साल जनवरी से प्रारंभ नहीं होता है, बल्कि चौत्र महिने से होता है. लेकिन विदेशी संस्कृति का भारतीय लोगों के दिलोदिमाग में स्थान बना लेने के कारण ही जनवरी की एक तारीख को ही नए साल का आगाज मानकर खुशियाँ मनाते हैं. चैत्र माह के प्रारंभ होते ही हमारा नया साल शुरू हो जाता है. नये साल की खुशी चैत्र माह में मनानी चाहिए, विदेशी जनवरी पर नहीं, लेकिन सब कुछ विपरित हो रहा है. अतः आवश्यकता इस बात की है कि भारतीयों को विदेशी संस्कृति को तिलांजलि देकर देशी संस्कृति को अपनाना होगा, तभी जीवन में उम्मीदों की बयार बहने के साथ ही सफलता अर्जित हो जायगी.

135 बाल ब्रह्मचारी मुनि और 172 आर्यिका माताओं के गुरु विद्यासागर जी का मानना है कि संस्कारों की प्रथम पाठशाला माता और पिता होते हैं. द्वितीय गुरु और तृतीय गुरुकुल. माता-पिता के संस्कारों से बालक नींव मजबूत होती है. गुरु आधार शिला बनते हैं और गुरुकुल सम्पूर्णता की ओर ले जाता है. कभी भारत शिक्षा का ऐसा केंद्र था, जहाँ दुनिया भर के लोग शिक्षा प्राप्त करने के लिए लालायित रहते थे. आज ठीक उसके विपरित भारत का भाग्य विधाता युवा अपनी मौलिक शिक्षा को छोड़ कर परदेश की ओर रुख कर रहा है. स्वतंत्रता के बाद हमारे संस्कारों की बुनियाद ही चरमरानगई है और गुरु, गुरुकुल और माता-पिता के संस्कारों की बुलंद इमारत भरभरा कर के धरासयी हो गयी। ये चिंतन, मनन, शोध और अनुसंधान की कसौटी है.

सदगुरु विद्यासागर जी के अनुसार मातृभाषा ही वो जलधार है, जो शिक्षा की प्यास को मिटा सकती है. भाषा तो औषधि का काम करती है. लोककल्याण के भावक विद्यासागर का मानना है कि विद्यालय, विद्यार्थी के समग्र विकास, सामाजिक, राष्ट्रीय प्रगति, सभ्यता व संस्कृति के उत्थान के केन्द्र होते हैं. अनेक विश्व प्रसिद्ध शिक्षा केंद्र भारत भूमि पर संचालित थे. तपः पूत का चिंतन है कि शिक्षा के प्राचीन ज्ञान-केन्द्र, तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला, वालभी, सौमपुरा, ओडांदपुरी में ज्ञानार्जन के लिए विदेशों से आते थे, ज्ञान की उस प्राचीन विशेषता को पुनः अपनाया जाय. शिक्षा भारतीय भाषाओं के माध्यम से दी जाय. दुनिया की भाषाओं के ज्ञान के लिए हमारी भाषाओं के ज्ञान की खिड़कियां खुली रहे. संविधान सम्मत अधिकारिक राजभाषा हिंदी एवं प्रादेशिक भाषाओं को शिक्षा, प्रशासन और न्याय के क्षेत्र में समुचित महत्व दिया जाय। आपका उदघोष है-'अपना देश अपनी भाषा', 'इण्डिया हटाओ-भारत लौटाओ.' गुरुकुलों के प्राकृतिक परिसरों में ज्ञानी-ध्यानी, तपस्वी, कला -कौशल में निपुण गुरुओं के मार्गदर्शन में शिष्य-शिष्याएँ अपने छुपी अनंत संभावनाओं को प्रकट करते थे. आपकी असीम अनुकंपा और दूरदृष्टि से पल्लवित, पुष्पित व फलित भारत भर में अनूठा व अद्वितीय कन्या आवासीय शिक्षण संस्थान हैं. जहाँ शिक्षा अर्थोपार्जन का साधन नहीं अपितु ज्ञान दान की पावन प्रक्रिया है.

मनुष्य बुद्धि व गुणों के विकास और संस्कारों के संवर्धन से मानव बने और भारत प्रतिभा में निमग्न हो. स्वस्थ्य तन, स्वस्थ्य मन, स्वस्थ्य वचन, स्वस्थ्य धन, स्वस्थ्य वन, स्वस्थ्य वतन, स्वस्थ्य चेतन यह ध्येय है. महागुरु के आशीर्वाद से वैसी गुरुकुल व गुरु-शिष्य परंपराओं की परछाईं है-'प्रतिभा-स्थली ज्ञानोदय विद्यापीठ. जहां बालिकाओं के जीवन को संवारने के लिए-'जीवन का निर्वाह नहीं निर्माण' इस सूत्र को लक्ष्य करके जबलपुर-मध्य प्रदेश, चन्द्रगिरी-छत्तीसगढ़, रामटेक नागपुर-महाराष्ट्र, पपौरा-टीकमगढ़-मध्यप्रदेश और इंदौर-मध्यप्रदेश में आपके मार्गदर्शन से बालब्रह्मचारिणी विदुषी प्रशिक्षित शिक्षिकाएं कन्याओं के उज्जवल भविष्य के निर्माण हेतु निष्काम, निस्वार्थ सेवाएँ अहर्निश सेवाभाव से शिक्षा प्रदान करने का दायित्व परिपूर्ण कर रही हैं. सीबीएसई मान्यता प्राप्त शिक्षा के ये सँस्थान आज के आधुनिक परिवेश में प्राचीन गुरुकुलों की स्मृति को पुनर्जीवित कर रहे हैं.

सन् 1992 से युवकों के लिए 'श्री भारतवर्षीय दिगंबर जैन प्रशासकीय प्रशिक्षण सँस्थान' जबलपुर में संचालित है. यहाँ के लगभग पांच सौ युवक मध्य प्रदेश सरकार में सेवारत हैं. दिल्ली में यूपीएससी एवं आईएएस के लिए 'अनुशासन', इंदौर में 'आचार्य ज्ञानसागर छात्रावास', 'प्रतिभा-प्रतिक्षा' तथा भोपाल में 'अनुशासन सँस्थान' जिसमें संघ व न्यायिक सेवा परीक्षाओं की तैयारी हेतु संचालित है.

-उपाध्यक्ष, वैश्विक हिंदी सम्मेलन
इंदौर-452010, म.प्र.

विनाशोन्मुख विकास

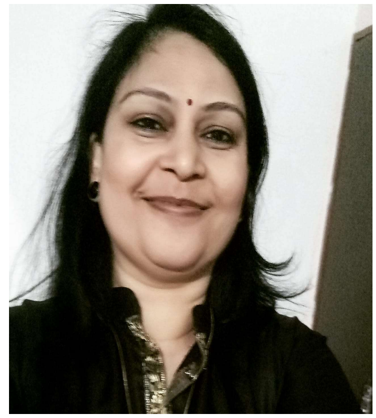

-डॉ० ज्योति मिश्रा

सम्पूर्ण विश्व समेत भारत जैव वैविध्य का एक बहुत बड़ा केन्द्र है. मानव द्वारा बढ़ती जनसंख्या एवं उसकी भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु नित नये आविष्कार किए जा रहे हैं. साथ ही प्रकृति द्वारा प्रदत्त उपहारों का भीषणतम शोषण किया जा रहा है. जंगल, वायु एवं जल का निकृष्टतम स्तर का संहार मानव सभ्यता द्वारा वर्तमान में हो रहा है जो जलवायु के परिवर्तन को बेहद अंसतुलित करता जा रहा है.

वीरान क्षेत्रों में भी नित होने वाले निर्माण कार्य यथा मकान, सड़के बाजार व अन्य खेती योग्य भूमि को नष्ट कर रहे हैं. जंगल व उसकी शोभा जानवरों के अस्तित्व को ही खतरे में डाला जा रहा है. पेट्रोल एवं कोयल का अधिकाधिक प्रयोग, वातानुकलन यंत्रों का बढ़ता चलन, ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन में अपनी सक्रियता बढ़ा रहा है. ग्रीन हाउस गैसे यदि इसी तरह हमारे वातावरण में फैलती रही तो इस सदी के अन्त तक पृथ्वी के तापमान में उसे 5 डिग्री सेल्सियस तक की वृद्धि अनुमानित है. यदि ऐसा हुआ तो पूरी पृथ्वी पर प्राकृतिक आपदाएं आएगी और मानव सभ्यता ही खतरे में पड़ जाएगी. वैसे देखा जाए तो प्रकृति अपना रोष इधर लगातार बाढ़, बारिश, तीव्र गरमी व बेइन्तहा ठण्ड, ज्वालामुखी, भूकम्प इत्यादि के माध्यम से प्रकट कर रही है. यह आपदाएं पहले भी आती थीं पर अब इनका रूप अत्यधिक रौद्र होता जा रहा है.

भारत ने वर्ष 2020 में पहली पर्यावरण रिपोर्ट प्रस्तुत की है जिसके अनुसार कई चीजें यथा खेती, जीव जन्तु, भोजन, पानी, स्वास्थ्य, बिजली इत्यादि पर दीर्घकालिन कुप्रभाव पड़ेगा. वर्षा के स्तर एवं प्रकार में भी अप्रत्याशित परिवर्तन होगा. भूगर्भ जल की मात्रा व शुद्धता प्रभावित होगी. बढ़ता तापमान, लम्बी ग्रीष्म अवधि, बाढ़, तूफान, अकाल व अनियमित वर्षा भारत की खेती एवं कृषक जीवन को क्रूर झटका देगी क्योंकि भारतीय कृषि व्यवस्था मानसून आधारित है. भविष्य में भोजन के उत्पादन पर बुरा असर होगा. पौष्टिक भोजन की न्यूनता से सेहत, रोग प्रतिरोधात्मक क्षमता प्रभावित होगी. तापमान में उतरोत्तर वृद्धि के कारण वातानुकूलन यंत्रों की मांग तेजी से बढ़ेगी, कोयले वाले बिजली घरों के वातानुकूलन के लिए भूजल की मांग बढ़ेगी. ध्रुवों व ऊँचाई के क्षेत्रों में जमी बर्फ के लगातार पिघलने से समुद्रतल में वृद्धि होगी और चक्रवातों के बढ़ने से तटीय क्षेत्रों के बिजली घर ध्वस्त हो जाएंगे. आशंका तो यह भी है कि बिजली पैदा करने का आधारभूत ढांचा ही धाराशायी हो जाएगा. जलवायु परिवर्तन के कारण समुद्र का खारा पानी, मीठे पानी के स्रोतों का अतिक्रमण करते हुए तटीय क्षेत्रों में जीवन की संभावना को न्यून कर देगा.

इस अंधकारमय भविष्य से बचने के लिए वर्तमान व्यस्क जागृत पीढ़ी को अपने वंशजों की रक्षा उनके उत्थान व जीवन निर्माण के लिए अभी से ठोस दीर्घकालीन, लघुकालीन, परिणामोन्जक योजनाएं बनानी चाहिए. जिसमें प्रथमतः जनसंख्या नियंत्रण हेतु जनजागरण के साथ ही कठोर कानून बनाए जाने चाहिए. सौर ऊर्जा का अधिकाधिक प्रयोग प्रत्येक क्षेत्र में हो इसलिए सामाजिक क्रान्ति करने को स्वयं उद्धृत होना होगा. घरों के तापमान को प्राकृतिक रूप से नियंत्रित करने के लिए बागवानी करना, शहरों में हरियाली हेतु वृहद वृक्षारोपण करना, वर्षा के जल का संरक्षण करना, सार्वजनिक आवागमन के ढांचे में आमूलचूल परिवर्तन करते हुए उसे सुविधाजनक व सुरक्षित बनाना साथ ही प्रकृति के साथ प्रेम करना होगा.

-रानी बाजार, इण्डस्ट्रीयल एरिया, एस.बी.बी.जे. बैंक के पीछे, बीकानेर, राजस्थान

सोसल मीडिया से

जंगल के स्कूल का रिजल्ट

हुआ यूँ कि जंगल के राजा शेर ने ऐलान कर दिया कि अब आज के बाद कोई अनपढ़ न रहेगा. हर पशु को अपना बच्चा स्कूल भेजना होगा. राजा साहब का स्कूल पढ़ा-लिखाकर सबको सर्टिफिकेट बँटेगा.

सब बच्चे चले स्कूल. हाथी का बच्चा भी आया, शेर का भी, बंदर भी आया और मछली भी, खरगोश भी आया तो कछुआ भी, ऊँट भी और जिराफ भी.

फर्स्ट यूनिट टेस्ट/परीक्षा हुआ तो हाथी का बच्चा फेल.

'किस विषय में फेल हो गया जी?

'पेड़ पर चढ़ने में फेल हो गया, हाथी का बच्चा।'

'अब का करें?'

'ट्यूशन दिलवाओ, कोचिंग में भेजो.'

'अब हाथी की जिन्दगी का एक ही मकसद था कि हमारे बच्चे को पेड़ पर चढ़ने में टाप कराना है.'

किसी तरह साल बीता. फाईनल रिजल्ट आया तो हाथी, ऊँट, जिराफ सब फेल हो गए. बंदर की औलाद प्रथम आयी. प्रधानाचार्य ने मंच पर बुलाकर मेडल दिया. बंदर ने उछल-उछल के कलाबाजियाँ दिखाकर गुलाटियाँ मार कर खुशी का इजहार किया. उधर अपमानित महसूस कर रहे हाथी, ऊँट और जिराफ ने अपने-अपने बच्चे कूट दिये.' नालायकों, इतने महँगे स्कूल में पढ़ाते हैं तुमको ट्यूशन-कोचिंग सब लगवाए हैं. फिर भी आज तक तुम पेड़ पर चढ़ना नहीं सीखे. 'सीखो, बंदर के बच्चे से सीखो कुछ, पढ़ाई पर ध्यान दो.'

फेल हालांकि मछली भी हुई थी. बेशक तैरने में प्रथम आयी थी पर बाकी विषय में तो फेल ही थी. मास्टरनी बोली, 'आपकी बेटी के साथ उपस्थिति की समस्या है.' मछली ने बेटी को आँखें दिखाई. बेटी ने समझाने की कोशिश की कि, 'माँ, मेरा दम घुटता है इस स्कूल में. मुझे साँस ही नहीं आती. मुझे नहीं पढ़ना इस स्कूल में. हमारा स्कूल तो तालाब में होना चाहिये न?' नहीं, ये राजा का स्कूल है. 'तालाब वाले स्कूल में भेजकर मुझे अपनी बेइज्जती नहीं करानी. समाज में कुछ इज्जत/रिपुटेशन है मेरी. तुमको इसी स्कूल में पढ़ना है. पढ़ाई पर ध्यान दो.'

हाथी, ऊँट और जिराफ अपने-अपने फेल्योर बच्चों को पीटते हुए ले जा रहे थे. रास्ते में बूढ़े बरगद ने पूछा, 'क्यों पीट रहे हो, बच्चों को?' जिराफ बोला, 'पेड़ पर चढ़ने में फेल हो गए?'

बूढ़ा बरगद सबसे फते की बात बोला, 'पर इन्हें पेड़ पर चढ़ाना ही क्यों है?' उसने हाथी से कहा, 'अपनी सूंड उठाओ और सबसे ऊँचा फल तोड़ लो. जिराफ तुम अपनी लंबी गर्दन उठाओ और सबसे ऊँचे पत्ते तोड़-तोड़ कर खाओ.' ऊँट भी गर्दन लंबी करके फल पत्ते खाने लगा. 'हाथी के बच्चे को क्यों चढ़ाना चाहते हो पेड़ पर? मछली को तालाब में ही सीखने दो न?'

'दुर्भाग्य से आज स्कूली शिक्षा का पूरा बेस और विषयवस्तु सिर्फ बंदर के बच्चे के लिये ही तैयार है. इस स्कूल में 35 बच्चों की क्लास में सिर्फ बंदर ही प्रथम आएगा. बाकी सबको फेल होना ही है. हर बच्चे के लिए अलग विषय वस्तु, अलग विषय और अलग स्कूल चाहिये.'

'हाथी के बच्चे को पेड़ पर चढ़ाकर अपमानित मत करो. जबर्दस्ती उसके ऊपर फेलियर का ठप्पा मत लगाओ. ठीक है, बंदर का उत्साहवर्धन करो पर शेष 34 बच्चों को नालायक, कामचोर, लापरवाह, डफर, फेल्योर घोषित मत करो.'

'मछली बेशक पेड़ पर न चढ़ पाये पर एक दिन वो पूरा समंदर नाप देगी.'

शिक्षा- अपने बच्चों की क्षमताओं व प्रतिभा की कद्र करें चाहे वह पढ़ाई, खेल, नाच, गाने, कला, अभिनय, व्यापार/व्यवसाय, खेती, बागवानी, मेकेनिकल, किसी भी क्षेत्र में हो और उन्हें उसी दिशा में अच्छा करने दें. जरूरी नहीं कि सभी बच्चे पढ़ने में ही अव्वल हो बस जरूरत हैं उनमें अच्छे संस्कार व नैतिक मूल्यों की जिससे बच्चे गलत रास्ते नहीं चुने.'

सभी अभिभावकों को सादर समर्पित.

-**साभार,** सोसल मीडिया से

इतनी अच्छी पोस्ट जरूर पढियेगा

'बेटा! थोड़ा खाना खाकर जा..! दो दिन से तुने कुछ खाया नहीं है.' लाचार माता के शब्द है अपने बेटे को समझाने के लिये.

'देख मम्मी! मैंने मेरी बारहवीं बोर्ड की परीक्षा के बाद वेकेशन में सेकेंड हैंड बाइक मांगी थी, और पापा ने प्रोमिस किया था. आज मेरे आखरी पेपर के बाद दीदी को कह देना कि जैसे ही मैं परीक्षा खंड से बाहर आऊंगा तब पैसा लेकर बाहर खडी रहे. मेरे दोस्त की पुरानी बाइक आज ही मुझे लेनी है. और हाँ, यदि दीदी वहाँ पैसे लेकर नहीं आयी तो मैं घर वापस नहीं आऊंगा.'

एक गरीब घर में बेटे मोहन की जिद्द और माता की लाचारी आमने सामने टकरा रही थी.

'बेटा! तेरे पापा तुझे बाइक लेकर देने ही वाले थे, लेकिन पिछले महीने हुए एक्सिडेंट....

मम्मी कुछ बोले उसके पहले मोहन बोला 'मैं कुछ नहीं जानता..मुझे तो बाइक चाहिये ही चाहिये...!'

ऐसा बोलकर मोहन अपनी मम्मी को गरीबी एवं लाचारी की मझधार में छोड़ कर घर से बाहर निकल गया. 12वीं बोर्ड की परीक्षा के बाद भागवत सर एक अनोखी परीक्षा का आयोजन करते थे.

हालांकि भागवत सर का विषय गणित था, किन्तु विद्यार्थियों को जीवन का भी गणित भी समझाते थे और उनके सभी विद्यार्थी विविधता से भरे ये परीक्षा अचूक देने जाते थे.

इस साल परीक्षा का विषय था 'मेरी पारिवारिक भूमिका'

मोहन परीक्षा खंड में आकर बैठ गया. उसने मन में गांठ बांध ली थी कि यदि मुझे बाइक लेकर देंगे तो मैं घर नहीं जाऊंगा.

भागवत सर के क्लास में सभी को पेपर वितरित हो गया. पेपर में 10 प्रश्न थे. उत्तर देने के लिये एक घंटे का समय दिया गया था.

मोहन ने पहला प्रश्न पढा और जवाब लिखने की शुरुआत की.

प्रश्न नं० 1- आपके घर में आपके पिताजी, माताजी, बहन, भाई और आप कितने घंटे काम करते है? सविस्तार बताइये?

मोहन ने त्वरा से जवाब लिखना शुरू कर दिया. 'पापा सुबह छह बजे टिफिन के साथ अपनी ओटोरिक्शा लेकर निकल जाते है और रात को नौ बजे वापस आते हैं. कभी कभार वर्धी में जाना पड़ता है. ऐसे में लगभग पंद्रह घंटे. मम्मी सुबह चार बजे उठकर पापा का टिफिन तैयार कर, बाद में घर का सारा काम करती हैं. दोपहर को सिलाई का काम करती है और सभी लोगों के सो जाने के बाद वह सोती हैं. लगभग रोज के सोलह घंटे. दीदी सुबह कालेज जाती हैं, शाम को 4 से 8 पार्ट टाइम जॉब करती हैं और रात्रि को मम्मी को काम में मदद करती हैं. लगभग बारह से तेरह घंटे.

मैं, सुबह छह बजे उठता हूँ, और दोपहर स्कूल से आकर खाना खाकर सो जाता हूँ. शाम को अपने दोस्तों के साथ टहलता हूँ. रात्रि को ग्यारह बजे तक पढता हूँ. लगभग दस घंटे.

(इससे मोहन को मन ही मन लगा, कि उनका कामकाज में औसत सबसे कम है.)

पहले सवाल के जवाब के बाद मोहन ने दूसरा प्रश्न पढाः **'प्रश्न नं०२- आपके घर की मासिक कुल आमदनी कितनी है?'**

जवाबः पापा की आमदनी लगभग दस हजार हैं. मम्मी एवं दीदी मिलकर पांच हजार जोड़ते हैं. कुल आमदनी पंद्रह हजार.

प्रश्न नं०3- मोबाइल रिचार्ज प्लान, आपकी मनपसंद टीवी पर आ रही तीन सीरियल के नाम, शहर के एक सिनेमा हाल का पता और अभी वहां चल रही मूवी का नाम बताइये?'

सभी प्रश्नों के जवाब आसान होने से फटाफट दो मिनट में लिख दिये.

प्रश्न नं० 4-एक किलो आलू और भिन्डी के अभी हाल की कीमत क्या है? एक किलो गेहूं, चावल और तेल की कीमत बताइये? और जहाँ पर घर का गेहूं पिसाने जाते हो उस आटा चक्की का पता दीजिये.'

मोहनभाई को इस सवाल का जवाब नहीं आया. उसे समझ में आया कि हमारी दैनिक आवश्यक जरुरतों की चीजों के बारे में तो उसे लेशमात्र भी ज्ञान नहीं है. मम्मी जब भी कोई काम बताती थी तो मना कर देता था. आज उसे ज्ञान हुआ कि अनावश्यक चीजें मोबाइल रिचार्ज, मुवी का ज्ञान इतना उपयोगी नहीं है. अपने घर के काम की जवाबदेही लेने से या तो हाथ बटोर कर साथ देने से हम कतराते रहे हैं.

प्रश्न नं०5-आप अपने घर में भोजन को लेकर कभी तकरार या गुस्सा करते हो?'

जवाबः हां, मुझे आलू के सिवा कोई भी सब्जी पसंद नहीं है. यदि मम्मी और कोई सब्जी बनायें तो, मेरे घर में झगड़ा होता है. कभी मैं बगैर खाना खायें उठ खडा हो जाता हूँ. (इतना लिखते ही मोहन को याद आया कि आलू की सब्जी से मम्मी को गैस की तकलीफ होती हैं. पेट में दर्द होता है, अपनी सब्जी में एक बड़ी चम्मच वो अजवाइन डालकर खाती हैं. एक दिन मैंने गलती से मम्मी की सब्जी खा ली, और फिर मैंने थूक दिया था और फिर पूछा कि मम्मी तुम ऐसा क्यों खाती हो? तब दीदी ने बताया था कि हमारे घर की स्थिति ऐसी अच्छी नहीं है कि हम दो सब्जी बनाकर खायें. तुम्हारी जिद के कारण मम्मी बेचारी क्या करें?)

मोहन ने अपनी यादों से बाहर आकर अगले प्रश्न को पढा. **प्रश्न नं० 6- आपने अपने घर में की हुई आखरी जिद के बारे में लिखिये'**

मोहन ने जवाब लिखना शुरू किया. मेरी बोर्ड की परीक्षा पूर्ण होने के बाद दूसरे ही दिन बाइक के लिये जीद्द की थी. पापा ने कोई जवाब नहीं दिया था, मम्मी ने समझाया कि घर में पैसे नहीं है. लेकिन मैं नहीं माना! मैंने दो दिन से घर में खाना खाना भी छोड़ दिया है. जबतक बाइक नहीं लेकर दोगे मैं खाना नहीं खाऊंगा और आज तो मैं वापस घर नहीं जाऊंगा कहके निकला हूँ. अपनी जिद का प्रामाणिकता से मोहन ने जवाब लिखा.

प्रश्न नं० 7- आपको अपने घर से मिल रही पोकेट मनी का आप क्या करते हो? आपके भाई-बहन कैसे खर्च करते हैं?'

जवाब : हर महीने पापा मुझे सौ रुपये देते हैं. उसमें से मैं, मनपसंद पर्फ्यूम, गोगल्स लेता हूं, या अपने दोस्तों की छोटीमोटी पार्टियों में खर्च करता हूँ. मेरी दीदी को भी पापा सौ रुपये देते हैं. वो खुद कमाती हैं और पगार के पैसे से मम्मी को आर्थिक मदद करती हैं. हां, उसको दिये गये पोकेटमनी को वो गल्ले में डालकर बचत करती हैं. उसे कोई मौज शौख नहीं है, क्योंकि वो कंजूस भी हैं.

प्रश्न नं० 8-आप अपनी खुद की पारिवारिक भूमिका को समझते हो?'

प्रश्न अटपटा और जटिल होने के बाद भी मोहन ने जवाब लिखा. परिवार के साथ जुड़े रहना, एकदूसरे के प्रति समझदारी से व्यवहार करना एवं मददरूप होना चाहिये और ऐसे अपनी जवाबदेही निभानी चाहिये. यह लिखते लिखते ही अंतरात्मा से आवाज आयी कि अरे मोहन! तुम खुद अपनी पारिवारिक भूमिका को योग्य रूप से निभा रहे हो? और अंतरात्मा से जवाब आया कि ना बिल्कुल नहीं!

प्रश्न नं० 9-आपके परिणाम से आपके माता-पिता खुश हैं? क्या वह अच्छे परिणाम के लिये आपसे जिद करते हैं? आपको डांटते रहते हैं?'

(इस प्रश्न का जवाब लिखने से पहले हुए मोहन की आंखें भर आयी. अब वह परिवार के प्रति अपनी भूमिका बराबर समझ चुका था.) लिखने की शुरुआत की. वैसे तो मैं कभी भी मेरे माता-पिता को आजतक संतोषजनक परिणाम नहीं दे पाया हूँ. लेकिन इसके लिये उन्होंने कभी भी जिद नहीं की है. मैंने बहुत बार अच्छे रिजल्ट के प्रोमिस तोड़े हैं. फिर भी हल्की सी डांट के बाद वही प्रेम और वात्सल्य बना रहता था.

प्रश्न नं०10-पारिवारिक जीवन में असरकारक भूमिका निभाने के लिये इस वेकेशन में आप कैसे परिवार को मदद करेंगे?

जवाब में मोहन की कलम चले इससे पहले उनकी आंखों से आंसू बहने लगे, और जवाब लिखने से पहले ही कलम रुक गई. बेंच के नीचे मुंह रखकर रोने लगा. फिर से कलम उठायी तब भी वो कुछ भी न लिख पाया. अनुत्तर दसवां प्रश्न छोड़कर पेपर सबमिट कर दिया.

स्कूल के दरवाजे पर दीदी को देखकर उसकी ओर दौड़ पड़ा.

'भैया! ये ले आठ हजार रुपये, मम्मी ने कहा है कि बाइक लेकर ही घर आना.' दीदी ने मोहन के सामने पैसे धर दिये.

'कहाँ से लायी ये पैसे?' मोहन ने पूछा. दीदी ने बताया- 'मैंने मेरी ऑफिस से एक महीने की सेलेरी एडवांस मांग ली. मम्मी भी जहां काम करती हैं वहीं से उधार ले लिया, और मेरी पोकेटमनी की बचत से निकाल लिये. ऐसा करके तुम्हारी बाइक के पैसे की व्यवस्था हो गई हैं.'

मोहन की दृष्टि पैसे पर स्थिर हो गई. दीदी फिर बोली 'भाई, तुम मम्मी को बोलकर निकले थे कि पैसे नहीं दोगे तो, मैं घर पर नहीं आऊंगा! अब तुम्हें समझना चाहिये कि तुम्हारी भी घर के प्रति जिम्मेदारी है. मुझे भी बहुत से शौक हैं, लेकिन अपने शौख से अपने परिवार को मैं सबसे ज्यादा महत्व देती हूं. तुम हमारे परिवार के सबसे लाडले हो, पापा को पैर की तकलीफ हैं फिर भी तेरी बाइक के लिये पैसे कमाने और तुम्हें दिये प्रोमिस को पूरा करने

अपने फ्रेक्चर वाले पैर होने के बावजूद काम किये जा रहे हैं. तेरी बाइक के लिये. यदि तुम समझ सको तो अच्छा है, कल रात को अपने प्रोमिस को पूरा नहीं कर सकने के कारण बहुत दुःखी थे और इसके पीछे उनकी मजबूरी है. बाकी तुमने तो अनेकों बार अपने प्रोमिस तोड़े ही है न?

मेरे हाथ में पैसे थमाकर दीदी घर की ओर चल निकली.

उसी समय उसका दोस्त वहां अपनी बाइक लेकर आ गया, अच्छे से चमका कर ले आया था.

'ले..मोहन आज से ये बाइक तुम्हारी, सब बारह हजार में मांग रहे हैं, मगर ये तुम्हारे लिये आठ हजार.'

मोहन बाइक की ओर टकर टकर देख रहा था और थोड़ी देर के बाद बोला-

'दोस्त तुम अपनी बाइक उस बारह हजार वाले को ही दे देना! मेरे पास पैसे की व्यवस्था नहीं हो पायी हैं और होने की हाल संभावना भी नहीं है.'

और वो सीधा भागवत सर की केबिन में जा पहूंचा.

'अरे मोहन! कैसा लिखा है पेपर में? भागवत सर ने मोहन की ओर देख कर पूछा.

'सर!, यह कोई पेपर नहीं था, ये तो मेरे जीवन के लिये दिशा निर्देश था. मैंने एक प्रश्न का जवाब छोड़ दिया है. किन्तु ये जवाब लिखकर नहीं अपने जीवन की जवाबदेही निभाकर दूंगा और भागवत सर को चरणस्पर्श कर अपने घर की ओर निकल पड़ा. घर पहुंचते ही, मम्मी पापा दीदी सब उसकी राह देखकर खड़े थे.

'बेटा! बाइक कहाँ हैं?' मम्मी ने पूछा. मोहन ने दीदी के हाथों में पैसे थमा दिये और कहा कि सॉरी! मुझे बाइक नहीं चाहिये. और पापा मुझे ऑटो की चाभी दो, आज से मैं पूरे वेकेशन तक ऑटो चलाऊंगा और आप थोड़े दिन आराम करेंगे, और मम्मी आज मैं मेरी पहली कमाई शुरू होग. इसलिये तुम अपनी पसंद की मैथी की भाजी और बैगन ले आना, रात को हम सब साथ मिलकर के खाना खायेंगे.

मोहन के स्वभाव में आये परिवर्तन को देखकर मम्मी उसको गले लगा लिया और कहा कि 'बेटा! सुबह जो कहकर तुम गये थे वो बात मैंने तुम्हारे पापा को बतायी थी, और इसलिये वो दुःखी हो गये, काम छोड़ कर वापस घर आ गये. भले ही मुझे पेट में दर्द होता हो लेकिन आज तो मैं तेरी पसंद की ही सब्जी बनाऊंगी.'

मोहन ने कहा-'नहीं मम्मी! अब मेरी समझ गया हूँ कि मेरे घर परिवार में मेरी भूमिका क्या है? मैं रात को बैंगन मैथी की सब्जी ही खाऊंगा, परीक्षा में मैंने आखरी जवाब नहीं लिखा हैं, वह प्रेक्टिकल करके ही दिखाना है और हाँ मम्मी हम गेहूं को पिसाने कहां जाते हैं, उस आटा चक्की का नाम और पता भी मुझे दे दो' और उसी समय भागवत सर ने घर में प्रवेश किया. और बोले 'वाह! मोहन जो जवाब तुमनें लिखकर नहीं दिये वे प्रेक्टिकल जीवन जीकर कर दोगे.'

'सर! आप और यहाँ?' मोहन भागवत सर को देख कर आश्चर्य चकित हो गया.

'मुझे मिलकर तुम चले गये, उसके बाद मैंने तुम्हारा पेपर पढ़ा इसलिये तुम्हारे घर की ओर निकल पड़ा. मैं बहुत देर से तुम्हारे अंदर आये परिवर्तन को सुन रहा था. मेरी अनोखी परीक्षा सफल रही और इस परीक्षा में तुमने पहला नंबर पाया है.'

ऐसा बोलकर भागवत सर ने मोहन के सर पर हाथ रखा. मोहन ने तुरंत ही भागवत सर के पैर छुएँ और आटो रिक्शा चलाने के लिये निकल पड़ा..

मेरा सभी सम्माननीय अभिभावकों से आग्रह है कि आप इस पोस्ट को आप भी जरूर पढ़िएगा और अपने बच्चों को भी पढ़ने का अवसर दें. प्रैक्टिकल जीवन में तो मैंने अनुभव किया है लेकिन सभी लोगों को किस प्रकार से अनुभव कराया जाए इसके लिए मेरा आपसे आग्रह है कि आप स्वयं और अपने बच्चों को इस पोस्ट को जरूर करने का अवसर प्रदान करें.

संपादक के नाम पाती

आप सभी पाठकगण पत्रिका में प्रकाशित लेखो पर अपने विचार या कोई सुझाव नीचे दिये गये ई-मेल आईडी पर भेज सकते है। स्थान की उपलब्धता के हिसाब से हम आपके विचारों को शामिल करने का प्रयास करेंगे।

vsnehsamaj@rediffmail.com

-संपादक

अप्रैल से सितम्बर २०२० तक चली विभिन्न ऑन लाइन प्रतियोगिताओं का समापन

संस्थान सदैव गतिशील है हिन्दी के लिए: पठाण

'विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, प्रयागराज, उ०प्र० एक ऐसा संस्थान है जो हिंदी की सेवा एवं समाज सेवा के कार्यो के लिए निरन्तर क्रियाशील है. संस्थान द्वारा कोरोना काल एवं अपने रजत वर्ष की तैयारी में ऑन लाईन प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया. जिसमें काव्य, प्रश्नोत्तरी, चित्रकला, गीत, नृत्य, बच्चा पार्टी प्रश्नोत्तरी इत्यादि रहे. काव्य प्रतियोगिता में ब्रिटेन सहित भारत के 12राज्यों के 100 रचनाकारों ने प्रतिभाग किया. कुल छह चरणों में आयोजित प्रतियोगिता में प्रत्येक चरण में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय चयनित किए गए. फिर एक से तीन व चार से छह के अलग-अलग तीन-तीन विजेता चयनित हुए. उनमें से सर्वोत्तम तीन के चयन हेतु प्रतियोगिता हुई जिसके विजयी प्रतिभागियों के परिणाम की घोषणा आज की जानी है. उक्त बातें आयोजन के मुख्य अतिथि डॉ० एस.एन. पठान जी कार्यक्रम में परिणाम की घोषणा करते हुए कही. उन्होंने परिणाम विजेताओं की नाम की घोषणा भी की. श्री नरेन्द्र भूषण, लखनऊ, उ.प्र को प्रथम, श्रीमती पुष्पा श्रीवास्तव 'शैली', रायबरेली, उ.प्र को द्वितीय, श्रीमती इंदू बरैठ, कालचेस्टर, ब्रिटेन को तृतीय एवं श्रीमती वंदना श्रीवास्तव को चतुर्थ स्थान प्राप्त हुआ. तीनों विजेता संस्थान की काव्य सम्राट प्रतियोगिता के अंतिम चरण के सीधे प्रतिभागी माने जाएंगे. सभी विजेताओं को हार्दिक बधाई जो प्रतिभागी कोई स्थान नहीं बना पाए है उनके लिए शुभकामनाएं.

डॉ० एस.एन. पठाण, मुख्य अतिथि

डॉ० अनिता पंडा, विशिष्ट अतिथि

बच्चा पार्टी प्रश्नोत्तरी के परिणाम की घोषणा करते हुए संस्थान की मेघालय से हिन्दी सांसद एवं आज के इस आयोजन की विशिष्ट अतिथि डॉ० अनीता पंडा जी ने कहा-'आज का आयोजन बच्चों को भारतीय संस्कृति के रिश्ते नातों, संगे संबधियों में किससे क्या रिश्ता है, यानि ये रिश्ता क्या कहलाता है से अवगत कराने के लिए पितश्पक्ष काल में 21 दिवसीय बच्चा पार्टी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. इस प्रतियोगिता में एक दिन रिश्तों के बारें में तो दूसरे दिन सामान्य ज्ञान के प्रश्न पूछे गये. इस प्रतियोगिता में पहले 150 बच्चों ने पंजीकरण करवाया था, 20 बच्चों ने तीन दिन सही जबाब देकर स्थान बनाया। प्रतिदिन सर्वप्रथम 10 सही जबाब देने वाले प्रतिभागियों के नाम चयनित किए गए. कुल 21 दिनों सर्वाधिक सर्वप्रथम सही जबाब देने वाले प्रतिभागियों के आधार पर श्री शुभ द्विवेदी-प्रयागराज, उ.प्र. को प्रथम, कु० प्रज्ञा दीक्षित-फतेहपुर, उ.प्र. को द्वितीय, कु०ऋषिता कुम्भज, शिलांग, मेघालय एवं कु० समृद्धि तिवारी, प्रयागराज, उ.प्र. को संयुक्त रुप से तृतीय, श्री मोक्ष कुम्भज, शिलांग, मेघालय को चतुर्थ, श्री काव्य गोयल मथुरा, उ.प्र. को पांचवा, श्री दिव्याशु बरुआ, तेजपुर, सोमितपुर, असम को छठवां, श्री सौभाग्य तिवारी प्रयागराज, उ.प्र. को सांतवा, कु० समृद्धि अवस्थी, सीतापुर, उ.प्र. को आठवा, श्री तलिन गिरी, प्रयागराज, उ.प्र. को नौवा एवं कु० आन्वी जायसवाल, दुर्ग, छ.ग. को दसवां स्थान मिला. आप सभी बधाई. आयोजन की अध्यक्षता कर रहे संस्थान के सम्मानित अध्यक्ष डॉ० शहाबुद्दीन नियाज़ मुहम्मद शेख ने सर्वोत्तम तीन प्रश्नोत्तरी के परिणाम की घोषणा करने के साथ आभार व्यक्त करते हुए कहा-विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, प्रयागराज, उ०प्र० द्वारा ऑन लाईन प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. श्रीलंका, ब्रिटेन, जापान सहित भारत के 20राज्यों के 3500

डॉ० शहाबुद्दीन नियाज़ मुहम्मद शेख- अध्यक्ष

प्रतिभागियों ने पजीकरण करवाया. कुल छह चरणों में आयोजित प्रतियोगिता में प्रत्येक चरण में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय चयनित किए गए. फिर एक से तीन व 4 से 6 के अलग-अलग तीन तीन विजेता चयनित हुए. उनमें से सर्वोत्तम तीन के चयन हेतु प्रतियोगिता हुई जिसके विजयी प्रतिभागियों के परिणाम की घोषणा आज की जानी है.

इस प्रतियोगिता के भाग्यशाली विजेता है सर्वाधिक उम्र के प्रतिभागी रहे, राष्ट्रपति एवं राज्यपाल से शिक्षक पुरस्कार प्राप्त सेवानिवृत्त शिक्षक सोनभद्र, उत्तर प्रदेश के श्री ओम प्रकाश त्रिपाठी, दूसरे स्थान पर चांपा, जांजगीर, छत्तीसगढ़ के युवा लेखक श्री लक्ष्मी कांत वैष्णव, तीसरे स्थान पर, बहुमुखी प्रतिभा की धनी, प्रध ानाचार्या प्रयागराज, उ.प्र. श्रीमती सपना गोस्वामी एवं प्रो० राजेन्द्र सिंह रज्जू भैया विश्वविद्यालय, प्रयागराज की उपकुलसचिव चौथे स्थान पर रहीं.

संस्थान का कुलगीत श्रीमती वंदना श्रीवास्तव 'वान्या' द्वारा प्रस्तुत किया गया. उसके बाद श्रीमती मंजू जायसवाल, दूर्ग, छ.ग. द्वारा सरस्वती वंदना प्रस्तुत किया गया. मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण आयोजन के मुख्य अतिथि डॉ० एस.एन. पठाण, पूर्व कुलपति, राष्ट्रसंत तुकदोजी महाराज विश्वविद्यालय, नागपुर, महाराष्ट्र, विशिष्ट अतिथि डॉ० अनीता पंडा कार्यक्रम अधिकारी, आकाशवाणी शिलांग, कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे डॉ० शहाबुद्दीन नियाज़ मुहम्मद शेख, पूर्व प्राचार्य एवं अध्यक्ष-विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान एवं सचिव डॉ० गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी के द्वारा किया गया.

अतिथियों का स्वागत करते हुए संस्थान के सचिव डॉ० गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी ने कहा 'मां वीणा वादिनी के चरणों में नमन करते हुए आज के आयोजन के मुख्य अतिथि के रूप में हमसे जुड़े हुए डॉ० एस.एन. पठाण, पूर्व कुलपति, राष्ट्रसंत तुकदोजी महाराज विश्वविद्यालय, नागपुर, महाराष्ट्र. आप पूर्व शिक्षा निदेशक उच्च शिक्षा, महाराष्ट्र राज्य, पूर्व उपाध्यक्ष भारतीय सांस्कृतिक संबंध ा परिषद, नई दिल्ली एवं सलाहकार विश्व शांति केन्द्र, आलंडी, पूणे महाराष्ट्र जैसे उच्च पदों पर रहने के साथ ही साथ प्रकाण्ड विद्वान एवं सुविद्ध वक्ता भी है. आपका मैं विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, हिन्दी मासिक विश्व स्नेह समाज, यू ट्यूब चैनल द हंगामा इंडिया परिवार की तरफ से हार्दिक स्वागत वंदन एवं अभिनंदन करता हूं.

विशिष्ट अतिथि के रूप में शिलांग, मेघालय से संस्थान की हिन्दी सांसद, सुप्रसिद्ध लेखिका एवं शिलांग आकाशवाणी की कार्यक्रम अधिकारी डॉ० अनीता पंडा जी जुड़ी. आपका संस्थान के ऑन लाइन आयोजन में पूर्वोत्तर क्षेत्र से प्रतिभागियों को जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका रही है. आपका हार्दिक स्वागत एवं वंदन है.

काव्य प्रतियोगिता के निर्णायक मंडल में शामिल रही डॉ० मुक्ता कौशिक, सहा० प्रोफेसर-ग्रेसियस कॉलेज ऑफ एजुकेशन, अभनपुर, रायपुर, छत्तीसगढ़, डॉ० सुषमा कोंडे, सेंट व्हिन्सेंट कॉलेज, पूणे, महाराष्ट्र, डॉ० अल्का प्रकाश, सहायक प्रोफेसर, प्रो० राजेन्द्र सिंह रज्जू भय्या विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उ.प्र. आप सभी का भी स्वागत वंदन एवं नमन है.

आज के इस आयोजन की अध्यक्षता कर रहे संस्थान के सम्मानित अध्यक्ष डॉ० शहाबुद्दीन नियाज़ मुहम्मद शेख, पूर्व प्राचार्य, लोकसेवा महाविद्यालय, औरंगाबाद एवं देश की कई सुप्रसिद्ध हिन्दी सेवी संस्थाओं के पदाधिकारी एवं आपके निर्देशन में ३५ छात्र पीएचडी कर चुके है। आपका हार्दिक स्वागत, वंदन एवं अभिनंदन है.

अप्रैल २०२० के कोरोना काल में प्रारंभ किया लाक डाउन प्रश्नोत्तरी एवं तालाबंदी काव्य प्रतियोगिता ०१ से ०६ तक चले आयोजन में एक से तीन एवं ४ से ६ में उत्तम तीन प्रतिभागियों की अलग से प्रतियोगिता हुई जिसके विजयी प्रतिभागियों में से सर्वोत्तम तीन

निर्णायक मंडलः डॉ० मुक्ता कौशिक, डॉ० सुषमा कोंडे एवं डॉ० अल्का प्रकाश

के चयन हेतु पुनः प्रतियोगिता हुई जिसके परिणाम की घोषणा आज होनी है। प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में श्रीलंका, ब्रिटेन, एवं जापान सहित भारत के २३ राज्यों से कुल ३५०० प्रतिभागियों ने पंजीकरण करवाया। इसी प्रकार काव्य प्रतियोगिता में भारत के १८ राज्यों सहित ब्रिटेन के कुल १०० प्रतिभागियों ने अलग-अलग प्रतिभाग किया। आज के विजेता निश्चित ही भाग्यशाली है क्योंकि उन्होंने कड़ी प्रतिस्पध ।ा के बीच इस मुकाम पर पहुंचेगे। आज के विजयी होने वाले प्रतिभागियों को अग्रिम बधाई एवं शुभकामनाएं।

संस्थान अपना रजत जंयती समारोह अगले वर्ष १५ जून को मनाने जा रहा है। यानि संस्थान अपने २४ वर्ष पूर्ण कर २५वें वर्ष में प्रवेश कर चुका है। संस्थान के विविध आयोजन मई २०२१ तक चलते रहेंगे। सभी भाग्यशाली विजेताओं को भव्य रजत जयंती समारोह में सम्मानित किया जाएगा

हम हिन्दी एवं समाज सेवा के लिए जी जान से तत्पर है और भविष्य में भी और तीव्र गतिसे कार्य करेंगे. हमारा सुक्त वाक्य है चरैवेति चरैवेति। चलते जाओ, चलते जाओ। हम हमेशा चलते रहते है, गति धीमी या तेज हो सकती है। कुछ आर्थिक समस्याएं आती है लेकिन सीमित साधन में भी हम बेहतर करने का प्रयास करते रहते है.

बदलती दुनिया में फिट होने लगे है हम,/थोड़ा ही सही मगर हिट होने लगे हैं हम।

पुन्हा एकदा तुम्ही सर्वानी संस्थेच्या या कार्यक्रमाचे मना पासून स्वागत आणि अभिनंदन केले आहे।

कार्यक्रम का सकुशल ऑन लाईन संचालन संस्थान लखनऊ से हिन्दी सांसद श्रीमती वंदना श्रीवास्तव 'वान्या' ने किया.

प्रेरक प्रसंग

मेहनत की रोटी

गुरूनानक जी एकदिन एक साधारण बढ़ई लालो की गुरूभक्ति से प्रसन्न होकर उसके यहां ठहर गए. इसकी खबर उस इलाके के प्रमुख मलिक भागो के कानों तक पहुंची. तब समाज में ऊँच-नीच की भावना व्याप्त थी. भागो यह कैसे सहन करे कि एक संत एक बढ़ई के घर में निवास करें. उन्होंने तुरन्त अपने यहां भोजन करने के लिए आमन्त्रित किया. उस समय गुरूजी भजन गा रहे थे और उनका षिष्य मर्दाना रवाब बजा रहा था. उन्होंने मलिक भागो से कहा, 'मैं आपके यहाँ भोजन ग्रहण नहीं करूँगा.' भागो अपमान से जलने लगा. पूछा, 'आखिर क्यों? क्या मैं इससे भी नीच हूँ.' गुरूजी ने कहा, 'ठीक है, अपनी खाद्य सामग्री दे दो.'

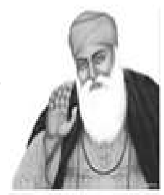

गुरूजी ने उसे अपने हाथों से लेकर निचोड़ा. अरे यह क्या? खून निकलने लगा. उन्होंने लालो से अपना भोजन मँगवाया. वही रूखी सूखी रोटी और साग. उसे निचोड़ने लगे-दूध की धारा? गुरूजी ने कहा अब समझे तेरी कमाई पसीने की नहीं, शोषण की कमाई है. बेचारा मलिक भागो लज्जित हो गया.

सच्ची लगन सफलता की शर्त है

मैक्समूलर की माँ की हार्दिक इच्छा थी कि उसका बेटा देश का कोई बड़ा अधिकारी बने. एक विधवा होते हुए भी उसने मैक्समूलर की पढ़ाई में कोई कमी नहीं की, लेकिन मैक्समूलर की तो दूसरी ही धुन थी. वह कहता, 'नहीं, माँ मुझे संस्कृत पढ़ना है, वे संस्कृत के अध्ययन में जुट गए. लिपजिंग कॉलेज में अध्ययन के दौरान इन्हें यह आश्चर्य हुआ कि अंग्रेजी के अनेक शब्द संस्कृत से निकले है यथा-डॉक्टर-दुहित्र से, फादर-पितर से, मदर-मातृ से, वाइफ-वधु से तथा ब्रदर-भ्रातर से. उन्हें गुरू की खोज में पेरिस जाना पड़ा. पेरिस में बर्नूफ को पाकर उन्हें अत्यंत प्रसन्नता हुई. जब इन्होंने वेद अध्ययन की इच्छा व्यक्त की, तो गुरू ने कहा-'तुममें प्रतिभा है, लगन है, एकनिष्ठता है. तुम हिन्दू धर्म या वेद दोनों में से किसी एक को अपना जीवन अर्पित कर दो.'

मैक्समूलर ने वेद पढ़ने की जब इच्छा व्यक्त की तो गुरू ने दो हिदायतें दी- वेद का भाष्य करते समय तुम धुम्रपान नहीं करोगे. मूल और भाष्य का एक शब्द एक अक्षर भी नहीं छोड़ोगे. उन्होंने इन वचनों का दृढ़ता से पालन किया और अपने २७ वर्षो के कठोर श्रम से ऋग्वेद का उद्धार किया, जो ईष्ट इण्डिया कंपनी के संग्रहालय में कैद थे. हिन्दू धर्म के इस पवित्र ग्रन्थ के जीर्णोद्धार का श्रेय इन्हीं विद्वानों को जाता है, जिन्होंने अपने जीवन के लगभग पचास वर्ष भारतीय वांगमय में विचरते हुए बिताया.

छुटकी

-अनुराग मिश्र 'गैर'
आबकारी निरीक्षक, बुलन्दशहर
उत्तर प्रदेश

14 जनवरी की सुबह के 7:30 बज रहे होंगे, सारा शहर कोहरे की घनी चादर में ढका था, हड्डियां जमा देने वाली सर्दी पड़ रही थी, परन्तु नवजीवन अल्ट्रासाउन्ड सेन्टर पर अच्छी खासी भीड़ थी. संयोग से आज मकरसक्रांति थी, और आज हमारी सृष्टि के केन्द्र सूर्य उत्तरायण हो रहे थे, आज से उत्तरी गोलार्ध के सुसुप्त जीवन में गर्मी का संचार बढ़ने वाला था. लेकिन इस सबसे अलग मिसेज पाण्डेय के गर्भ में पल रही सवा तीन माह की छुटकी की जान हलक में अटकी हुई थी. वह सोच रही थी कि आज के अल्ट्रासाउन्ड में जब उसके मां-बाप को उसके लड़की होने का पता चलेगा तो पता नहीं वो क्या निर्णय लेगे? अबार्सन कराकर उसे नष्ट कर देंगे या आयरन, कैल्सियम व प्रोटीन से भरपूर आहार लेकर नौ माह बाद एक गोल-मटोल गुडिया के रूप में उस जन्म देंगे.

जब उसके पापा ने मम्मी का नम्बर लगाया तो कम्पाउन्डर ने 13 वां नम्बर बताया, 13 नम्बर सुनते ही छुटकी का कलेजा फिर धक-धक करने लगा, बड़ी अशुभ संख्या होती है 13, छुटकी की रूह कांप गय. छुटकी इसी सब सोच में डूबी थी कि अचानक डाक्टर साहब आ गयी, सारे मरीज सतर्क हो गये, छुटकी तो एकदम सिहर गयी. डाक्टर के आते ही कम्पाउन्डर मरीजों के पर्चे जमा करने लगा, कम संख्या 10 व 12 के मरीज तब तक नहीं आये थे, छुटकी घबरा गयी कि अरे अब तो उसकी मम्मी का नम्बर जल्दी आ जायेगा. तभी एक स्कूटर पर १०वीं नम्बर वाली आन्टी आ गयीं. इस बीच डाक्टर ने अल्ट्रासाउन्ड शुरू कर दिया तथा एक-एक कर आठ मरीज निपट गये, जैसे-जैसे 13वां नम्बर नजदीक आ रहा था, वैसे-वैसे छुटकी की घबराहट बढत्र रही थी, जब 11वें नम्बर की आन्टी अन्दर गयीं तो छुटकी का दिल एकदम धक-धक करने लगा, तभी एक कार आयी और एक आन्टी उतर कर आयीं और कम्पाउन्डर से पूछीं कि 12वां नम्बर आ गया क्या? 12वें नम्बर की आटी को देखते ही छुटकी ने राहत की सांस ली और सोचने लगी कि चलो अब उसकी मम्मी का नम्बर कुछ और देर बाद आयेगा. वह इसी सोच में डूबी रही और 11 व 12 नम्बर की आन्टी का अल्ट्रासाउन्ड हो गया उसे पता नहीं चला.

अल्ट्रासाउन्ड सेन्टर पर अच्छी खासी भीड़ थी. छुटकी यह सोच रही थी कि आज जब उसके मां-बाप को उसके लड़की होने का पता चलेगा तो पता नहीं क्या निर्णय लेगे? अबार्सन कराकर उसे नष्ट कर देंगे या प्रोटीन से भरपूर आहार लेकर उसे जन्म देंगे.

कम्पाउन्डर ने जब 13 नम्बर मिसेज पाण्डेय बुलाया तब वो हाश में आयी. मां के पेट में वह इधर-उधर भागने लगी उसका मन कर रहा था कि वह मां के बच्चे की टयूब से निकल भागे और दिल में छिप जाये, परन्तु ऐसा सम्भव नहीं था क्योकि ईश्वर ने पेट को दिल से जोड़ने का कोई रास्ता नहीं बनाया था, मन मारकर वह दुबक कर बैठ गयी डाक्टर अल्ट्रासाउन्ड कर रहीं थीं और छुटकी को सरकार के ऊपर गुस्सा आ रहा था, कहने को तो इस देश में लिंग परीक्षण पर कानूनी रोक है, परन्तु चोरी-छिपे, ले देकर डाक्टर भगवान का भेद खोल ही देते हैं वह सोचने लगी कि अगर यह भ्रष्टाचार नहीं होता तो वह बड़े आराम से दुनियां में आ जात. वह सोचने लगी कि अगर वह राज्य की स्वास्थ्य महानिदेशक होती तो सारे अल्ट्रासाउन्ड केन्द्रों की नकेल टाइट रखती, क्या मजाल कि कोई डाक्टर गर्भस्थ शिशु का लिंग बता देता.

इस बीच डाक्टर ने परीक्षण पूरा कर लिया और उसके मम्मी पापा को बताया कि वह लड़की है. यह सुनकर इसकी मम्मी व पापा का चेहरा उतर गया, मम्मी का शरीर तो ठण्डा पड़ रहा था, किसी तरह उसके पापा ने मम्मी को संभाला और घर ले गये, घर पहुंच कर उसकी मम्मी बहुत रोई नाश्ता-खाना भी नहीं बना उसकी दो बड़ी बहने गीता व मीता सोचने लगी कि अगर भगवान ने उसे आज लड़का बनाया होता तो उसकी मम्मी पापा अस्पताल से सीधे मन्दिर गये होते, भगवान को प्रसाद चढ़ाये होते, घर में आज बेमौसम ही दीवाली सा उल्लास होता. शाम को किसी अच्छे होटल में मम्मी पापा से ट्रीट लेकर ही मानती,

पर हाय री किस्मत भगवान ने उसे लड़की बना दिया वो भी तब जब परिवार में पहले से ही दो बड़ी बहने थीं.

छुटकी की मम्मी दिन भर बिस्तर पर ही पड़ी रहीं, एकान्त होने पर कई बार रोई भी, महरी ने पूछा भी कि 'का भवा मेम सहाब' पर उन्होंने कुछ नहीं बताया, बस सिर दर्द का सदियों पुराना बहाना बना दिया. शाम तक छुटकी की मम्मी एकदम निढ़ाल हो गयी थीं, छुटकी का मन भी बहुत दुखी रहा. पापा जब आफिस से आये तो मम्मी ने किस तरह चाय बनायी और रात में तो खिचड़ी ही बनी. खाने के बाद जब सब लेट गये तो पापा ने मम्मी को बहुत समझाया लक्ष्मीबाई, इन्दिरा गांधी, कल्पना चावला, किरन वेदी, सुनीता बिलियम्स व सूबे की मुख्यमंत्री बहन मायावती तक का उदाहरण दिया समझाया कि लड़कियां भी लड़को के बराबर हैं, लड़को से आगे भी निकल रही हैं, बहू-बेटो से ज्यादा ध्यान बेटी-दामाद रख रहे है, परन्तु छुटकी की मम्मी तो अबार्सन पर ही अड़ी रही, कहने लगी कहां से करोगे तीन-तीन लड़कियों की शादी. दो जो पहले से है, उन्हीं के दान-दहेज में कपड़े उतर जायेगें. छुटकी देख रही थी कि मम्मी के तर्कों के आगे पापा निरूत्तर हो जाते.

अन्त में पापा ने मम्मी से कहा अच्छा एक दिन और सोच लो. छुटकी बहुत खुश हुई, शायद उसकी जान बच जाये, परन्तु उसकी वह खुशी एक ही दिन की थी, अगले दिन बेडरूम रूपी कोपभवन में मम्मी के आगे पापा हार गये, तय हुआ कि कल गीता-मीता के स्कूल जाने के बाद, मम्मी पापा हास्पिटल जाकर अबार्सन करा देंगे. छुटकी को उस रात नींद नहीं आई, भगवान को मनाती रही कि उसकी मम्मी का मन रात में बदल जाये, परन्तु उसकी मम्मी तो पत्थर की बनी थी.

अगले दिन सुबह गीता-मीता के स्कूल जाने के बाद छुटकी की मम्मी व पापा अल्ट्रासाउन्ड सेन्टर पहुंचकर डॉक्टर से मिले व उसकी मम्मी अबार्सन कराने हेतु भर्ती हो गई. थोड़ी सी औपचारिकताओं के बाद डाक्टर मम्मी ने जब अबार्सन की सूई लगाई तो छुटकी को लगा कि उसके शरीर में हजारों सुईयां चुभ रही है, उसका गला सूखने लगा. लग रहा था कि जैसे उसका शरीर से अलग हो चुकी थी, उसका क्षत-विक्षत भ्रूण मां के जिस्म से बाहर आ चुका था. छुटकी की आत्मा अब कमरे के एक कोने में बैठी हांफ रही थी, अपने मृत शरीर को देखकर उसकी आंखों से झर-झर आंसू झरने लगा, कुछ देर में उसका शरीर डसटविन में डाल दिया गया, फिर कुछ ही देर बाद एक दाई उसके मृत भ्रूण को पास के नाले में डाल आई.

छुटकी की आत्मा उड़कर वहीं एक पेड़ की डाल पर बैठ कर अपने भ्रूण को निहारने लगी. उसका मन नहीं हुआ कि वह जाकर अपनी मां का चेहरा निहार ले. तभी नाले में एक जोर का बहाव आया और छुटकी का भ्रूण तैरते हुए आगे बढ़ने लगा, छुटकी की आत्मा भी ऊपर-ऊपर उड़ने लगी, कुछ देर तक गंदगी भरे नाले में बहने के बाद छुटकी का भ्रूण नदी में जा पहुंचा, छुटकी की आत्मा किनारे के पेड़ पर फिर जा बैठी, और अपने शरीर को निहारने लगी, तभी कहीं से एक मगरमच्छ आया, और उसने छुटकी के शरीर को गटक लिया, छुटकी की आत्मा सिहर उठी, जब तक छुटकी की अपने आपको सभालती तब तक भैंस पर सवार यमराज आ पहुंचे, और उसे भगवान के पास ले जाने लगे, छुटकी ने यमराज से बहुत हाथ-पैर जोड़े कि उसे कुछ दिन पृथ्वी पर ही रहने दिया जाए, परन्तु यमराज ने नहीं सुना. छुटकी की आत्मा ने पुनः यमराज से कहा कि वह उसकी आत्मा को मगरमच्छ में डाल दे और मगरमच्छ की आत्मा को लेकर वापस चले जायें, परन्तु यमराज ने अपनी असमर्थता जताई और कहा कि देवलोक में पृथ्वी की तरह अत्याचार नही है. वहां पर भगवान के निर्णय में हस्तक्षेप नहीं किया जाता. हार कर छुटकी यमराज के साथ जाने के लिए तैयार हो गई. उसने अंतिम बार मगरमच्छ का चेहरा देखा, जाने क्यूँ मगरमच्छ की सूरत, उसकी मां की सूरत से बहुत मिल रही थी.

> **छुटकी ने यमराज से विनती कि वह उसकी आत्मा को मगरमच्छ में डाल दे और मगरमच्छ की आत्मा को लेकर वापस चले जायें, परन्तु यमराज ने अपनी असमर्थता जताई. उसने अंतिम बार मगरमच्छ का चेहरा देखा, जाने क्यूँ मगरमच्छ की सूरत, उसकी मां की सूरत से बहुत मिल रही थी.**

सोसल मीडिया से

हस्तिनापुर की कहानी

हस्तिनापुर में एक धार्मिक पराक्रमी राजा था जिसका नाम था शंतनु! उसमें कोई बहुत बड़ा दिग्विजय नहीं किया या कोई लड़ाई नहीं लड़ी! लेकिन हां हस्तिनापुर का राज्य एक महत्वपूर्ण राज्य माना जाता था!

शांतनु के 3 पुत्र थे भीष्म चित्रांगद और विचित्रवीर्य! भीष्मा और चित्रांगद की कोई संतान नहीं थी! विचित्रवीर्य भी कोई दीर्घायु नहीं था! उसके दो बेटे थे! बड़ा धृतराष्ट्र जन्म से ही अंधा था! छोटा भाई पांडू राज सिंहासन पर बैठा और उसने दिग्विजय करते हुए हस्तिनापुर का राज्य बहुत बढा लिया! फिर किसी कारण उसने वनवास चुना! वहीं पर उसे 5 पुत्र हुए!

इधर हस्तिनापुर की गद्दी संभालने के लिए धृतराष्ट्र को चुना गया और उसके सौ पुत्र हुए! तो इन 105 कुरू वंश के राजपुत्रो में पांडू पुत्र युधिष्ठिर सबसे बड़ा था! पांडु की मृत्यु के बाद उसके पांचों पुत्र जिन्हें पांडव कहा जाने लगा वह भी हस्तिनापुर आ गए!

जब सारे राजकुमार बड़े हुए तो धृतराष्ट्र ने यही उचित समझा कि युधिष्ठिर को पूरा राज्य देने की जगह राज्य का बंटवारा किया जाए और आधे भाग को युधिष्ठिर को सौंपा जाए! इस प्रकार इंद्रप्रस्थ अर्थात वर्तमान दिल्ली में युधिष्ठिर ने अपनी राजधानी बसाई! उसके चारों भाइयों ने दोबारा दिग्विजय की और हम अपार संपत्ति और राजाओं के सहयोग को हासिल किया!

महाराजा युधिष्ठिर की यश और कीर्ति फैलने लगी तो हस्तिनापुर के युवराज दुर्योधन ने इस राज्य को कपट से हासिल कर लिया और पांडवों के हिस्से आया 12 वर्ष का वनवास और 13वें वर्ष के लिए अज्ञातवास! हालांकि वनगमन करने वाले पांचो पांडव और उनके पक्ष मे उनके ममेरे भाई कृष्ण और बलराम मिलकर इतना हौसला और सामर्थ्य अवश्य रखते थे की छल कपट करने वाले दुर्योधन का विनाश करके हस्तिनापुर का राज्य जीत लिया जाए! लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया! उन्होंने दुर्योधन की बात पर भरोसा कर लिया कि 13 वर्षों के बाद दुर्योधन उन्हें छल से जीता हुआ राज्य वापस दे देगा!

परिणाम यही रहा कि 13 वर्ष तक घोर आपत्तियां और भी विपदाएं पांडवों को सहन करनी पड़ीं! 13 वर्ष के बाद बात फिर वही आ गई कि छल से जीता हुआ राज्य लौटाने से दुर्योधन ने मना कर दिया! तो जो युद्ध 13 वर्ष पहले किया जा सकता था और जिसे टालने के लिए पांडवों ने 13 वर्ष का वनवास सहन किया वह युद्ध उन्हें 13 वर्ष के बाद लड़ना ही पड़ा!

मित्रों इस कहानी में पांडव शब्द की जगह भारतीय अध्यात्म इस शब्द का प्रयोग करें और स्वयं विचार करें कि जो लोग भारतीय अध्यात्म में और भारतीय संस्कृति में आस्था रखते हैं वे कब तक वनवास झेलने के लिए तैयार हैं? क्या वे इस बात को समझते हैं कि वनवास के बाद भी उन्हें युद्ध करना ही पड़ेगा! और युद्ध में जय मिल सके इसके लिए वे वनवास के अंतराल में क्या तैयारी कर रहे हैं? अथवा क्या उनके पास कृष्ण जैसा कोई चतुर मार्गदर्शक मिलने वाला है?

कौमी अदावत

धुँध में धुँधलाता, सर्द भरा
कोहरे की चादर में लिपटा दिसम्बर है।
बस घोर अन्धेरा चारों ओर हैं।
लगती रातें लम्बी और सवेरा दूर है।
झरते मोती से ओस में डूबे पत्ते पौधे हर ओर हैं।
कंपकंपाता सा ठिठुराता सा
सिहरन भरी शीत बरसाता दिसम्बर है।
जीव जन्तु सब दिखते दुबके दुबके से
सभी लोग दिखते छिपने को तरसे तरसे से
कोहरे की चादर ओढे दिखते केवल बिजली के खम्बे
हर ओर हैं।
कुनकुनाती, शरमाती धूप में भी
ठण्डक का अहसास दिलाता दिसम्बर है।
मूँगफली के गरम दानों की चटकाहट
गरम चाय की प्याली की ये गरमाहट
मन को कर देता भाव विभोर है।
उस पर तेरा यह कविता बतलाना
ठण्डक में भी हरषाता दिसम्बर है।

-**इंदू बरैठ**, कालचेस्टर, ब्रिटेन

बलात्कार की बढ़ती घटनाओं के लिए जिम्मेवार कौन?

सबसे अधिक जिम्मेदार है युवा पीढ़ी में नशाखोरी, बेरोजगारी :

बलात्कार की बढ़ती घटनाओं के लिए सबसे अधिक जिम्मेदार है युवा पीढ़ी में नशाखोरी, बेरोजगारी, पैतृक दुष्मनी, हीन भावना. नशे में वशीभूत होकर न केवल निम्न वर्गीय बल्कि उच्च वर्गीय लोग बलात्कार जैसी घटनाओं को अंजाम देते है. यदि महिला अकेली हो तो बलात्कार की संभावना बढ़ जाती है. शराब ड्रग्स इत्यादि का सेवन व्यक्ति का मानसिक संतुलन बिगाड़ देता है. अत्यंत संस्कारी लोग भी ऐसी वस्तुओं का सेवन बलात्कार जैसी घृणित घटना को अंजाम दे देते हैं.

ग्रामीण क्षेत्रों में जमीन जायदाद के विवाद आपसी दुश्मनी के कारण भी लोग सबक सिखाने के लिए बलात्कार करते हैं. महिलाएं स्वाभाविक रूप से कमजोर होती है. इस कारण उन्हें निशाना बनाया जाता है.

साथ ही अश्लील साहित्य अश्लील पिक्चरें जो इंटरनेट की दुनिया में सहज सुलभ है का भी बहुत बड़ा योगदान इस तरह के घृणित अपराध में हैं.

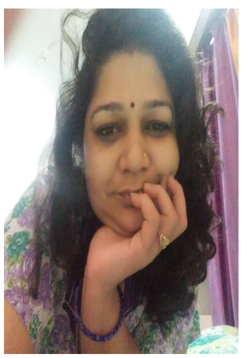

भारतीय फिल्म इंडस्ट्री के अश्लील कथा चित्र, अश्लील गाने एवं फैशन जगत के नित नए असभ्य प्रयोग व महिलाओं के नित छोटे होते वस्त्र भी इस तरह के अपराधों के लिए जिम्मेदार हैं.

-श्री दीप्ति मिश्रा

उपकुलसचिव, प्रो० राजेन्द्र सिंह रज्जू भैया विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उ.प्र.

लड़कियों को उच्च शिक्षा के साथ-साथ संस्कारी बनाएं

हम बलात्कार की निंदा तो करते हैं, लेकिन हम यह नहीं पूछते कि बलात्कार पैदा ही क्यों होता है? हम जड़ में नहीं जाते. वास्तव में देखा जाए तो हमारे समाज का बहुत महत्व होता है, समाज हमारे घर के संस्कारों से बनता है, और संस्कार घर के जिम्मेदार नागरिकों से. आज की स्थिति में घर के सभी बड़ों की यह जिम्मेदारी बनती है कि वे देश की संस्कृति को बचाने के लिए लड़कों को यह अहसास दिलाएं कि उनके देश की हर स्त्री सम्मानीय हैं. उन्हें भी बराबरी से गृह कार्य सिखाएं तथा लड़कियों को उच्च शिक्षा के साथ-साथ उन्हें आत्मनिर्भर बनाने के साथ-साथ उन्हें भी गृह कार्य में कुशल तथा संस्कारी बनाएं. क्योंकि एक लड़की ही भविष्य की भावी जागरूक माँ होगी. आज हमारे देश की हालत कुछ ऐसी है कि ना हम पूरी तरह से विदेशी संस्कृति को अपना पाते हैं और ना ही भारतीय संस्कृति के लिए पूरी तरह से समर्पित है, आज जरूरत है हमें विदेशी संस्कृति के बजाय भारतीय संस्कृति को अपनाना, और बेहद जरूरी है बच्चों को बचपन से ही उनमें संस्कारी गुणों को डालना.

-श्रीमती मंजू जायसवाल, शिक्षिका, दुर्ग, छ.ग.

कठोर कानून एवं कठोर निर्णय की आवयकता है

मेरे विचार से इन अमानवीय एवं हम सब को तथा पूरे समाज व राष्ट्र को शर्मसार करने वाली घटनाओं के लिए वास्तव में हम सब लोग दोषी हैं. इसमें हमारा समाज, परिवार, पुलिस प्रशासन, हमारे संचार माध्यम (मीडिया), सोशल मीडिया एवं शिक्षा प्रणाली सभी दोषी हैं. संयुक्त परिवार का टूटना, बाजार में अश्लील साहित्य की उपलब्धता, सिनेमा, टी.वी. चौनलों एवं सोशल मीडिया पर अश्लील सामग्री सरलता से प्रत्येक वर्ग अर्थात अवयस्क बच्चों तक पहुंच की इसमें प्रमुख भूमिका है. इन सबमें सुधार करके, बच्चों को नैतिक शिक्षा प्रदान करके हम इन समस्याओं में कमी ला सकते हैं. इसमें सरकार एवं न्यायलय को महत्वपूर्ण भूमिका निभानी होगी. इसमें कठोर कानून एवं कठोर निर्णय की आवश्यकता है. एकल परिवार व माता पिता की व्यस्तता तथा बच्चों के प्रति उदासीनता भी इसका प्रमुख कारण है. हमें अपने बालकों को नारी का सम्मान

करने की शिक्षा प्रत्येक परिवार से देनी होगी. हमारे शास्त्रों में भी कहा गया है यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता. हमें इसे सदैव स्मरण रखना चाहिए. भारतवर्ष एवं संपूर्ण विश्व को इसकी शिक्षा की अत्यंत आवश्यकता है.

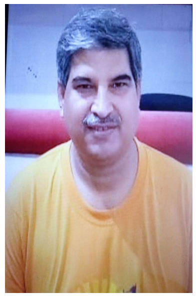

-सतीश कुमार मिश्र 'सत्य',
प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

स्वच्छता क्यों जरुरी है?

स्वच्छता प्रकृति की हर चीज के लिए जरुरी है. पशु, पक्षी मछलिया आदि गंदे पानी के कारण मर रहे है, फैक्टरियों का गंदा पानी हम नदियों में डाल रहे है. जिससे पशु पक्षी, मछलियां दूषित हो रही है, मर रहे है. पशु पक्षी भी अपनी सफाई करते रहते है. धार्मिक दृष्टिकोण से भी देखें तो हम तीज-त्योहारों पर अपने शरीर, घर की सफाई आदि करते है. यही कारण है कि तीज-त्योहारों के दिन हमारा मन एवं चित्त दोनों प्रसन्न रहता है. सामाजिक, मानसिक एवं धार्मिक स्वच्छता भी जरुरी है. यहां भी गंदगी का अंबार लगा हुआ है.

-श्रीमती शिखा गिरी, शिक्षिका, नैनी, प्रयागराज

स्वच्छता एक व्यवहार है, जो स्वयं को और दूसरों को दूषित होने से बचाता है. स्वच्छता में 'स्व' से स्वास्थ्य, अच्छा व 'ता' से ताजगी निहीत है जो तन, मन, वन को स्वस्थ, अच्छा व तरोताजा रखता है.

-लक्ष्मीकांत वैष्णव, चांपा, जांजगीर, छ.ग.

दाम्पत्य जीवन में जहर घोलता अहम

दांपत्य जीवन के दो बराबर पहिए पति और पत्नी होते है. यदि किसी भी पहिए में अहंकार आ जाए तो गृहस्थी का तबाह होना निश्चित है. यदि पति अधिक पढ़ा लिखा है और पति गांव से है या पत्नी अधिक पढ़ी लिखी है और पति अल्प शिक्षित है तो ऐसी स्थिति में अधिक शिक्षित व्यक्ति दूसरे व्यक्ति का वक्त, बेवक्त अपमान कर देता है और अपने साथी की शिक्षा के कारण कहीं ना कहीं समाज में हीन भावना से ग्रस्त हो जाता है.

पति और पत्नी में से यदि कोई एक अधिक रुपवान और दूसरा कुछ सामान्य है तो रुपवान व्यक्ति कहीं न कहीं अपने रूप के गर्व में चूर हो जाता है और यह घमंड पूरी गृहस्थी में आग लगा देता है.

मैं योग्य हूं, मैं अधिक शिक्षित हूं, मैं बहुत सुंदर हूं, मैं बहुत कामकाजी हूं, मैं बहुत कम आता हूं, मैं बहुत बुद्धिमान हूं, मैं बहुत अच्छा लिखता हूं, मैं बहुत अच्छा बोलता हूं यह छोटी-छोटी चीज है जो बाहर के समाज में प्रशंसा और तारीफ पाती हैं परंतु घर में यदि इन चीजों को रोज प्रशंसा नहीं होती तो व्यक्ति नाराज हो जाता है और अपने गुणों की अनदेखी करने का आरोप लगाता है यही आरोप धीरे-धीरे परिवार के प्रत्येक सदस्य के मन में जहर घोलता है.

समाज में मिलने वाला प्रत्येक व्यक्ति आपका हितैषी नहीं होता. मैं अपने काम निकालने के लिए भी अनर्गल प्रशंसा या चमचागिरी करता है. परन्तु उसी चमचागिरी से वशीभूत होकर व्यक्ति घर में भी अपने को इसी रूप में अपना सम्मान चाहता है जो व्यवहारिक नहीं है और इस कारण मिथ्या अहम का शिकार हो जाता है.

अपने अहंकार के कारण दूसरे का अपमान पूरी गृहस्थी को तबाह करने का प्रमुख कारण है. इसी कारण हमारे समाज में तलाक के प्रकरण बहुत अधिक बढ़ गए हैं.

-श्री दीप्ति मिश्रा, प्रयागराज, उ.प्र.

अहम सिर्फ दाम्पत्य जीवन में ही नहीं हर रिश्तें में जहर घोलता है, जहां अहम होगा वहां जहर घुलना ही है. लेकिन इसका सबसे अधिक असर वैवाहिक जीवन पर होता है. क्योंकि वैवाहिक जीवन का मतलब ही होता है हम, मैं नहीं. पति पत्नी साईकिल के दो पहिए की तरह होते है. पति पत्नी साईकिल के दो पहिए की तरह होते है. जैसे हम यह नहीं कह सकते कि अगला पहिया जरुरी है या पिछला पहिया. दोनों पहियों का अपना महत्व होता है. दोनों का काम तुलनात्मक रुप से बराबर होता है. दाम्पत्य जीवन में जब हम से मैं आ जाता है यानि मैं कमा कर लााता हूं, मैं ये करता हूं,, वो ककरता हूं, और दूसरा पक्ष मैं ये करती हूं वो करती हूं. मेरा बिना कुछ नहीं हो सकता तब टकराव की नौबत आती है. केवल दाम्पत्य जीवन में ही नहीं सामाजिक, पास पड़ोस, कार्यालय में भी अहम आ जाने पर टकराव होता है. लेकिन वहां इसलिए चल जाता है कि वहां दूरी होती है. हम धीरे धीरे भूल जाते है. अहम किसी भी रिश्ते के लिए जहर होता है.

--श्रीमती शिखा गिरी, शिक्षिका, नैनी, प्रयागराज

निकालना व उस पर अनावश्यक रूप से बहस करना आदि चीजें आरंभ हो जाती हैं जो पति और पत्नी के रिश्ते को तो प्रभावित करती ही है, घर का भी माहौल खराब होता है.

'अहम भाव' वह सर्प है जो व्यक्ति के साथ साथ पूरे परिवार को अपने जहर से प्रभावित करता है. अहम रूपी सर्प का दमन दांपत्य जीवन में आवश्यक है. तभी हम एक दूसरे का सहारा भी बन सकते हैं तथा एक अच्छे मार्गदर्शक भी हो सकते हैं जो हमारे दांपत्य जीवन को एक अच्छा स्वरूप प्रदान कर सकता है.

–लक्ष्मीकांत वैष्णव, चांपा, जांजगीर, छ.ग.

इस कालम के अंतर्गत प्रत्येक माह एक ज्वलंत मुद्दा देते हैं. दिए गये मुद्दे पर आपको अपने विचार 150–200 शब्दों में टाईप कर या लिखकर उसकी फोटो अगले माह की 30 तारिख तक ई-मेल आईडी vsnehsamaj@rediffmail.com या ह्वाट्सएप नंबर 9335155949 पर भेज सकते हैं. साथ में अपनी फोटो, नाम एवं पता भेजना न भूलें. सर्वोत्तम तीन विचारों को अगले अंक में प्रकाशित किया जाएगा. विषय में आज का मुद्दा अवश्य लिखे. लगातार तीन मुद्दो में चयनित होने पर सम्मान पत्र भी दिया जाएगा. इसमें कोई उम्र का बंधन नहीं है.

इस माह का मुद्दा

ईवीएम या वायलेट से मतदान होना चाहिए

अभिमान को आने मत दो, और स्वाभिमान को जाने मत दो, क्योंकि अभिमान आपको उठने नहीं देगा, और स्वाभिमान आपको गिरने नहीं देगा.

धारावाहिक उपन्यास

"मुगल–ए–आजम की विरासत"

डॉ० अरुण कुमार आनन्द,
चन्दौसी, संभल उ०प्र०

ईस्लाम धर्म का कट्टर धमधि शुष्क हृदय का साहित्य-संगीत काव्य कला विहिन माना जाने वाला मुगल सलतनत का बादशाह जो अपने अब्बा हूजूर को कैद करके अपने भाइयों का कत्ल करवा कर 1659ई० में दिल्ली सल्तनत के वैभवशाली राज गददी पर बैठा अबुल मूज्जफर, अली मोहिउद्दीन गजनवी, उर्फ आलमगीर औरंगजेब गजनवी 'बादशाह' हिन्दुस्तान' गाजी उपाधि के साथ राज सिहासन पर बैठते ही अपने श्रेष्ठ वफादार सिपाह सालार मौ० वाजिद खाँ को सल्तनत का वजीर घोषित कर दिया था।

> **'इश्क की आग में सब कुछ भस्म हो जाता हैं, समुद्र में हजारों जहाज तिनके के तरह डूब जाते हैं. इश्क की आग में इंसा तो क्या पीर-पैगम्बर भी फना हो जाते हैं. इसी को 'पाकीजा' कहा जाता है. वजिरखांन की मुहब्बत भी कुछ ऐसा ही पाक इश्क था.**

उस मुगल वंश के छठे बादशाह औरंगजेब गाजी को जो मुल्क का क्रूर राजनीतिज्ञ एवं कूटनीतिज्ञ और बहादूर योद्धा ईतिहास कारों ने माना था, तो वहीं वजीर वाजिद खां भी अपने बादशाह से कम नही था. उसके असर हृदय में भी मुहब्बत का जजबा रससित धारा में बह निकली थी, वजिर खाँ गाजी ने अपने जीवन में सिर्फ एक बार-ही किसी मासूका से मुहब्बत किया था, जबकि उसमें क्रूरता के अतिरिक्त कुछ नही था, उसका बेरहम दिल किसी को बकस्ता नही था, से मुहब्बत की उम्मिद करना नाहक था. मुहब्बत वह भी एक काफीर माने जाने वाली हिन्दू धर्म की लड़की से, यह उसका पहला और आखिरी मुहब्बत थी. कहावत है 'भरी जवानी में गिरगिट को भी शवाब आ जाता है, मुहब्बत में पहाड़ों के दिल भी मोम की तरह पिघलने लगते हैं. इश्क की आग में सब कुछ भस्म हो जाता हैं, इश्क की आग के समुद्र मे हजारों जहाज तिनके के तरह डूब जाते हैं. इश्क की आग में इंसा तो क्या पीर-पैगम्बर भी फना हो जाते हैं. इश्क का दरिया सब कुछ बहाकर ले जाता है. इसी को 'पाकीजा' कहा जाता है. वजिरखांन की मुहब्बत भी कुछ ऐसा ही पाक इश्क था.

तब बुरहानपुर-खंडवा और भूसावल मराठवाड़ा राज्य का क्षेत्र-अंग था इन कस्बों के बीच ताप्ती नदी के किनारे बसे शारावत सम्प्रदाय के कबीलों के गांव के सुबेदार मीर खलील खाँ के पेड़-पौधों से भरपूर बाग़ और उनका शाही शानदार राजमहल का पाइबाग़ मौसमी फल फूलों से भरपूर रहता था. वहीं एक वृक्ष के नीचे खड़ी नवयौवना युवती आम की नीची सी डाली को उछल कर पकड़ने का असफल प्रयास कर रही है. कुछ ऊँचाई पर लगें फल को तोड़ने के प्रयास में निस्तम्भ भी

उछल रहे हैं. आमफल उसकी नाजुक बांहों की पहूंच से कुछ दूर पड़ रहा है. उस अल्लहड़ युवती का चेहरा इस असफल की बूंदे उभर आई है. आगे-पीछे कुछ ध्यान किए बिना ही वह फल तोड़ने में व्यस्त है.

पसीन की नन्हीं-नन्हीं बूंदें चेहरे पर चमक रही है. ऐसे मदमस्त यौवन के सामने मानो पत्थर भी पिघल जाते हों तो भला पत्थर दिल इंसान वशीभूत क्यों न होगा? वजिद खां भी उसके मदमस्त यौवन को देखकर दिवाना हो गया था. उसके पत्थर दिल में भी मुहब्बत की आग भड़क चुकी थी. उसकी बड़ी-बड़ी रस भरी रक्तनारी सी आंखों के उपर जुल्फों की एक लट आकर मानों खिले गुलाब से चेहरे से पसीनों की बूंदों को अपने में समेट लेना चाहती हो. लाल होंठों को, मोती समान दांतों से दबाकर बारबार फल तोड़ने का प्रयास, उसका उन्नत वक्ष उपर नीचे हो रहा था माथे की ओढ़नी-चूनरी कब की सरक कर नीचे जा गिरी है, उसे पता ही नही चला. भरपूर जवानी और हुस्न शबाब से परिपूर्ण यह अल्हड़ मदमस्त नवयुवती 'मीना' (मीना शहावत) शहरावत सम्प्रदाय के कबीले की लड़की जिसे खाना बदोश कबीला कहा जाता है. पास ही के शहरावत बस्ती की है. गोल चेहरा सुन्दर नाक नकस और अकर्षक गोरी कावा, चोली घाघरा में छुपा उसका गठीला सूडौल गोरा बदन अनायस ही मर्द को अपनी तरफ आर्कषित और सम्मोहित कर जाता था. अकस्मात पीछे से किसी को मर्दाना हाथ आगे बढ़ कर फल तोड़ लेता है. युवती यह देख हड़बड़ा कर चिहुंक पड़ती है. उसके हाथ से डाली छूटकर उपर चली जाती है. और वह एक झटके से पीछे मुड़ती है, सामने लम्बा चौड़ा मर्द को खड़ा देखकर स्तब्ध रह जाती है. शाही लिबास में ढका वह युवक आमफल हाथ में लिए मीना की तरफ आस्कक्त दृष्टि डाल कर मुस्कुरा रहा था. इससे पहले कि मीना कुछ बोलें, उसकी ओर मुखातिब होकर बोला- ''गुस्ताखी माफ हों, मैं बहुत देर से दूर खड़ा देख रहा था फल तोड़ने के लिए आप बहुत कोशिस कर रही हैं, मगर, गुस्ताख फल आप के हाथों से दूर होता जा रहा था, तौ मैने लपक कर तोड़ लिया-शायद हमसे बड़ी-गुस्ताखी हो गई, यह लिजिए आपके खिदमद में माहे दस्तूर-हाजिर है फल!'' (उसने आम मीना के सामने बढ़ा दिया था एक तो मर्द दूसरे बाग़ में आने की जुरर्रत की, और माफी मांग रहा है बेगैरत, मीना को जैसे होस आ जाता है, अपनी ओढ़नी को सिरंपर ढांपते हुए सामने खड़े युवक को ऊपर से नीचे तक एक गहरी नजर से देखने के बाद जर्क-वर्क शाही पोशाक सिरपर रत्न जडित्रत कीमती दस्तर (मुकुट) के बीच अमूल्य हीरा अपना जगमग आभा वातावरण में बिखेर रहा ह. कमर में रत्न जड़ित मियान के अन्दर लटकी लंब्बी तलवार, शानदार व्यक्तित्व कंटीली तलवारकट भौवें, भारी भरकम रोबिला फ्रेंच कर दाड़ी युक्त चेहरा, बड़ी बड़ी तेजस्वी आँखों के बीच खिल रही मुस्कान, भारी भरकम लम्बा तगड़ा सजिला नौजवान, उसने सोचा यह कोई साधारण आदमी तो नही हो सकता. वह माथे पर ओढ़नी खींच लेती है, पर कुछ लटें विद्रोही मुद्रा में झांकती रहती हैं. पलकें नीचे झुक जाती हैं, यह देख युवक हाथ बढ़ा कर आम उसे थमा देता है. मीना की भौवें कुंचित हो जाती है. निगाहों में बनावटी क्रोध है-''आप कौन है, बाग़ में किसकी इजाजत से आए है?''

बड़े बे गरत है-आपको क्या मालूम नहीं यह शाही जनाना बाग़ है?'' युवक के कान में जैसे किसी ने खटटे-तीखें रस की पिचकारी मार दी हो. ''यहां जब आप खुद मौजुद हो किसी की इजाजत की जरूरत क्यों? क्या शब्बे दस्तूर काफी नही?

(मीना के नेत्रों से चिंगारी सी छूटी उसने वह फल धरती पर दे मारा. वह युवक जो खुद हिन्दुस्तान का सल्तनते आदिल बादशाह वाजित वजीर था. उसका चेहरा इस अपमान से तमतमा उठा था. अगर युवती की जगह कोई और होता तो सिपाहियों को बुला कर उसी वक्त सूली पर चढ़वा देता. लेकिन वह तो हुस्न के इश्क में मजबूर था. खून का घूंट पीकर रह गया. हुस्न-ए -तबशुम पर एक नजर डाल कर- गुस्से को हल्का करते हुए- ''मासा अल्लाह आपकी खूबसूरती की खूशबू के सामने यह मगरूतियत कैसी, किसी की इजाज्त की जरूरत है क्या, बर्ना हमें कहीं भी जाने के लिए किसी की इजाज्त की जरूरत कबसे होने लगी, शबाब-ए-बानो, किबला हमें आपके शै-पहचान की जरूरत ने यह जरूरत ने यह गुस्ताखी करने पर मजबूर न किया होता? तो हमव ह गुनाह कभी नही करते- सजाए जुर्म के हकदार है तो सजा भी कबूल है.''

'बे गैरत, जनबा, आप बड़े गुस्ताख हैं, जनना से कैसे गुप्तगूं किया जाता है, इतना भी इल्म नही जानते, नही-फौरन वहां से चले जाईए वर्ना, वजीरे आदिल से दरख्वास्त कर सर कलम करने का फरमान जारी करवा दिया जाएगा, बादशाह सलामत आलमगीर के मुगल सल्तनत के वसूलों से वाकिफ नही है क्या?''

'जाँबाज मर्द फतवा-ए-मौत से डरा नही करते हैं-बानु और फिर हुस्न-इश्क के बीच ऐसे फतवो का रूतबा ही दफनगार है, जो क्या है? वो दीवार खड़ी कर दें.'

(साहब जादे ने कोशिस कर अपनी आवाज को तेज और बुलन्द करते हुए)- 'अरी नादान, बे गुर्बत लड़की, तू नही जानती हम कौन हैं, बादशाह हूजर के खाश लोगों में से-वजीरे आजम मुगल सल्तनत वाजिद खाँ को नही पहचानती?'' वाजिद खाँ का सर कलम करने वाला तों आज तक कोई दुनियां में पैदा ही नही हुआ है. जन्नते हूर?''

'सुना तो बहुत था सल्तनते आलम वाजिद खाँ के बार में आज रूबरूं हैं, इस खाकसार कनीज के सामने यकीन नही होता? कहां खतरनाक जमीरे-वर्द वाजिद खाँ! और कहां बेपनाह हमदर्द वाजिद खाँ, कहीं यह ख्वाब तो नही है? माफी चाहती हूँ जनाब इस वद जुबानी के लिए, अगर जानती तो ऐसा होता ही नही, मुलाकात के लिए शुक्रिया' मैं भी शहरावत मजहब के मुखिया करण सिंह की दुख्तर मीना हूँ पास ही कबिले की बस्ती में रहती हूँ. बकरियां चुगाने आई थी बाग़ में आम देखा तो तोड़ने चली आई, खूबसूरत चोरी करने-जो सजा वाजिब हो दिजिये हूजूर, कबूल होगा.''

वह पलटी और तेजी से बस्ती की तरफ जाने लगी-आगे बढकर वाजिद खाँ ने रास्ता रोक लिया-''आपने बिना इजाज्त बाग़ में आकर आम तोड़ने का गुनाह किया है, मुगल सल्तनत में गुनाह करने वालों को बकसा नही जाता, यह हमारा वसूल है. आपके इस खूबसूरत गुनाह से हमारा दिल बाग़ बाग़ है दुख्तर-ए-हुस्न शबाब, इसकी सजा आपको जरूर वाजिद खाँ को ऐसा लगा मानो दुनियां के सारे रंग फीके पड़ गये हों, जैसे कई मसक पानी किसी ने उस पर एक साथ उड़ेल दिया हों, या जैसे रास्ते में पड़े किसी पत्थर से पैर की उंगीलयां टकरा गई हों. आंखो के आगे अंधेरा सा छा गया वह वहीं ठगा खां खामोश कुछ देर रास्ता रोके खड़ा रहा बुत बना मुहब्बत के पहले पायदान पर मुकम्मल ऐसे ही हालात होते है, मासूक के दस्तगोस में दिल बार-बार मचलता और मीठा-मीठा दर्द जीस्म को सालता रहता है. कम्बख्त मुहब्बत की आग बहुत खतरनाक होती है. पल भर की जुदाई भी बर्दास्त के बाहर हो जाता है. वह भी इसी मुस्तीबल का शिकार हो चुका था. बनिस्पत मुहब्बत की चिंगारी दोनों तरफ बराबर सुलग रही थी, इकरार-ए-हद की गुंजाईस भले खत्म हों कुछ देर तक का ऐहसास हुआ. दूबारा इसी जगह मुलाकात का वादा, लेकर अपने अपने मुकाम पर रवाना हो गयें. तब तक दुख्तर ओं शबाब को यह मान नही था कि मुहब्बत का नशा कैसा होता है, एक बार जों इश्क-ए-हयात पी लेता है, उर्मभर उसी शूरूर में डूबा रहना चाहता है. मुहब्बत का शुरूर टूटते ही तिलमिला या बौखला जाता है. कम्बख्त मुहब्बत ऐसी चीज है न आदमी को मरने देता है न जीने देता है, इश्क व हुस्न के समुन्द्र में ता उर्म डूबोये रखता है. ऐसा ही हाल-ए-वास्ता हो चला था वाजिद खाँ और मीना के बीच. मीना कों भी सुख-चैन और रातों की नींद हराम हो चूकी थी. वाजिद खां के मुहब्बत की रंग एक ही मुलाकात में इतना गहरा चढ़ चुका था कि उसके लिए रात काटना मुश्किल हो रहा था, उधर यही हाल मुकम्मल वाजिद खां की थी. बेचैनी की छटपटाहट में बे काबू वाजिद खाँ शाही सल्तनत का वजीर-ए-खास जब अपने होश हवास दुरूस्त कर जंग-ए-बख्तर में लौटा उस (समय) वक्त अपने बादशाह सलामत अदले जहांगीर जनाब औरंगजेब आलमगीर गांजी के हूकूम से दक्षिण की तरह मय जंगी फौज कूच कर रहा है. सौराष्ठ राज्य के शरहद पर बुरहानपुर पड़ता है, वहां के सूबेदार मीर खलील खाँ के हवेली में ठहरा था. यह इलाका मुगल सल्तनन का ही एक हिस्सा है. मीर खलील खां वाजिद खां के रिस्ते के साढू भी हैं. उन्होने ही एक बार मेहमान नवाजी के दौरान, मीना शहरावत के बे मिसाल खूबसूरती और भरपूर जवानी का जिक्रं वाजिद खां से किया था तभी से वह हुस्न ए शबाब हीना-ए-दस्तूर के ख्वाब आए दिन देखने लगा था यही चसका उसे जनाना बाग़ में ले आया था. उसे बताया गया था कि मीना हर रोज बकरियां चुगाने शाही बाग़ के आस-पास आती है. वहीं उनके पाक मुहब्बत का पहला मुकाम था जहां से शुरू होती है दरिया-ए-पाक मुहब्बत की नीर-हिलोरे लेता नदी का पानी.

मुगल सल्तनत में सबसे ज्यादा चतुर चालाक जां बांज और आरजू तलख (महत्वकांक्षी) सिपाह सालार वाजिद खां ही थाः जो वजीर-ए-मुगल सल्तनत बन चुका था बादशाह औरंगजेब आलमगीर गाजी उसका बहुत आदर-खिदामत करते थें, उनके बिना सल्तनत का कोई भी काम जमूरीहताद मुकम्मल नही होता था. किसी पीर-फकीर ने बादशाह औरंगजेब से कह रखा था उनहें मुल्कबददारों (निकाले हुए लोगों) से खबरदार रहना चाहिए, जिसमें शहबाज भी था. तवायफों और कनीजों के मुहब्बते-दास्तानों का

शिलशिला मुगल खानदान में शुरू से चला आ रहा है. इसमें सलीम और अनारकली की मुहब्बत-ए-दास्तान मशहूर है. जो ताजमहल के रूप में आज भी किस्सा ए पाक मुहब्बत की गवाही की सहादत दुनियां में तामीर (प्रमाणित) करता है. बाद मुम्ताज नाम सें शादी करने के बाद सलीम शहाजहां ए तख्त ए वारिस हो गये थे. शाहशाहां मुगल ए आजम शाह-ए-मुगल बादशाह जलालूद्दिन अकबर ने अनार कली को मरा दिखा कर मुम्मताज बना दिया और मुगल सल्तनत की बहु इकरार किया. औरंगजेब भी मुहब्बत के मामले में कततर नही था. एक कनीज से बेपनाह मुहब्बत ने उसें जल्लाद बना दिया था, वर्ना वह इतना संगदिल इंसान नही था. कहते हैं औरत की बेवफाई आदमी को संगादिल और क्रूर बना देता है. बे वजह बेगुनाहगारों का कत्ल और मौत इसी दर्द शारी की खास वजह हैं. मुगल मजहब के वजीए-ए-सल्तनत ने उसे इनाम में जीते हुए कुछ इलाका बकशीस देकर बुरहानपुर का जागीरदार मीर खलील खाँ को बना दिया था.

तब हिन्दूस्तान शिया मुसलमान हूकमरानों और मराठों के बीच हूकूमते झंझावात की वजह से मुगल सल्तनत के लिए एक बड़ा झंझा बात इलाका था. वहां हूकूमत के वशीर (राज्य विस्तार) के लिए वजीर-ए-आजम वाजिद खाँ को इलाकाए सूबेदार के साथ दस हजारो मनसबदार सिपाह सालार बना कर जंगी अशबाब के साथ भेजा गया था. उसके साथ जंगी फौज और तोपखानों की तीन दस्तियाब (टुकड़ियां) था.

क्रमशः....

क्या आप लिखते हैं?

अपने काव्य संग्रह, कहानी संग्रह, आलेख संग्रह इत्यादि के प्रकाशन हेतु संपर्क करें।

विशेष आकर्षण

1.प्रकाशन मात्र लागत मूल्य पर 2. बिक्री की व्यवस्था
3.प्रचार-प्रसार की व्यवस्था
4.विमोचन की व्यवस्था
5. ऑन लाईन संस्करण में पुस्तक का प्रकाशन

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें:
प्रसार सचिव, विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, एल.आई.जी-६३, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-211011ई—मेलः sahityaseva@rediffmail.com

संस्थान के यशस्वी अध्यक्ष डॉ0 शहाबुद्दीन नियाज़ मुहम्मद शेख के 13दिसम्बर को उनके जन्म दिवस पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

हिन्दी अपनाएं भ्रष्टाचार भगाएं
विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान,
एल.आई.जी-६३, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा,
इलाहाबाद-211011ई—मेलः sahityaseva@rediffmail.com

मेरी प्रेरणा

मेरी प्रेरणा से मेरी मुलाकात हुई
धीरे धीरे मेरी प्रेरणा से बात हुई
जैसे थम सी गई जिन्दगी
जब मेरी प्रेरणा से मुलाकात हुई।।
मेरी प्रेरणा ने मुझे कहा
तुम बहुत ही सुन्दर और प्यारी हो
एक बहार जीवन में जैसे आ ही गई
अब जीवन को जीने लगी हूं
अपने तरीके से रहने लगी हूं।
सबके लिए जीती रही अब तक
आज अपने लिए भी जीने लगी हूं
मेरी प्रेरणा से मुझे कब
मोहब्बत हो गई
अब मेरी प्रेरणा से
मोहब्बत करने लगी हूं
अब अपने लिए जीने लगी हूं
अब अपने लिए जीने लगी हूं।

-डॉ० मुक्ता कान्हा कौशिक
राष्ट्रीय शिक्षक संचेतना
महासचिव, रायपुर, छ.ग.

स्त्री

बाँचती है स्वयं को स्त्री
पचास के पार ही
क्षीण होती देह-शक्ति
पर बढ़ती जाती है जिजीविशा
तैयार करने लगती है
बैलेंस शीट
करती है पुनरावलोकन आमद-खर्च का
और छूटी हुई मदों को
फिर से संभालती है
तब जान पाती है कि जिंदगी
मात्र कागज का पुर्जा नहीं
जो मद छूट जाती है,
वह जगह
खाली ही रह जाती है
पर मजे की बात यह है कि
बैलेंस शीट
फिर भी 'टेली' हो जाती है।

डा०.मंजु रुस्तगी
हिंदी विभागाध्यक्ष,
वल्लियाम्मल कालेज फार वूमेन, अन्ना नगर, चेन्नई

वो एक दिन

मैंने जल्दी-जल्दी काम निबटाये,
कपड़े पहने और आँख बचाकर,
निकलना चाहा जब घर से,
कि नन्हीं कुंजू मुझसे लिपट गई,
'माँ तुम कहीं मत जाओ, मैं तुम
संग खेलूंगी, बातें करूंगी,
मैं तुम्हें तंग न करूंगी।'
मैंने एक दस का नोट उसकी
तरफ बढ़ाया और कहा कि लो
चॉकलेट ले लेना।
वह दौड़ी अन्दर गई व अपनी
गुल्लक उठा लाई,
धड़ाम से पटकी जमीन पर दे
उसने सारे पैसे समेट कर,
मेरी झोली में डाल दिए,
व कहा माँ सारे पैसे ले लो
पर आज मुझे छोड़ मत जाओ।
मैं कितनी निष्ठुर बन गई थी कि
सब कुछ समेट, मुस्कराकर उसे
दे दिया और चल दी, अपनी
ममता का गला घोंट कर,
चन्द कागज के टुकड़े बटोरने,
जो मुझे सुख तो दे सकते हैं
पर खुशी नहीं। न जाने कब
स्कूल आ गया, मैंने इस्तीफा
प्रधानाचार्य की मेज पर रखा
और आ गई उस संग कुछ अनमोल
पल बिताने, जो एक बार जाकर
फिर कभी न आयेंगे।

-शबनम शर्मा, सिरमौर, हि.प्र.

संदेश

संदेश आज है सिर्फ एक
घर के अन्दर ही रहो नेक
कोरोना मरने वाला है
हटने वाली है सभी टेक।

घर से बाहर भी खतरा है।
कोरोना हर सु पसरा है।
वह उसकी पकड़ से बाहर है।
जो घर के अन्दर ठहरा है।

ईश्वर का भजन करो घर में।
प्रभु का स्मरण करो घर में।
यह मेरी बात सटीक सुनो।
तुम पूर्ण सुरक्षित हो घर में।

अब बार बार क्या कहूँ मित्र।
स्थिति आज कल है विचित्र।
दिल में एक दर्द उभरता है।
टीवी पर इसके देख चित्र।

मेरे अपनो मेरे सपनो।
आकुल व्यकुल भी मत होना।
है कड़ी धूप घर में ठहरों।
मरने वाला है कोरोना।

मन तो मन है मन की इच्छा।
पूरी की है हर तरह सदा।
मन को भी पूर्ण नियंत्रण में।
रखना पड़ता है यदा कदा।

-हितेश कुमार शर्मा,
गणपति भवन सिविल लाईन
बिजनौर-246701 उ०प्र०

गीत

राम मिले सीता को जैसे, मुझको भी तुम मिल जाओ
तोड़ धनुष को वरण करो तुम, राम मेरे तुम बन आओ
नहीं मांगती बंगला गाडी, नहीं मांगती मैं सोना
कुछ छोटे-छोटे सपने हैं, आकर पूरे कर जाओ
................राम मेरे तुम बन आओ
युग-युग से प्यासी है धरती, आकर अगन बुझा जाओ
घट-घट बैठी कोटि अहिल्या, आकर उन्हें जिला जाओ
........राम मेरे तुम बन आओ
दुर्योधन, दशग्रीव बने सब, नारी हाहाकार करे
मर्यादा पुरुषोत्तम हो तुम, आकर पाठ पढ़ा जाओ
.........राम मेरे तुम बन आओ
साधू-संत सियाने जितने, सब माया के लोभी हैं
बच न सकी सोने की लंका, त्रेता याद दिला जाओ
.............राम मेरे तुम बन आओ

ग़ज़ल

यादों की इक अनमिट चिट्ठी लिक्खी होती है
पढ़ पाते हैं उतनी, जितनी लिक्खी होती है
साँसे, धड़कन सबको मिलती हैं पर गिनती की
जीस्त/उम्र मगर जीते है, जितनी लिक्खी होती है
चंद लकीरों ने ही सारा जीवन बाँच दिया
हर रेखा में एक कहानी लिक्खी होती है
कौन चलेगा साथ हमारे, किसको कौन वरे
किस्मत में वो खास निशानी लिक्खी होती है
केवल राधा ही मोहन को पूर्ण नहीं करती
मीरा-सी भी एक दिवानी लिक्खी होती है
केवल रात अमावस की ही भाग्य नहीं लिखता
उसने तो शब 'पूनम' की भी लिक्खी होती है।

-**डॉ० पूनम माटिया,** दिलशाद गार्डन, दिल्ली

श्रीराम

अमर शहीदों को श्रद्धांजलि व सैनिक वीरों को नमन
वीरो तुम्हें नमन सैनिक रणधीरो तुम्हें नमन है।
आज तुम्हारे ही साहस से सुरभित हिन्द चमन है।।
सीमा पर ही ईद दिवाली उत्सव पर्व तुम्हारा।
राष्ट्र-सुरक्षा ही जीवन का है संदर्भ तुम्हारा।।
ऐसे राष्ट्रसपूतों को यह देश नमन करता है।
जिनका साहस शौर्य देश का हर संकट हरता है।।
शौर्य तुम्हारा राष्ट्रघात का करता सदा दमन है।
आज तुम्हारे ही साहस से सुरभित हिन्द चमन है।।
जिन वीरों का बल विक्रम भी सुरभित नहिं हो पाया।
जिन पर दुश्मन के छल की पड़ गई क्रूरतम छाया।।
ऐसे उन शहीद बेटों को भारत याद रखेगा।
वीर सैनिको शौर्य तुम्हारा सारा विश्व लखेगा।।
छद्मयुद्ध की इस अहंधी को करना तुम्हें शमन है।
आज तुम्हारे ही साहस से सुरभित हिन्द चमन है।।
गौ सी समरस भूमि भारती पर जो अहंख उठाये।
वीर तुम्हारे साहस से वह क्षार क्षार हो जाये।।
भारतमाता के सपूत भारत के वीर लाल हो।
वीर सैनिको दुश्मन दल दलने के लिए काल हो।।
विश्व-शांति हित शौर्य तुम्हारा साक्षी नीलगगन है।
आज तुम्हारे ही साहस से सुरभित हिन्द चमन है।।

-**लक्ष्मीप्रसाद गुप्त 'किंकर',** छतरपुर,मप्र.

कोरोना नहिं गया

पूरी तरह से खुल गए, फिर से हाट बाजार।
बस, रेलें, ऑटो चले, मोटर साईकिल, कार।
मोटर साईकिल, कार, दशहरा, आई दिवाली।
घर-घर दीपक जलें, लक्ष्मीं लाएं खुशहाली।
कहत बरैया राय, रखो ससामाजिकक दूरी।
कोरोना नहिं गया, सुरक्षा करिये पूरी।

-**डॉ० राम सहाय बरैया,** ग्वालियर, म.प्र.

आज का मुद्दा

इस कालम के अंतर्गत प्रत्येक माह एक ज्वलंत मुद्दा देते हैं. दिए गये मुद्दे पर आपको अपने विचार 150—200 शब्दों में टाईप कर या लिखकर उसकी फोटो अगले माह की 30 तारिख तक ई-मेल आईडी vsnehsamaj@rediffmail.com या ह्वाट्सएप नंबर 9335155949 पर भेज सकते हैं. साथ में अपनी फोटो, नाम एवं पता भेजना न भूलें. सर्वोत्तम तीन विचारों को अगले अंक में प्रकाशित किया जाएगा. विषय में आज का मुद्दा अवश्य लिखे. लगातार तीन मुद्दो में चयनित होने पर सम्मान पत्र भी दिया जाएगा. इसमें कोई उम्र का बंधन नहीं है. इस माह का मुद्दा

ईवीएम या वायलेट से मतदान होना चाहिए

इन दिनों मै प्यार में हूँ

इन दिनों मै तुम्हारे प्यार में हूँ...
ऐसा नहीं कि मैंने तुम्हें पहले से नहीं जाना था....
तुम मेरे लिये अजनबी भी नहीं थे..
बरसों तुम्हारे सानिंध्य में गुजारे...
पर तुम्हारी कद्र कभी नहीं की।
ठीक है...!
तुम थोड़े अटपटे लगते हो...
सूने भी...
षायद थोड़े बेढब भी हो.
छोटे भी हो...
पर कोई बात नहीं।
कभी-कभी गंदे भी रहते हो,
पर फिर भी मेरे अपने हो।
पता है! तुम्हे पाने के लिए....
तुम्हे सजाने संवारने के लिए....
कितनी दौड़.. दौड़ ही दौड़,
कितनी थकान...थकान ही थकान..
सुकून का एक पल तुम्हारी छाँह में नहीं बीता,
जबकि माँ के आँचल सा सकून
तुम्हारे साथ ही तो पाया था..।
पर तब षायद समझ नहीं थी...
क्योंकि समझदारी ज्यादा थी...।
लेकिन अब कृबाहरी दौड़ धूप बंद है.
आपा-धापी भी बंद है,
तो मैंने सीख लिया है तुम्हारे साथ रहना
पता चला कि कितना सकून है तुम्हारे अंदर.
तुम्हारे साथ में....
मैंने जान लिया है....
हाँ, मैंने जान लिया है
मेरे प्यारे मकान, कि तुम मेरे घर हो.
रैन बसेरा नहीं।
और सारी दुनिया सुन ले
कि मुझे अपने घर से मोहब्बत हो गई है।

-ज्योति जैन
1432/24, नंदानगर
इन्दौर, म.प्र.,-452011
मो. 9300318182

बोझ नहीं, मेरा भाई है

एक वयोवृद्ध साधु
डोरी, कमण्डल, आसनी
व अपने उपयोग की
अन्य चीजों का गट्ठर
अपनी पीठ पर लिए,
पहाड़ी पर चढ़ रहा था।
हाँफते हुए कदम दर कदम
आगे बढ़ रहा था।
उसके पीछे दस-बारह साल की एक लड़की
पीठ पर अपने नन्हें भाई को लिए
तेजी से चली आ रही थी।
उसका चेहरा खिला था,
वह खुशी में कोई गीत गा रही थी।
जब वह साधु को पीछे छोड़ते हुए
आगे बढ़ी तो साधु ने उसे रोका
और कहा-
बेटी! अपनी पीठ पर इतना बड़ा बोझ लेकर
थक गयी होगी, थोड़ा आराम कर लो,
क्योंकि आगे लम्बी चढ़ाई है।
साधु की समझ पर लड़की हँस दी
फिर विनम्रतापूर्वक बोली-
बाबाजी माफ कीजिए
बोझ आपकी पीठ पर है।
मेरी पीठ पर बोझ नहीं,
मेरा भाई है।

-बलवन्त, सोनभद्र, उ.प्र.

इन्तजार

बीती रात,
झकझोर दिया इक ख्याल ने
उठ बैठी
अंधेरी काली रात में
चहुँ ओर सिर्फ अन्धकार,
बुझ गये सारे दीये,
अरे, कोई टिमटिमा भी नहीं रहा,
ये बेबुनियाद लम्हें
ये सरकती सी जिन्दगी
पूछती सिर्फ इक सवाल
अब किसका इन्तजार
सलाम होता कुर्सी, जवानी व
पैसे को,
विदाई ले चुके यह सब
रह गई सिमटी सी देह,
खुश्क आँखें, कंपकंपाते हाथ,
टपकती छतें व सिलवटों
से भरे बिस्तर,
नाहक जीने की चाह,
ख्याल जीत गया,
पूछ ही बैठा दोबारा,
बता अब किसका इन्तजार।

-शबनम शर्मा, सिरमौर, हि.प्र.

अभिमान को आने मत दो, और स्वाभिमान को जाने मत दो, क्योंकि अभिमान आपको उठने नहीं देगा, और स्वाभिमान आपको गिरने नहीं देगा.

युक्ति

-ओम उपाध्याय
टी.टी. नगर, भोपाल, म.प्र.

झापड़ी तीन चार सौ की बस्ती वाला छोटा सा गाँव. गाँव में खेतिहर किसानों के साथ बढ़ई, लुहार, सुनार, पंडित, पुजारी, कहार, नाई, धोबी, मोची आदि के इक्के, दुक्के, कच्चे, पक्के घर और मजदूरों की झोपड़ियाँ थी. गाँव का मुख्य धधा खेती किसानी व पशुपालन था. झापड़ी छोटा सा गाँव सब एक दूसरे से परिचित एक दूसरे के सुख- दुःख में काम ओ वाले. यूँकि गाँव में खेतिहर किसानों के आबादी अधिक होने तथा गाँव का मुख्य धँधा खेती किसानी होने के कारण अन्य सब जैसे बढ़ई, लुहार खेती के कार्यो में उपयोग लाने वाले औजारों का निर्माण करते टूटे हुए उपकरणों की मरम्मत करते तथा शेष जैसे सुनार आभूषण बनाते, गहनों की मरम्मत करते, कुम्हार ईटें, मटके वगैरह बनाते, पंडित, पुजारी, कहार, मोची आदि सब अपने अपने धँधों से जीवन यापन करते थे. गाँव में जो खेतिहर मजदूर थे वे संपन्न किसानों के खेत-खलिहानों में रोजनदारी, माहवारी व वार्षिक मजदूरी पर काम करते. मजदूरों के बच्चे उन्हीं संपन्न किसानों के पशु गाय, बैल, भैंस, बकरियाँ चराते.

झापड़ी गाँव का जीवन बड़ा ही सीधा सादा था. गाँव में एक प्राथमिक स्कूल था, स्कूल में पाँचवीं कक्षा तक पढ़ाई होती थी. पाँचवीं कक्षा के पश्चात आगे की पढ़ाई के लिए गाँव से दो किलोमीटर दूर धरगाँव कस्बा था जहाँ ग्यारहवीं कक्षा तक पढ़ाई की सुविधा थी. पाँवीं कक्षा के बाद की पढ़ाई गाँव के सम्पन्न किसानों के इक्का दुक्का पुत्र पुत्रियाँ ही जारी रखते शेष तो अपने पैतृक व्यवसायों में जुट जाते. झापड़ी गाँव में वैसे तो सब कुछ था टी.वी. टेलीफोन, वाहन आदि-आदि बस केवल सड़क नहीं थी. धरगाँव तक के दो कि.मी. रास्ते को पैदल, बैलगाड़ी या दुपहिए वाहन से तय करना पड़ता था.

धरगाँव बड़ा कस्बा था. वहाँ हायर सेकेण्डरी स्कूल, सरकारी अस्पताल ग्राम पंचायत वगैरह-वगैरह सब कुछ था. धरगाँव में पक्की सड़क थी जो दोनों ओर तहसील मुख्यालयों क्रमशः महेश्वर-बड़वाह को जोड़ती थी. धरगाँव में प्रति गुरूवार को एक बड़ा हाट बाजार लगता था जहाँ झापड़ी के अलावा आस-पास के कई गाँवों के किसान, ग्रामीण जन, छोटे व्यापारी व अन्य खरीदी बिक्री के लिए विभिन्न वस्तुएँ लेकर आते तथा अपनी (साप्ताहिक) आवश्यकताओं की चीजें खरीद कर ले जाते.

धरगाँव में हाट बाजार के दिन गुरूवार को बहुत चहल पहल रहती और ढेरों सामग्री की खरीदी बिक्री होती.

झापड़ी गाँव में कई सम्पन्न किसान थे किंतु गाँव के पटेल मोतीलाल सर्वाधिक संपन्न थे. उनके पास जोतने के लिए सर्वाधिक जमीन थी जिले वे सालाना मेहनताना पर स्थायी मजदूरों से खेती बाड़ी का कार्य संपन्न करवाते थे. पटेल मोतीलाल के खेतों में काम करने वाले अस्थायी मजदूरों में एक स्थायी मजदूर मांगीलाल भी था. माँगीलाल मेहनती ईमानदार व विश्वास पात्र मजदूर था यही कारण था कि वर्षो से वह पटेल के यहाँ कार्य कर रहा था पटेल मोतीलाल उसे बहुत मानते थे.

माँगीलाल की झोपड़ी गाँव के अंतिम छोर पर थी उसके पड़ोस में नानुराम का छप्पर था. नानुराम चलने फिरने में असमर्थ था माँगीलाल का एक पुत्र था कालुराम जिसे गाँव वाले कल्लु कहकर बुलाते नानुराम के दो बेटे व एक बेटी थी. नानुराम के बड़े बेटे का नाम लालुराम था जिसे सब लल्लु लल्लु कहकर पुकारते थे. 'कल्लु' और

कल्लु लल्लु ने मंगतु चाचा से राम-राम की फिर अपने आने की वजह बताई. दोनों ने कहा चाचा हमें कोई भी काम दिलवा दो, बस क्रिकेट के गेंद खरीदने के पैसे चाहिए. मंगतु चाचा ने कुछ सोचा फिर उन्हे याद आया कि आज का हाट त्याहारों के पूर्व का हाट है इसलिए खूब रौनक रहेगी और जूते, चप्पल, सुधारने के अलावा पॉलिश करने का काम भी निकलेगा जिसे वा अकेला नहीं संभाल पायेगा.

'लल्लु' हम उम्र थे और दोनों में दाँत काटी दोस्ती थी.

'कल्लु' 'लल्लु' ने केवल दूसरी कक्षा तक पढ़ाई की थी और अब वे गाँव के सारे मवेशियों को झोपड़ी गाँव के पास कुछ दूरी पर स्थित चारागाह में चराने का काम करते थे 'कल्लु' गाय बैल भैस बकरियों को मैदान में चरने को छोड़ देते और दोनों कभी बतियाते, कभी ग्रामीण खेल खेलते कभी-कभी उनका साथ देने गाँव के अन्य बच्चे भी आ जाते. शाम को सूर्यास्त के समय दोनों सारे जानवरों को एकत्रित करते और हाँकते हुए गाँव ले आते जानवर अपने-अपने घरों में चले जाते और कल्लु, लल्लु अपने घर.

जब से टी.वी. गाँवों में पहुंचा है अी.वी. ने क्रिकेट को भी गाँवों में पंहुचा दिया. अब गाँवों में भी क्रिकेट के शैकीन हो गए. इधर झापड़ी गाँव के पटेल मोतीलाल को भी टी.वी. पर क्रिकेट मैच देखने का शौक लग गया था. वे अकसर टी.वी. पर मैच देखतें कभी-कभी कल्लु लल्लु भी गाँव के कुछ लड़कों के साथ कल्लु लल्लु को भी क्रिकेट का चस्का लग गया. गाँव के अन्य लड़कों की भाँति वे भी क्रिकेट खेलना चाहते थे किंतु उनके पास 'गेंद' व बल्ला नहीं था जिससे वे मन मसोसकर रह जाते थे.

दिन बीतते रहे एक दिन मवेशी चराते चराते कल्लु ने लल्लु से कहा- यार, गाँव के खेल तो हम रोज ही खेलते है. ये खेल खेल खेलकर बोर हो गए कभी क्रिकेट भी तो खेलकर देखें.

किंतु हमारे पास गेंद है न बल्ला, फिर कैसे क्रिकेट खेले? लल्लु ने पूछा!

कल्लु ने कहा-लल्लु! बल्ले की जुगत के लिए मुझे एक उपाय सूझा है. क्या? लल्लु ने कहा

लल्लु, क्यों न हम किसी सूखे पेड़ की शाख काट लें और बढ़ई चाचा ने बल्ला बनवा लें-कल्लु ने उपाय सुझाया.

फिर गेंद का क्या करेंगे? गेंद कहाँ से लाएँगे. लल्लु ने पूछा

उसका फिर सोचेंगे, पहले बल्ला तो बनवाएँ- कल्लु ने कहा.

लल्लु को कल्लु की तरकीब बहुत पसंद आई और फिर उन्होंने चार छह दिनों की मेहनत से एक सूखे पेड़ की सूखी डाली तोड़ी जिसे बढ़ई चाचा ने बल्ले का आकार दे दिया. कल्लु लल्लु के पास बल्ला तो हो गया अब केवल केंद का इंतजाम करना था. गेंद के लिए कल्लु लल्लु ने पहले तो फटे कपड़ों, बेकार सामान व अन्य चीजों का इस्तेमाल किया और गेंद बन ली गई किंतु वह क्रिकेट के खेल के लिए उपयुक्त नहीं थी. अंत में दोनों ने तय किया कि इस बार के धरगांव के साप्ताहिक हाट बाजार में चलेंगे तथा वहाँ मेहनत, मजदूरी, हम्माली या अन्य कोई काम करेंगे तथा उससे जो पैसे मिलेंगे उससे गेंद खरीद लेंगे. साप्ताहिक हाट गुरूवार के एक दिन पूर्व बुधवार को कल्लु-लल्लु ने मवेशियों को चाराने का इंतजाम किया. उनके मालिकों को अपने हाट बाजार जाने का प्रयोजन बताया, घर वालों से अनुमति ली. इस तरह सब प्रबंध कर अमले दिन दोनों सुबह ही हाट बाजार के लिए धरगांव की ओर चल पड़े.

लगभग आधे घंटे के पश्चात कल्लु-लल्लु धरगाँव के हाट बाजार में थे. हाट बाजार में अभी दुकानें लगना ही शुरू हुई थीं कल्लु और लल्लु घूमते वहाँ पहुंचे जहाँ झापड़ी गाँव के ही मंगतु चाचा मोची की दुकान लगाते थे. कल्लु लल्लु ने मंगतु चाचा से राम-राम की फिर अपने आने की वजह बताई. दोनों ने कहा चाचा हमें कोई भी काम दिलवा दो मजदूरी, हम्माली, चौकीदारी कुछ भी हमें बस गेंद खरीदने के पैसे चाहिए. मंगतु चाचा ने पहले कुछ सोचा फिर उन्हे याद आया कि आज का हाट त्यौहारों के हाट के पूर्व का हाट है इसलिए बाजार में खरीदी बिक्री करने वालों की भारी भीड़ रहेगी, खूब रौनक रहेगी और जूते, चप्पल, सुध ाारने के काम के अलावा जूते चप्पलों पर पॉलिश करने का काम भी निकलेगा जिसे वा अकेला नहीं संभाल पायेगा. उसे एक दो सहायकों की जरूरत पड़ेगी सो उसने कल्लु लल्लु से कहा- बेटे, कल्लु, लल्लु एक काम तो मैं ही तुम्हें दे सकता हूँ यदि करना चाहो तो.

नेकी और पूछ-पूछ, कल्लु लल्लु बोले- चाचा आप तो काम बताओ!

देखों बेटे कल्लु लल्लु यह जो आज का हाट बाजार है यह त्यौहारों के पहले का हाट है इसलिए आज हाट बाजार में भारी भीड़ रहेगी. आज बाजार में जूते चप्पलों की मरम्मत व अन्य कार्यो के अलावा जूते चप्पलों पर पॉलिश करने का काम भी बहुत निकलेगा. मेरे पास तो कोई और काम करने वाला है नहीं फिर मैं अकेला कितना काम करूँगा यदि तुम दोनों चाहो तो जूते चप्पलों पर पॉलिश करने का काम तुम्हे दे सकता हूँ. यह काम भी हल्का फुल्का है जिसे तुम आसानी से कर सकोगे रही बात ब्रुश और पॉलिश की तो वह मैं तुम्हें दे दूँगा बस मुझे पॉलिस की डिब्बियों के पैसे दे देना. बोलों, मजूर है? मंगतु चाचा बोले.

हाँ चाचा, हमें मँजूर है-दोनों बोले.

हाँ चाचा, हमें मँजूर है-दोनों बोले तो फिर ये लो ब्रुश और पॉलिश की

डिब्बियाँ और शुरू हो जाओ. मंगतु चाचा ने कहा अभी बाजार में ग्राहकों की भीड़ बढ़ने वाली हैं और तब तुम्हें दम मारने की फुरसत की नहीं मिलेगी.

और सचमुच वही हुआ जो मंगतु चाचा ने कहा. कल्लु लल्लु शाम तक जूते चप्पलों पर पॉलिश का काम करते रहे. शाम को जब दोनों ने जूते चप्पलों पर की गई पॉलिश की आय को गिना तो दोनों की बाछें खिल गई. मंगतु चाचा को पॉलिश की डिब्बियों के रूपये देने के पश्चात उनके पास इतने पैसे बचे कि उनसे उन्होंने न सिर्फ गेंद खरीदी मिठाई नमकीन खाया वरन कुछ सामान, नमकीन, फल आदि भी घर वालों के लिए खरीदे. शाम को जब दोनों गाँव लौट रहे थे तो बहुत प्रसन्न थे.

झापड़ी लौटने के पश्चात दूसरे दिन जब कल्लु लल्लु जानवरों को चराने अपने नियत मैदान पर गए तो साथ में 'बल्ला' व 'गेंद' भी ले गए. वहाँ मैदान में कल्लु लल्लु ने जानवरों को तो घास चराने को छोड़ा और दोनों क्रिकेट खेलने मे जुट गए. चूँकि क्रिकेट खेलने वाले वे दो ही थे इसलिये बारी-बारी से बल्लेबाजी और गेंदबाजी करते रहे. कल्लु लल्लु ने इसके पहले केवल दूरदर्शन पर क्रिकेट मैच देखे थे कभी खेला नहीं था उन्हें पहली बार क्रिकेट खेलने में बहुत मजा आया. आज उनकी क्रिकेट खेलने की चाह पूरी हो गई थी.

एक दो दिन के पश्चात जब गांव के अन्य लड़कों को पता चला कि कल्लु लल्ल के पास क्रिकेट का सारा सामान है तो वे भी उनके साथ क्रिकेट खेलने आने लगे. सच है जहां इच्छा वहाँ रास्ता.

अखिल विश्व के प्रति उत्कट अनुराग निहित है गुरु नानक की वाणी में : प्रो.शर्मा

राष्ट्रीय शिक्षक संचेतना द्वारा गुरु नानक देव जी : सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में पर केंद्रित अंतरराष्ट्रीय वेब संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें देश-दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों के विद्वान वक्ताओं और साहित्यकारों ने भाग लिया. कार्यक्रम के प्रमुख अतिथि वरिष्ठ प्रवासी साहित्यकार श्री सुरेशचंद्र शुक्ल शरद आलोक, ओस्लो, नार्वे ने कहा कि गुरु नानक जी ने मानवीय जीवन से जुड़े अनेक व्यावहारिक सन्देश दिए हैं. उन्होंने गुरु नानक देव जी द्वारा दिए गए दस प्रमुख संदेशों का नार्वेजियन भाषा में अनुवाद प्रस्तुत किया.

मुख्य वक्ता विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन के कुलानुशासक प्रो शैलेंद्र कुमार शर्मा ने कहा कि विश्व संस्कृति को गुरु नानक देव जी की देन अद्वितीय है. उनका सामाजिक और सांस्कृतिक चिंतन गहरी आध्यात्मिक दृष्टि पर टिका है. उनकी वाणी के केंद्र में परमात्मा की व्यापकता और अखिल विश्व के प्रति उत्कट अनुराग अंतर्निहित है. उन्होंने न केवल व्यापक लोक समुदाय को प्रभावित किया, वरन उसे नए ढंग से जीने और दुनिया को देखने का नजरिया दिया. उनका मुख्य सन्देश है कि परमात्मा एक है, उसी ने हम सबको बनाया है. कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे शिक्षाविद् डा. शहाबुद्दीन नियाज मोहम्मद शेख पुणे ने कहा कि गुरु नानक जी के विचार अनेक संदर्भों में आज भी प्रासंगिक हैं. उन्होंने सभी पंथों और धर्मों के लिए महत्वपूर्ण उपदेश दिए हैं. वे योगी, समाज सुधारक, उपदेशक और देशभक्त थे. उनकी दृष्टि में मानव मात्र की सेवा सबसे बड़ी ईश्वर भक्ति है.

डा. प्रवीण बाला ने कहा-'गुरु नानक जी ने संपूर्ण समाज को बाह्य आडंबर और भेदभाव से मुक्त किया. उन्होंने बाल्यकाल से ही अपनी प्रतिभा का लोहा मनवा दिया था. उनके संदेश तीन आधारों पर टिके हैं कीरत करो, नाम जपो और लंगर छको.

डा. शिवा लोहारिया, श्री राकेश छोकर, डा हरेराम वाजपेयी ने भी विचार व्यक्त किए. संस्था का प्रतिवेदन महासचिव डा. प्रभु चौधरी, संगीतमय गुरुवाणी अलका वर्मा, स्वागत भाषण डा. मुक्ता कौशिक, रायपुर तथा अतिथि परिचय डा. राजेंद्र साहिल, पटियाला ने दिया. इस संगोष्ठी में डा. सुवर्णा यादव, डा. आशीष नायक, डा. पूर्णिमा कौशिक, डा. मधुकर देशमुख, डा. रुपिंदर शर्मा, डा. रिधिमा जोशी, डा. राजेंद्र कुमार सेन आदि ने भाग लिया.

लघु कथाएं

वो समझदार बहू

शाम को गरमी थोड़ी थमी तो मैं पड़ोस में जाकर निशा के पास बैठ गई. उसकी सासू माँ कई दिनों से बीमार है. सोच खबर भी ले आऊँ और बैठ भी आऊँ. मेरे बैठे-बैठे उसकी तीनों देवरानियाँ भी आ गईं. ''अम्मा जी, कैसी हैं?'' शिष्टाचारवश पूछ कर इतमिनान से चाय-पानी पीने लगी. फिर एक-एक करके अम्माजी की बातें होने लगी. सिर्फ शिकायतें, ''जब मैं आई तो अम्माजी ने ऐसा कहा, वैसा कहा, ये किया, वो किया.'' आध घंटे बाद सब यह कहकर चली गईं कि उन्होंने शाम का खाना बनाना है. बच्चे इन्तजार कर रहे हैं. कोई भी अम्माजी के कमरे तक न गया. उनके जाने के बाद मैं निशा से पूछ बैठी, ''निशा अम्माजी, आज एक साल से बीमार हैं और तेरे ही पास हैं. तेरे मन में नहीं आता कि कोई और भी रखे या इनका काम करे, माँ तो सबकी है.'' उसका उत्तर सुनकर मैं तो जड़ सी हो गई. वह बोली, ''बहनजी, ये सात बच्चों की माँ है. इसने रात-रात भर गीला रहकर सबको पाला. ये जो आप देख रही हैं न मेरा घर, पति, बेटा, शानो-शौकत सब इसकी है. अपनी-अपनी समझ है. मैं तो सोचती हूँ इन्हें क्या-क्या खिला-पिला दूँ, कितना सुख दूँ, मेरा बेटा, इनका पोता सुबह-शाम इनके पास बैठता है, ये मुस्कराती है, इन्हें ठंडा पिलाता है तो दुआएँ देती हैं. जब मैं इनको नहलाती, खिलाती-पिलाती हूँ, तो जो संतुष्टि मेरे पति को मिलती है, देखकर मैं धन्य हो जाती हूँ और वह बड़े ही उत्साह से बोली, एक बात और है ये जहाँ भी रहेंगी, घर में खुशहाली ही रहेगी, ये तो मेरा तीसरा बच्चा बन चुकी हैं.'' और ये कहकर वो रो पड़ी. मैं इस जमाने में उसकी यह समझदारी देखकर हैरान थी और मन ही मन उसे सराह रही थी.

समझौता

अध्यापिका हूँ, हर रोज अलग-अलग बच्चों से वासता पड़ता है. कक्षा में जाना, पढ़ाना, बच्चों से बतियाना, उनकी नन्हीं-नन्हीं समस्याओं को सुलझाना मेरा शौक है. इस कक्षा में जाते मुझे करीब 6 माह हो गये थे. दो जुड़वाँ भाई-बहन को पढ़ाती हूँ. जहाँ बहन अति शान्त, कुशल व स्नेही वहीं भाई शरारती, बातूनी व कभी-कभी लापरवाह.उससे मेरी उम्मीदें कुछ ज्यादा ही बढ़ने लगी. हमेशा उसमें सुधार लाने की इच्छा ने मुझे उसके करीब ला दिया. परन्तु बात न मानना तो जैसे उसका संकल्प सा हो. वह अपनी मनमानी करता परन्तु पलटकर न तो कभी जवाब देता न ही सही काम करता. परीक्षा हुई. परिणाम भी मेरी आशा से कम था. उसकी कुशाग्र बुद्धि से ज्यादा उम्मीद की जा सकती थी. मैंने उसके माता-पिता को संदेश भिजवा कर मिलने का आग्रह किया. निश्चित समय पर उसके माता-पिता अपने बच्चों के साथ मेरे पास आए. पिता ने पूछा, 'मैम, आपने बुलाया था, क्या कोई समस्या है?' मैंने बच्चों की ओर देखा, दोनों के चेहरे पीले हो गये थे. मैंने कहा, 'इन्होंने क्या कहा?' पलटकर पिता ने कहा, 'ये क्या कहेंगे, रात को बताया कि कल रिजल्ट है और मैम ने आपको बुलाया है. मैडम मैं आपको एक बात बताना चाहता हूँ इससे पहले कि आपकी सुनू. मैंने 7 माह पहले शादी की है. ये बेटी मेरी पहली पत्नि की है, जो पिछले बरस गुजर गई और लड़का इनका है (अपनी पत्नि की ओर इशारा करते हुए) इसका पापा भी पिछले बरस गुजर गया. मेरी बहन ने यह रिश्ता सुझाया और हमने ब्याह कर लिया. जाने वाले तो चले गये, अब आगे की भी तो सोचनी है. हाँ, मैडम कहिए आप क्या बता रही थीं?'' मैं उनकी बातें सुनकर स्तब्ध थी. मैंने दोनों बच्चों की ओर देखा जो अभी भी वैसे ही सहमे से खड़े थे. मैंने कहा, ''बस यूं ही बुलाया आपको, आपके बच्चे नए हैं इस स्कूल में. पूछना था इन्हें कैसा लगा?'' वह बोले, ''शुक्रिया!'' देख सकती थी अब मैं उन दोनों अधूरे बच्चों के मुँह पर लौटती रौनक.

-**शबनम शर्मा,** सिरमौर, हि.प्र.

आश्वस्ति

एक समारोह में हम दस-बारह लोग अलग से एक साथ बैठे थे. गपशप और हंसी-मज़ाक जारी था. बातचीत के दौरान जब मैंने बतलाया कि हम अगले महीने एलटीसी पर जा रहे हैं तो सबसे पहले विवेक ने अत्यंत उत्सुकता दिखलाते हुए पूछा, '' एलटीसी पर कहां जा रहे हो रवि?'' मैंने बतलाया कि पुरी जाने का कार्यक्रम है. ''कहां रुकोगे?'' विवेक का अगला प्रश्न था. मैंने कहा, ''किसी होटल में रुकेंगे और कहां?'' विवेक ने कहा कि होटल तो बहुत मंहगा पड़ेगा. गुस्सा तो बहुत आया विवेक की बात पर. क्या वही होटलों में ठहर सकता है? हम नहीं ठहर

सकते? मैंने ज़रा तल्ख़ी से कहा, "अब मंहगा-सस्ता जो भी पड़ेगा जाना तो है ही. वैसे कोई जबरदस्ती थोड़े ही भेज रहा है. हम अपनी मर्ज़ी से जा रहे हैं अपने मज़े के लिए. पैसे तो लगेंगे ही. पहले भी होटलों में ही रुकते रहे हैं. एलटीसी पर जाने वाली सारी दुनिया होटलों में ही रुकती है."

कुछ सैकेंड चुप रहने के बाद विवेक ने कहा, "अगर रहने की व्यवस्था मुफ़्त में करवा दूं तो?" मैंने तनिक अविश्वास से कहा, "ये तो बड़ी अच्छी बात है पर ये कैसे संभव है?" विवेक ने कहा कि हमारे ऑफिस का गेस्ट हाउस है वहीं ठहर जाना. मैंने थोड़ा गुस्सा करते हुए कहा, "यार विवेक तू बेकार की बातें बहुत करता है. तूने कह दिया और हम ठहर गए. मैं सरकारी नौकर तू सरकारी नौकर. दोनों के डिपार्टमेंट अलग-अलग. तू सेंट्रल गवर्नमेंट में और मैं स्टेट गवर्नमेंट में. हम कैसे ठहर सकते हैं तुम्हारे डिपार्टमेंट के गेस्ट हाउस में? वैसे भी अफसरों तक को तो मिलते नहीं गेस्ट हाउस तू हमें दिलवाएगा? विवेक ने बड़े आत्मविश्वास से कहा, "तुझे आम खाने से मतलब है कि पेड़ गिनने से? ये तो मैं देखूंगा कि कैसे ठहर सकते हैं."

मैंने कहा कि यार विवेक ज़्यादा मत लपेट बहुत हो गया. मन ही मन कहा कि आया बड़ा गेस्ट हाउस दिलवाने वाला. कोई कलेक्टर नहीं लगा हुआ है तू. जानता हूं एक बाबू की औकात क्या होती है. तभी विवेक के चाचाजी ने हस्तक्षेप किया और मुझे घूरते हुए कहा, "रवि तू किसी की बात पर विश्वास क्यों नहीं करता? जब रवि कह रहा है कि वो करवा देगा तो तू क्यों बहस कर रहा है? विवेक के ऑफिस के गेस्ट हाउस में नहीं जाना है तो अलग बात है." मैंने कहा, "अंकल गेस्ट हाउस में न ठहरने की कौन सी बात है पर दूसरे डिपार्ट. ." चाचाजी ने मुझे बीच में ही रोककर कहा, "फिर वही बात." मैंने कहा, "चलो ठीक है मैं कुछ नहीं कहता. अलगे महीने की पंद्रह तारीख को जा रहे हैं. सत्रह को सुबह पहुंचेंगे. सत्रह से बीस तक रुकेंगे. चार दिन की बुकिंग करवा देना."

एक महीने तक हर तीसरे दिन फोन करके बुकिंग की स्थिति पूछता रहा. विवेक का एक ही जवाब होता कि हो जाएगा. गाड़ी में चढ़ने से पहले कंफर्म करवा दूंगा. चौदह तारीख को फोन किया तो बतलाया कि इन तारीखों में कोई रूम खाली ही नहीं है. सब भरे हैं. फिर ज़ोर देकर कहा कि पंद्रह दिन बाद पूरा गेस्ट हाउस खाली रहेगा. गाड़ी की पंद्रह दिन बाद की बुकिंग करवा ले. मैंने मना कर दिया और कहा कि हम कल ही जा रहे हैं. बुकिंग कैंसिल करवाने का प्रश्न ही नहीं उठता. वहां होटल कम हैं क्या? विवेक ने ज़ोर देकर कहा कि इस बार कोई अड़चन नहीं आएगी. भाई मेरा विश्वास कर. एक तरह से रिरियाने लगा. चलो देख लेते हैं विश्वास करके. मैंने वर्तमान बुकिंग कैंसिल करवा के पंद्रह दिन बाद की बुकिंग करवा ली. प्रस्थान से दो दिन पहले फोन किया तो विवेक ने कहा, "सॉरी यार! आजकल दूसरे डिपार्टमेंट वालों के लिए बुकिंग बिल्कुल बंद कर रखी है."

लूट-खसोट

टूटे-फूटे पीतल-ताँबे और एल्युमीनियम के बदले गोला-मिस्री बेचने वाले ने गली में प्रवेश किया और ज़ोर से आवाज़ लगाई, "टूटे-फूटे पीतल-ताँबे से गोलागिरी बदलवा लो." कुछ ही देर में टूटे-फूटे पीतल-ताँबे और एल्युमीनियम के बदले गोला-मिस्री बदलवाने वालों की भीड़ सी लग गई. कुछ ख़रीददार थे तो कुछ तमाशबीन भी थे. कोई पीतल का टूटा चम्मच हाथ में लिए था तो कोई काँसे की फूटी कटोरी. किसी के हाथ में ताँबे का कोई टुकड़ा था तो किसी के हाथ में एल्युमीनियम का पिचका हुआ कोई बेपहचान सा बर्तन. थोड़ी ही देर में जब भीड़ छँट गई तो एक बारह-तेरह साल का लड़का सावधानी से इधर-उधर देखता हुआ पीतल का एक बड़ा सा लोटा लिए हुए आया और गोलागिरी बेचने वाले से कहा, "इसका गोला-मिस्री दे दे." लोटा पुराना या टूटा हुआ नहीं अपितु नया सा और मज़बूत लग रहा था.

स्थिति स्पष्ट थी फिर भी गोलागिरी बेचने वाले ने पूछा, "लोटा कहीं से चुराकर तो नहीं लाया है?"

"नहीं, अपने घर से लाया हूँ. ये कोई काम नहीं आता इसलिए माँ ने कहा कि इसका गोला-मिस्री ले ले.", लड़के ने दृढ़तापूर्वक कहा. गोलागिरी बेचने वाले ने नज़रें इधर- उधर घुमाई और पूरी तरह से आश्वस्त हो जाने के बाद कि कोई नहीं देख रहा है सावधानी से लड़के के हाथ से लोटा लेकर अपने अब तक आए हुए स्क्रैप के नीचे रख लिया और अंदाज़े से लड़के को थोड़ी सी गोलागिरी और मिस्री पकड़ा दी. जब लड़के ने कहा कि बस इतनी सी ही तो उसने और थोड़ी सी गोलागिरी और मिस्री लड़के को थमा दी.

लड़का गोलागिरी और मिस्री लेकर शीघ्रता से जिधर से आया था उससे दूसरी तरफ निकल गया.

लोटे का सौदा निपटाकर गोलागिरी बेचने वाला जैसे ही आगे बढ़ा मैंने पीछे से आवाज़ लगाई, ''अरे ओ गोलागिरी बेचने वाले! रुक ज़रा.'' गोलागिरी बेचने वाला रुक गया. मैंने उसके पास पहुँचकर उसे डाँटते हुए कहा, ''वो लोटा निकाल.'' उसने अनजान बनने की कोशिश करते हुए पूछा, ''कौन सा लोटा?'' मैंने कहा, ''वही लोटा जो अभी-अभी हमारा लड़का घर से चोरी से उठाके ला के तुझे दे गया है. तुझे शर्म नहीं आती बच्चों को चोरी करना सिखाते और उनसे चोरी का माल ख़रीदते? और बीस रुपए के नए लोटे के बदले दो रुपल्ली का गोला-मिस्री पकड़ा दिया!'' मैंने एक-एक रुपए के दो सिक्के उसकी छाबड़ी पर फेंकते हुए कहा, ''निकाल जल्दी से लोटा नहीं तो अभी बुलाता हूँ आसपास के लोगों को. तेरी वो ठुकाई करेंगे भूल जाएगा बच्चों से चोरी करवाना.'' गोलागिरी बेचने वाले ने लोटा निकालकर फ़ौरन मेरे हवाले कर दिया और उसने वहाँ से चुपचाप खिसक जाने में ही ग़नीमत समझी.

यह घटना मेरे साथ नहीं बल्कि नंदकिशोर के साथ घटित हुई थी. इस घटना को सुनाने के बाद नंदकिशोर ने कहा, ''वो तो मैं अपने घर की खिड़की के पास खड़ा हुआ सब देख रहा था कि तभी पड़ोस में रहने वाला एक लड़का लोटा लेकर आया और उसके बदले में जो भी गोला-मिस्री मिला लेकर चला गया. यदि मैं वहाँ नहीं होता तो बीस रुपए का लोटा दो रुपए के गोला-मिस्री में. बीस रुपए के लोटे के बदले दो रुपल्ली का गोला-मिस्री. हद हो गई।.दुनिया में बेईमानी की कोई सीमा नहीं रही. जहाँ देखो वहीं लूट-खसोट मची है.'' एक सज्जन ने नंदकिशोर से पूछा, ''जब पड़ोसी को लोटा वापस किया होगा तो वो तो बड़ा ख़ुश हुआ होगा? उसने अपने लड़के की भी ठुकाई की होगी?''

''लोटा पड़ौसी को क्यों देता? लोटे के बदले तो उसका लड़का गोला-मिस्री खा चुका था. मैंने तो अपनी अक़्ल लगाकर जेब से पैसे ख़र्च करके लोटा वापस लिया था गोलागिरी बेचनेवाले से'', नंदकिशोर ने अपनी अक़्ल की डींग मारते हुए बुलंद आवाज़ में कहा.

-**सीताराम गुप्ता,** पीतम पुरा, दिल्ली

श्रद्धाजंलि

प्रसिद्ध समाजसेवी रामलुभया का हृदय गति रूकने से देहान्त हो गया. उन्होंने समाज में व्याप्त कुरीतियों के विरूद्ध एक अथक यौद्धा की भांति लड़ाई लड़ी और गरीब, दलीत, पिछड़ो एवं महिलाओं के उत्थान के लिए बहुत कार्य किया था. उनके निधन पर समाज के सभी लोगों को भारी दुःख हुआ था.

क्षेत्र के सामाजिक संगठनों ने ऐसे महाने समाजसेवी को श्रद्धाजंलि देने के लिए एक शोकसभा का आयोजन किया था. शोकसभा में उपस्थित लोग दो मिनट के मौन धारण हेतु खड़े हो गये थे.

अभी उन्हें खड़े हुए पन्द्रह सेकन्ड भी नहीं हुए थे कि मंत्री जी का काफिला वहाँ आ पहुँचा. शोकसभा में एक स्वर गूंजा-''मंत्री जी आये है''.

बस इतना सुनते ही सभी शोकातुर लोग श्रद्धाजंलि को भूलकर मंत्री जी की अगवानी के लिए दरवाजे की तरफ लपक पड़े थे.

-**रोहित यादव,** सैदपुर, मंडी अटेली, हरियाणा

रिश्तों की जड़ें

प्रसून और सभ्या की शादी को चार साल हो चुके हैं लेकिन बार-बार आमंत्रित करने के बावजूद वे नमिता के यहाँ खाने पर नहीं जा पाए. प्रसून और सभ्या दोनों नौकरी करते हैं और दोनों की नौकरियाँ ही ऐसी हैं कि अत्यंत व्यस्त रहते हैं. ऐसा नहीं है कि वे नमिता के यहाँ जाना नहीं चाहते पर संयोग ही कुछ ऐसा होता है कि जब भी नमिता के यहाँ जाने का कार्यक्रम बनता है कुछ न कुछ व्यवधान उत्पन्न हो जाता है. पिछले दिनों जब नमिता एक शादी में सुरेखा से मिली तो शिकायत करते हुए उनसे कहा, 'सुरेखा दीदी हमसे क्या नाराज़गी है? प्रसून सभ्या को लेकर सारे दोस्तों और रिश्तेदारों के यहाँ हो आया है पर चार सालों में कुछ घंटों के लिए हमारे यहाँ आने की फ़ुर्सत नहीं मिली उसे.''

सुरेखा ने प्यार से कहा, ''नमिता तेरी शिकायत बिल्कुल वाजिब है. नाराज़ मत हो मैं इसी हफ़्ते प्रोग्राम बनवाती हूँ.घर आते ही सुरेखा ने प्रसून और सभ्या से कहा, ''मौसी तुमसे बहुत नाराज़ है. इस हफ़्ते हर हाल में

मौसी के यहाँ हो आओ नहीं तो मैं उससे भी ज़्यादा नाराज़ हो जाऊँगी तुम दोनों से'' प्रसून और सभ्या दोनों ने आगामी रविवार को जाने का कार्यक्रम निश्चित कर लिया. सुरेखा को सचमुच गुस्सा आ रहा था. वो मन ही मन कह रही थी कि आजकल न जाने नई पीढ़ी को क्या हो गया है रिश्तों की गरिमा ही नहीं समझते. फिर खुद ही कहा, ''पर प्रसून सभ्या को लेकर हर रिश्तेदार के यहाँ हो आया है सिवाय नमिता के. ये मात्र एक संयोग भी तो हो सकता है. नहीं संयोग नहीं कुछ न कुछ गड़बड़ है.'' सुरेखा मन ही मन न जाने कहाँ-कहाँ भटकती रही पर कोई सिरा उसके हाथ ही नहीं लग रहा था. तभी अचानक बीस-इक्कीस साल पुराने एक घटनाक्रम पर उसका ध्यान केंद्रित हो गया.

सभी लोग एक शादी में जा रहे थे. रास्ता लंबा था. कई घंटे का सफर. सभी लोग एक बस से जा रहे थे. बस के अतिरिक्त एक कार भी साथ-साथ चल रही थी. कार काफी बड़ी और आरामदायक थी. कार में दूल्हे के अतिरिक्ति नमिता, उसका पति और बेटा चिंटू भी बैठे. इसके बावजूद कार में कुछ जगह बाकी थी. सुरेखा ने प्रसून को भी इन लोगों के साथ बिठा दिया. सफर पर रवाना होने के बीस-पच्चीस मिनट बाद अचानक कार बस के आगे कच्ची सड़क पर उतर कर रुकी और कार में सवार लोगों ने बस को भी रुकने का इशारा किया. बस के रुकते ही कार का दरवाज़ा खुला और उसमें से एक बच्चा नीचे उतरा. बच्चे के नीचे उतरते ही कार ने स्पीड पकड़ ली. संभवतः बस का ड्राइवर बच्चे को नहीं देख पाया अतः उसने भी बस चला दी. बस कार के पीछे चलने को हुई तभी किसी ने बस को रुकवाया और कहा, 'अरे एक बच्चा उतरा है कार से. देखो किसका बच्चा है?'

'अरे ये तो सनी है सुरेखा का बेटा,' कई स्वर एक साथ उभरे. बस का दरवाज़ा खोलकर सनी को अंदर किया गया. सनी एकदम घबराया हुआ लग रहा था. सुरेखा ने सनी को गोदी में लिया ओर उससे पूछा, 'क्या हुआ सनी? कार में से बस में क्यों आ गया और इतना घबराया हुआ क्यों है?'

'चिंटू रो रहा था और लातें मार रहा था. कह रहा था सनी भैया को साथ नहीं बिठाना. सनी भैया को अभी कार से नीचे उतारो.' सनी ने बतलाया.

'फिर?'

'फिर मौसाजी ने कहा कि क्यों छोटी सी बात के लिए बच्चे को रुलाती हो? सनी को उतार दो. वो बस से आ जाएगा तो कौन सा पहाड़ टूट पड़ेगा?' सनी ने ये सब बतलाते हुए सुरेखा से पूछा, ''पर मम्मी अगर बस नहीं रुकती तो मैं क्या करता?''

बौना कद

आफिस में अच्छी खासी चर्चा थी बड़े साहब से लेकर लिपिक और चपरासी तक चिंतित थे आफिस की अविवाहित ४५ वर्शीया महिला लेखपाल ने लोन लेकर अपना छोटा सा घर बनवाया था और उसी घर के गष्ह प्रवेष की, सत्यनारायण भगवान् की पूजा, वास्तु पूजा और फिर भोजन के लिए आमंत्रित किया था, चर्चा और चिंता इस बात की थी कि उन्हें क्या उपहार दिया जाए, व्यक्ति अलग अलग उपहार दे या सामूहिक एक ही उपहार दिया जाये पर दोपहर तक वहा जाने के पहले आम सहमति नहीं बन पायी, फिर बड़े साहब और उनके सहायक साहब ने बाजार से गुजरते हुए साझा करके एक दीवाल घड़ी खरीदी, घडी सुदर थी और सस्ती भी दोनों साहब खुष हुऐ पैसे बचे, उधर एक अन्य साहब व पूरा स्टाफ अलग वाहन में एक उपहार बाजार से खरीदकर खुष होते हुए गए कि पैसे भी बचे और रस्म अदायगी भी हो गयी. गंतव्य को पहुंचकर सबने सत्यनारायन प्रभु का प्रसाद लिया, लेखपाल ने उत्साह से स्वागत कर अपना घर दिखाया, घर छोटा किन्तु सुन्दर था, उसके बाद भोजन के लिए आमंत्रण हुआ, भोजन सुस्वादु व सुरुचि पूर्ण था भोजन करने के बाद सबने बधाई के साथ उपहार देने के पष्चात विदा लेना चाहा तो लेखपाल के भतीजे ने कहा आईये बुआ ऐसे थोड़े ही जाने देगी आप सब आये हमारा मान बढ़ाया, उनकी तरफ से रिटर्न गिफ्ट है, उन्होंने पूरे कार्यालय के सदस्यों को एक एक अलग उपहार जोर देकर हाथो में दिया, तोहफे काफी मंहगे और बड़े लग रहे थे, तोहफे लेते समय बड़े साहब, छोटे साहब और सारे स्टाफ के चेहरे पष्चाताप से बुझ गए थे, सज्जनता और संस्कार कम वेतन किन्तु बड़े दिल वाली लेखपाल महिला सबसे बहुत आगे हो गयी थी, छोटे कद की उस महिला ने पुरे अधिकारिओ के कद को बहुत बौना कर दिया था.

-संजीव ठाकुर,
चौबे कोलोनी रायपुर, छ.ग.

स्टार

-रजत कुमार,
भूड़, बरेली,उ०प्र०

दुनिया चमक-दमक-पद के पीछे दौड़ती. मगर इस झूठ तथा मायावी दुनिया की हकीकत दू:ख दर्द तनिक भी नहीं जानती. दुनिया रजत रेत का एक मरूस्थल बन गयी है. ये तो शीश महल बहुत बने मगर प्यासे को कोई एक घूँट पानी नहीं पिलाता. आज का विकास तो देखिये रजत आदमी रोटी नहीं सल्फ़ाज खा रहा. प्रिया एक जानी-मानी फिल्म स्टार तथा विश्व सुन्दरी भी है. हर समय तनाव, उधार भरी जिन्दगी. सड़कों पर घूम नहीं सकती. एक साधारण इन्सान की तरह हँसने, मुस्कराने, घूमने, जीने की तमन्ना लिए जीते जी मेरी जा रही.

चन्द्रशेखर, आजाद भगत सिंह से सरीखे जवानों के पथ पर चलने वाले क्रान्तिकारी पर प्रिया मर मिटीं. उधर क्रान्तिकारी के मन में फिल्म बनाकर समाज सुधार की इच्छा बलवती हो रही. मगर फिल्म सम्बन्धी जानकारी व सहयोगी की उसे भी तलाश है. प्रिया ने क्रान्तिकारी को पत्र लिखा. मैं फिल्मी दुनिया की जिन्दगी से ऊब चुकी हूँ. तनिक भी सकून शान्ति नहीं है. सब कुछ नकली व पल भर का है. तनिक भी हकीकत नहीं है. क्रान्तिकारी हमारा तुम्हारा गृह नगर बरेली है. क्या तुम मेरे साथ बरेली में घूम सकते. क्रान्तिकारी तुम क्रान्तिकारी के साथ ब्रह्मचारी भी हो. मैं तुम्हारी भावनाओं की बहुत कद्र करती हूँ. पत्र उत्तर शीघ्र देना. ई-मेल कर देना. क्रान्तिकारी प्रिया के पत्र एक साधारण सा पत्र ही समझता. जैसे लाखों आम लड़कियाँ उसे लिखतीं. उसने प्रिया को उत्तर दिया. तुम मेरा ब्रह्मचर्य नहीं भंग कर सकती. तुम भले ही मेनका क्यों न हो. मगर मैं तपस्वी विश्वामित्र नहीं हूँ. मुझे तुम्हारे साथ बरेली की सड़कों पर घूमने में कोई आपत्ति नहीं है. मगर भारत की जनता कितनी मूर्ख, आयोग्य, जाहिल, स्वार्थी व निकम्मी हैं. इसी से आज हर शाख पर उल्लू बैठा है. जुबली कुमार बरेली साहूगोपी नाथ में एक मुशायरे में आए. मै! भी एक कवि के रूप कार्यक्रम में सम्मिलित हुआ. कुमार जी को मेरी रचना व सूरत बहुत पसंद आयी. कुमार जी मेरी कहानी फिल्म बना रहे थे. उन्होंने मुझे नायक की भूमिका व गीत लिखने को आमंत्रित किया. मैंने कहा मुझे फिल्मी दुनिया में कोई भी दिलचस्पी नहीं है. दो साल बाद जुबली कुमार फिर बरेली आए. वह होटल आनन्द ओबेराय में ठहरे थे. वह मुझे नहीं भूले थे.

दुनिया चमक-दमक के पीछे दौड़ती. मगर इस झूठ तथा मायावी दुनिया की हकीकत तनिक भी नहीं जानती. मैं फिल्मी दुनिया की जिन्दगी से ऊब चुकी हूँ. तनिक भी सकून शान्ति नहीं है. सब कुछ नकली है.

कुमार जी होटल के कर्मचारी से मुझे बुलाया. कुमार साहब ने आदेश दिया. क्रान्तिकारी किसी को मेरे आने की सूचना न दें.

क्रान्तिकारी कुमार जी से मिलने होटल जा रहे थे. रास्ते में एक मित्र मिल गये. बोले कहाँ जा रहे हैं? क्रान्तिकारी जी ने कहा जुबली कुमार ने बुलाया है. वह होटल आनन्द ओबेराय में है. मित्र आश्चर्य चकित. ऐसा हो सकता? मगर क्रान्तिकारी राजा हरिशचन्द्र से बड़ा सत्यवादी. मिस्टर क्रान्तिकारी होटल पहुँचते. इससे पहले ही लाखों का मजम लग गया. पुलिस आ गयी. तब भी भीड़ के तेवर नहीं बदले. मिस्टर क्रान्तिकारी बंद होते-होते बचे. वह तो जुबली कुमार ने आपात व गुप्त जीने से उन्हें बुलाया. इससे पूर्व भी बरेली आने से अनेक फिल्म स्टार तौबा कर गए. क्रिकेट स्टार अशोक ने भी क्रान्तिकारी को टीम इण्डिया में खेलने का न्यौता दिया. मगर उसने अस्वीकार कर दिया. उसने कहा- 'मैं देश में नैतिक क्रान्ति लाना चाहता. मैं लोगों की सेवा करूँगा. बच्चों में सुसंस्कार डालूँगा. क्रान्तिकारी ने अपना जीवन दुनिया की सेवा को समर्पित कर दिया. प्रति पल वह दुखियों, रोगियों की सेवा करता. बच्चों को पढ़ाता, खिलाता, अच्छी शिक्षा देता. रोगियों, वृद्धों की सेवा करता. कोई भी मर जाये. वह ही शव ढोता. वह सभी के दु:ख में शामिल होता. अपना तन, मन, धन, जीवन उसने देश और जनता को दे दिया. क्रान्तिकारी एक राजवंशीय चिराग था. दानवीर कर्ण सा दानी, रावण सा ज्ञानी, अर्जुन सा वीर, परशुराम सा ब्रह्मचारी था.

सारी रियासत उसने परोपकार के खातिर दान-पुण्य में लुटा दी. उसका गाँव बीजामऊ में एक तालाब भी था. जिसका पानी सारा गाँव, पशु पक्षी, जीव जन्तु सभी पीते थे. उस तालाब

की कीमत कई अरब हो गयी, जिसे भूमि माफिया, सरकार सभी हथियाना चाहते. मूल्य देकर खरीदना भी चाहते. मगर पूरा गाँव प्यासा मर जायेगा. सभी ने राजकुँवर के चरणों में धरना डाल दिया. बाबूजी आपके तालाब की आज भी कोई मछली न मार सकता. आपके पुरखों की शान, सम्मान आज भी जिन्दा है. क्रान्तिकारी तालाब गाँव को दान दिया. सत्ता, नौकरशाह, भूमि माफियाओं सभी को सदल-सबल शान्त किया. मगर गाँव का एक आदमी भी धन्यवाद कहने नहीं आया. डी. आई. जी. के. डी. शर्मा की लड़की सपना शर्मा ने तारा टाकीज के सामने कोठी बनायी. मुख्यमंत्री मुल्ला के आदमी ने स्वयं को अधिकारी बताकर कोठी ली. मगर जब सपना ने कोठी खाली करने को कहा. तब अधिकारी बने अपराधी बोले कोठी हमारी है. तुम्हारी कोठी के सामने तुमसे बलात्कार होगा. सारे परिवार की हत्या होगी. सपना क्रान्तिकारी के पास गयी. क्रान्तिकारी ने नजर उठाकर देखा भी नहीं. उसकी सारी फरियादी सुनी. क्रान्तिकारी ने कहा चाहे सी.एम. हो चाहे पी.एम. हो या उनके आदमी. कह देना हमें क्रान्तिकारी ने भेजा है. अपराधी चौबीस घण्टे में कोठी खाली कर गए. क्रान्तिकारी से कह गए. दूसरों का नहीं अपना भला करना सीखो. अब हमारे रास्ते में मत आना. सी.एम., पी.एम. सभी उसे पद, दौलत, मंत्री बनाना चाहते. मगर वह सभी पर ठोकर मार देता. क्रान्तिकारी सख्त बीमार है. उसे कोई देखने भी नहीं गया. इलाज न होने से उसने दम भी तोड़ दिया. पुलिस ने लावारिस लाश समझा. पैसा जेब में रखा. शव गंगा में फेका.

फिल्म स्टार, स्पोर्ट, राजनीतिक स्टार, अपराधी स्टार रो उठे. बोले क्रान्तिकारी तुम थे सच्चे स्टार. हम तो नकली स्टार हैं. हम तो मात्र अभिनय करते. तुमने तो यथार्थ जीवन जिया।.

-रजत कुमार बरेली, उ०प्र०

कुप्रथा

शादी एक सामाजिक प्रथा है लेकिन उससे जुड़ी दहेज प्रथा समाज का सबसे बड़ा कलंक है. यह कितनी बुरी प्रथा है हममें से ज्यादातर इस तरफ ध्यान ही नहीं देते. बेटी पैदा होते ही हर माता-पिता को यह चिंता होने लगती है कि उसके दहेज के लिए पैसा कैसे जोड़े? और वो अपनी छोटी-बड़ी सभी जरुरतों में, खुशियों में कटौती करने लगते हैं ताकि उनकी लाडली सुखी रह सके. क्योंकि जितना गुणी लड़का उतनी ऊँची उसकी बोली. क्यों क्या लड़की के पालन पोषण, पढाई में खर्च नहीं होता. हम अपनी मेहनत की कमाई का लाखों रुपये भी देते है और अपनी लाडली को एक ऐसे घर में भेज देते हैं जहां लोग अपने लिए इसलिए बहुत चाहते हैं क्योंकि बूढी मां काम नहीं होता. संक्षेप में लाखों रुपये खर्च करके हम एक ऐसा परिवार खरीदते हैं जो बेटी के मालिक बन जाते हैं. लड़की जाने दिन भर में ऐसा कितना काम करती है जिनमें मात्रा 2, 3 काम के नौकरानी हजारों रुपए ले लेती है. जिसकी कोई तनख्वाह तो छोड़ो उसके बदले आदर सम्मान तक नहीं मिलता. लोग जरासी तबीयत खराब होने पर ताना मारते हैं. महारानी जी को तो केवल बैठकर खाने का बहाना चाहिए तो क्या वो जीवन भर खा सके उतना पैसा उसके पिता ने नहीं चुकाया? इतना काफी नहीं है. कई लोग ज्यादा दहेज देने का दबाब डालते है. भले ही लड़की वालों को कर्ज ही क्यों न लेना पड़े. कुछ भार डालते हैं ताकि फिर नई बहु और नया दहेज आ सके. काश हम इस प्रथा में सुधार ला सकें. हम अपने समाज में ये नियम बना लें की लड़का हो या लड़की अपना सारा धन उनकी पढ़ाई में, और उनको सक्षम बनाने में लगाए और लड़के, लड़की की संयुक्त जिम्मेदारी बनाएं की वो भविष्य में अपने गृहस्थ जीवन के लिए मिलकर आवश्यक सामग्री जोड़े, मिलकर घर सजाएं और इस सुन्दर जीवन का आनन्द लें. इसके लिए हममें से कुछ लोग शुरुआत करें. कारवां अपने आप बनता जाएगा.

-शिखा भारती, शिक्षिका, नैनी, प्रयागराज, उ.प्र.

हिंदी साहित्य का उद्भव काल

30 अक्टूबर, लखनऊ. विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान की नवगठित लखनऊ इकाई द्वारा 'हिंदी साहित्य के उद्भव काल व हिंदी भाषा के प्रारंभिक इतिहास' पर एक ऑन लाईन विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया. गोष्ठी की अध्यक्षता वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. सूर्य प्रसाद दीक्षित जी ने की. विचार गोष्ठी में मुख्य अतिथि के रूप में महाराष्ट्र से श्रीमती पूर्णिमा उमेश झेंडे, विभागाध्यक्ष-हिन्दी थी. गोष्ठी के समीक्षक राष्ट्रपति एवं राज्यपाल से शिक्षक सम्मान प्राप्त श्री ओमप्रकाश त्रिपाठी रहे. लखनऊ के वरिष्ठ साहित्यकार श्री नरेन्द्र भूषण जी की उपस्थिति उल्लेखनीय रही. संस्थान के सचिव डॉ गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी के मार्गदर्शन में आयोजित इस गोष्ठी में विभिन्न प्रदेशों से 10 चयनित साहित्यकारों ने हिन्दी साहित्य के इतिहास पर अपने विचार दृष्टिकोण रखे. छत्तीसगढ़ के शोधार्थी श्री लक्ष्मी कांत वैष्णव जी का एक लघु शोध भी गोष्ठी में चर्चा में रहा. सभी ने हिन्दी साहित्य के कालखंड विभाजन पर अनेक रचनाकारों के मत पर विस्तार से चर्चा की.

गोष्ठी में लखनऊ की सुप्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. सीमा वर्मा, लखनऊ की ही साहित्यकार डॉ. अर्चना वर्मा, रायबरेली संस्थान की हिंदी सांसद श्रीमती पुष्पा श्रीवास्तव 'शैली', प्रयागराज से प्राचार्या एवं सुप्रसिद्ध कवयित्री डॉ. पूर्णिमा मालवीय, लखनऊ से ही डॉ. तारिका सिंह, डॉ. कुमुद श्रीवास्त, दुर्ग, छत्तीसगढ़ के शोधार्थी श्री लक्ष्मी कांत वैष्णव, प्रयागराज से संस्थान के हिंदी सांसद श्री प्रभांषु कुमार, मध्य प्रदेश से आशीष पाण्डेय जिद्दी, श्री नरेन्द्र भूषण-लखनऊ ने अपने विचार रखे.

गोष्ठी की अध्यक्षता कर रहे डॉ. सूर्य प्रसाद दीक्षित जी ने सभी के विचारों को ध्यान से सुनकर अपने अध्यक्षीय उदबोधन में कहा 'आज जब हिन्दी जगत कहानी, उपन्यास व समकालीन कविता में उलझा हुआ है ऐसे में आदिकाल विषय पर गोष्ठी कराना तथा सबकी सक्रिय भागीदारी होना बहुत ही साहसिक कार्य है.'

गोष्ठी के समीक्षक डॉ. ओमप्रकाश त्रिपाठी जी ने भी इसे बहुत ही श्रेष्ठ कार्य बताया तथा सभी प्रस्तुतियों की प्रशंसा करते हुए अपने विचार रखे. गोष्ठी में डॉ. अर्चना वर्मा जी की सुमधुर वन्दना बहुत ही प्रशंसनीय रही. गोष्ठी में धन्यवाद ज्ञापन डॉ. सीमा वर्मा ने ज्ञापित किया.

आदिकालीन हिन्दी साहित्य के अध्ययन की समस्या

शोध लेखन में वैज्ञानिक दृष्टि अत्यावश्यक है : डॉ० शहाबुद्दीन

'शोध पत्रों का लेखन शोधार्थियों को शोध की ओर प्रेरित करती है. शोध वास्तव में एक जटिल प्रक्रिया है. शोध का उद्देश्य गहन अनुसंधान, विश्लेषण व वैज्ञानिक दृष्टि से नवीन तथ्यों का प्रस्तुतीकरण है. शोध लेखन में वैज्ञानिक दृष्टि अत्यावश्यक है न कि आस्था व भावुकता तथा न ही व्यक्तिगत पक्ष. शोध में नवीनता को स्थापित नहीं किया जाता है अपितु उसमें अज्ञात को ज्ञात करने का विचार प्रमुख है. शोधकर्ता का कार्य भूले हुए तथ्य पुनः प्रकाश में लाना है तथा पूर्व ज्ञान की कड़ी से उसको जोड़ देना है. साहित्यिक शोध आख्यात्मक होते है. शोध में समाज हित होना चाहिए.' उक्त विचार आयोजन के मुख्य अतिथि एवं संस्थान के अध्यक्ष डॉ० शहाबुद्दीन नियाज़ मुहम्मद शेख ने शोध की उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुए कही.

विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, प्रयागराज की लखनऊ ईकाई द्वारा एक आनलाइन विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें अनेक वरिष्ठ एवं नवोदित साहित्यकारों ने प्रतिभाग किया. गोष्ठी की अध्यक्षता डॉ. सूर्य प्रसाद दीक्षित जी ने की. गोष्ठी में मुख्य अतिथि के रूप में विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान के अध्यक्ष शहाबुद्दीन नियाज मुहम्मद शेख रहे.

गोष्ठी में मुख्य वक्ता के रूप में प्रो० राजेन्द्र सिंह (रज्जू भय्या) विश्वविद्यालय, प्रयागराज की सहायक आचार्य डॉ० अल्का प्रकाश जी ने बताया आदिकाल के आरंभ की पहचान

वहा से की जाती जहां वह धार्मिक कर्मकांड व रहस्य भावना से क्रमशः उन्मुक्त हो रहा है. आदिकालीन कवि मनुष्य को ईष्वर रुप में चित्रित करना चाहता है इसकी चर्चा होनी चाहिए.

डा. पूर्णिमा मालवीय, प्राचार्या डिग्री कालेज प्रयागराज ने अपने लघु शोध में कहा 'हिंदी साहित्य का विवेचन करने में यह ध्यान रखना होगा कि किसी विशेष समय में लोगों में रुचि विशेष का संचार और पोषण किधर से और किस प्रकार हुआ. आदिकाल का समय 1050 से 1375 प्रामाणिक माना जाता है. मिश्र बंधुओं ने ईसवी सन 643 से 1387 तक के काल को आरंभिक काल कहा है यह एक सामान्य नाम है और इसमें किसी प्रति को आधार नहीं बनाया गया है या नाम भी विद्वानों ने स्वीकार नहीं किया है.

रायबरेली, उ.प्र. से श्रीमती पुष्पा श्रीवास्तव 'शैली' ने कहा 'साहित्य के इतिहासकार का सबसे महत्वपूर्ण दायित्व यह है की वह युग के समूचे तंतु जाल के रेशों का, जिसमें साहित्य का यथार्थ और युग का अनुभव जो एक दूसरे से गूंथा हुआ है, का विश्लेषण स्पष्टता से करे. जब हम साहित्य के इतिहास पर नजर डालते हैं तब हमारी समस्या होती है कि एक हजार वर्षों का इतिहास कैसे पढ़ा जाए.

जांजगीर, चांपा, छ.ग. से शोधार्थी श्री लक्ष्मीकांत वैष्णव ने कहा-'जहां से हिंदी की यात्रा का अथ होता है उसे आदिकाल, चारण काल, सिद्ध सामंत काल या आचार्य शुक्ल के शब्दों में वीरगाथा काल कहते हैं. अपने नामकरण के संदर्भ में सर्वाधिक विवादित यह काल यथा आचार्य शुक्ल का वीरगाथा काल, मिश्र बंधुओं का प्रारंभिक काल, डॉ. रामकुमार वर्मा का चारण काल तथा आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी का बीजवपनकाल कहा गया. इस काल में संस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश में भी रचनाएं हो रही थी और साथ ही साथ अपभ्रंश की केंचूल को छोड़ती हुई, हिंदी भी अपना रूप ग्रहण कर रही थी.

लखनऊ, उ.प्र. से साहित्यकार डॉ० सीमा वर्मा ने कहा 'हिंदी साहित्य के आदिकाल के इतिहास का अध्ययन करने में समस्याएं तो आयी, और आज भी आती हैं, परन्तु हमारे मूर्धन्य साहित्यकारों ने काल का तथ्यपरक विभाजन करके और इतिहासकारों के शोध के कारण किसी सीमा तक हिंदी साहित्य के उद्‌भव के काल का अध्ययन करने में आज के शोधकर्ताओं को उतनी समस्याएं नहीं आती है, जितनी संभवतः तत्कालीन इतिहासकारों तथा साहित्यकारों को आई होगी.

गोष्ठी में निर्णायक मंडल के सदस्य राष्ट्रपति से शिक्षक सम्मान से सम्मानित सोनभद्र के श्री ओम प्रकाश त्रिपाठी ने कहा-'लगभग 8वीं शताब्दी से 14वीं शताब्दी के काल को आदिकाल माना गया है. इसे वीरगाथा काल या वीर काल, सिद्ध सामंत काल, चारणकाल, सिद्ध साहित्य/नाथ साहित्य, जैन साहित्य, चारणी साहित्य के नाम से भी जाना गया.

गोष्ठी की उपादेयता को किसी भी प्रकार से नकारा नहीं जा सकता.

निर्णायंक मंडल के ही सदस्य लखनऊ के साहित्यकार श्री नरेन्द्र भूषण ने कहा-'कुछ कालजयी रचनाओं को छोड़ दे तो समसामयिक रचनाएं ही पढ़ी जाती है बाद में अपनी उपादेयता खो देता है तो पाठक कम होते जाते हैं.

गोष्ठी की अध्यक्षता कर रहे सुप्रसिद्ध वरिष्ठ साहित्यकार डॉ० सूर्य प्रकाश दीक्षित ने कहा-'आदिकाल हिन्दी का प्रस्थान युग है. किसी ने उद्‌भव काल, उत्पत्ति काल, प्रारम्भिक काल आदि नाम से भी जाना जाता है. आचार्य शुक्ल और हजारी प्रसाद द्विवेदी ने इसको आदिकाल नाम दिया. लेकिन इसको हिंदी या पुरानी हिंदी कहा जाना उचित होगा. इस युग में सब तरह के काव्य पाये जाते है. इसका आविर्भाव छठी शताब्दी के उत्तरार्ध से लेकर 13वीं शताब्दी तक अधिकांश विद्वानों द्वारा माना गया है.

गोष्ठी में संस्थान के सचिव डॉ० गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी ने बताया कि हिन्दी के इतिहास पर लघु शोध एवं परिचर्चा का क्रम निरन्तर चलता रहेगा और अंत में चयनित शोध लेखों को पुस्तकाकार में संस्थान द्वारा प्रकाशित की जाएगी. जिसे सामूहिक शोध के रुप में मान्यता के लिए हिन्दी प्रेमियों के लिए मार्गदर्शक बनाने का प्रयास किया जाएगा. शोध पत्र प्रस्तुत करने वाले साहित्यकारों के शोधों को मान्यता दिलाने के लिए शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार से पत्राचार किया जाएगा. प्रत्येक परिचर्चा में विचार व्यक्त करने वाले सर्वश्रेष्ठ साहित्यकार को परमादरणीय डॉ० सुर्य प्रकाश दीक्षित जी द्वारा सम्मानित किया जाता है तथा अच्छे शोध प्रस्तुत करने वाले एक साहित्यकार को संस्थान द्वारा सम्मानित किया जाता है तथा उसके शोध को संस्थान की मासिक पत्रिका विश्व स्नेह समाज मासिक पत्रिका में प्रकाशित किया जाता है.

गोष्ठी में चार साहित्यकारों ने लघु शोध प्रस्तुत किए तथा छः चयनित साहित्यकारों ने निर्धारित विषय पर विचार प्रस्तुत किए. विचार गोष्ठी में सरस्वती वन्दना डॉ अर्चना वर्मा-लखनऊ तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ. सीमा वर्मा-लखनऊ ने दिया. विचार गोष्ठी का सफल संचालन एवं संयोजन लखनऊ से हिन्दी सांसद डॉ वन्दना श्रीवास्तव 'वान्या' ने किया. संस्थान निरन्तर हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में गहन षोध कार्यों को सम्पादित करवाने हेतु संकल्पित है. संस्थान लगभग 25 वर्षों से हिन्दी सेवा हेतु समर्पित रहा है. गोष्ठी में संरक्षक के रूप में संस्थान सचिव डॉ गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी जी उपस्थिति रहे.

अगली ऑन लाईन गोष्ठी का विषय :

हिन्दी रीति काव्य...नए संदर्भ में

आयोजन की तिथि : 30 दिसम्बर 2020, समयः सायं 7 बजे

शोध लेख भेजने की अंतिम तिथि 25.12.2020

अपने शोध संस्थान के ई-मेल आईडी

hindiseva15@gmail.com

सम्मानार्थ प्रस्ताव आमंत्रित हैं

साहित्य जगत् में लोकप्रिय, विश्वसनीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर चर्चित **विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान,** 2003 से लगातार साहित्यिकारों/पत्रकारों/समाजसेवियों/कलाकारों को सम्मानित करता आ रहा है. इस वर्ष निम्नांकित सम्मान प्रस्तावित है-

1–20 वर्ष से कम उम्र वालों के लिए: पं. नेहरु सम्मान (देश हित व समाज सेवा), श्रीमती चन्द्रावती देवी स्मृति सम्मान (हिन्दी व साहित्य सेवा), श्री गोरखनाथ दुबे स्मृति सम्मान(समाज सेवा), बचपना सम्मान (किसी भी क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए)

2–20 से 40 वर्ष के लिए: काका कलाम सम्मान, कल्पना चावला सम्मान (विज्ञान के क्षेत्र में उल्लेखीय योगदान के लिए), निर्भया सम्मान-(महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए किए गये कार्य के लिए), पत्रकारश्री (पत्रकारिता के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान),

3–40 वर्ष से ऊपर के लिए: डॉ. होमी जहांगीर भाभा सम्मान (विज्ञान के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए), पत्रकार रत्न (पत्रकारिता/संपादन के क्षेत्र में कम से कम बीस वर्ष का अनुभव), समाज शिरोमणि (समाज सेवा के क्षेत्र में कम से कम बीस वर्ष का अनुभव), काव्य शिरोमणि (काव्य की किसी भी एक विधा पर एक पुस्तक न्यूनतम 100 पृष्ठीय पाण्डुलिपि/प्रकाशित), साहित्य शिरोमणि (समग्र साहित्य लेखन, एक पुस्तक न्यूनतम 100 पृष्ठीय पाण्डुलिपि/प्रकाशित)

4-सभी आयु वर्ग के लिए: हिन्दी सेवियों के लिए: विशिष्ट हिन्दी सेवी/हिंदी सेवी सम्मान (हिन्दी की विशेष सेवा के लिए), **राष्ट्रभाषा सम्मान** (हिन्दीत्तर भाषी राज्यों के हिन्दी प्रेमियों के लिए जो हिन्दी का व्यापक प्रचार-प्रसार व लेखन कार्य कर रहे है), **राजभाषा सम्मान**-(सरकारी/अर्द्धसरकारी विभागों/उपक्रमों में कार्यरत राजभाषा अधिकारियों द्वारा हिन्दी के विकास के लिए). **शिक्षकश्री:** (शिक्षा के क्षेत्र में योगदान के लिए), **विधिश्री**-(विधि के क्षेत्र में रहते हुए हिन्दी सेवा के लिए)

5-समग्र साहित्य के लिए संस्थान की सबसे बड़ी उपाधियां क्रमशः साहित्य रत्न(डी.लिट), साहित्य गौरव(डाक्टरेट/पीएचडी), साहित्यश्री हैं. इनके लिए कम से कम 100 पृष्ठों की किसी एक विषय पर लिखि पाण्डुलिपि जो 2017 के बाद लिखी गई हो, प्रकाशित/अप्रकाशित हो, पर दिया जाएगा. प्रत्येक के लिए दो हिन्दी साहित्य सेवी प्रस्तावक का होना आवश्यक है.

विशेषः 1.प्रत्येक वर्ग के लिए दिये गये विभिन्न सम्मानों के लिए उत्कृष्ठ किसी एक का ही चयन किया जाएगा।

2. उपाधियों के लिए चयन त्रिस्तरीय निर्णांयक मंडल द्वारा किया जाएगा.
3. प्रत्येक प्रविष्टि के साथ सम्बन्धित प्रमाणिक विवरण तीन प्रतियों में तथा साथ में एक टिकट लगा जवाबी लिफाफा, सचित्र स्वविवरणीका भेजना होगा।
4. क्रम संख्या एक के लिए सहयोग राशि रुपये 100/ मात्र तथा क्रम संख्या 2 से 5 के लिए रुपये 500/ सहयोग अपेक्षित है।
5. सभी आयु वर्ग में शामिल प्रतिभागियों को विश्व स्नेह समाज मासिक की वार्षिक सदस्यता (रुपये 150/ निशुल्क) प्रदान की जायेगी।

6. सभी वर्ग में विजयी प्रतिभागियों को विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान की साधारण सदस्यता निःशुल्क प्रदान की जाएगी।

7. क्र.सं. 2 से 5 तक के सभी प्रतिभागियों को संस्थान द्वारा प्रकाशित रुपये 500/ तक की पुस्तकें उपहार स्वरुप प्रदान की जायेगी।

8. सहयोग राशि बैंक ड्राफ्ट/धनादेश/ सीधे खाते में (आन लाईन/ऑफ लाईन) **युनियन बैंक ऑफ इंडिया** की किसी भी षाखा से 'सचिव **विष्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद'** के नाम से खाता संख्याः **538702010009259** आईएफएससी कोड–**यूबीआईएन–0553875** में जमा कर, जमा पर्ची की छाया प्रति आवेदन के साथ संलग्न कर भेजना अनिवार्य होगा.

9. किसी भी दषा में रचनाएं व सहयोग राशि लौटाई नहीं जाएँगी.

10. रचनाओं के साथ मौलिकता को दर्शाना अनिवार्य होगा. सम्मान डाक से प्रेषित नहीं किया जाएगा.

11. अपूर्ण प्रविष्टियों पर विचार करना संभव नहीं होगा।

12. किसी प्रकार के विवाद के संबंध में न्यायिक क्षेत्र इलाहाबाद(प्रयागराज) होगा. अन्य किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए ईमेल करे, या व्हाट्सएप करें:

अंतिम तिथिः 30 दिसम्बर 2020

संपर्क कार्यालयः

सचिव, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान,

अनिल चक्की के पास, रामचन्द चन्द्र मिशन रोड, मुंडेरा, धूमनगंज, इलाहाबाद (प्रयागराज)–211011,

ईमेलः sahityaseva@rediffmail.com, hindiseva15@gmail.com, 9335155949

सेवा में

सचिव

विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान

प्रयागराज।

विषयः ....सम्मान/उपाधि के लिए आवेदन।

महोदय,

मैं, नाम............, पता...................... संस्थान साहित्यिक/ सांस्कृतिक/अन्य क्षेत्र में दिये जाने वाले सम्मान/उपाधि के लिए दिए गए विवरण के अनुसार संलग्न कर प्रेषित कर रहा/रहीं हूं। मेरे द्वारा दिये गए समस्त विवरण सत्य है। अगर कोई विवरण अथवा रचना की मौलिकता में कोई समस्या या कमी पाई जाती है तो मेरा सम्मान/उपाधि को निरस्त करने का पूर्ण अधिकार संस्थान के पास सुरक्षित रहेगा। मैं इस संदर्भ में कोई दावा या आपत्ति नहीं करने का वचन देता/देती हूं।

भवदीय

हस्ताक्षर

पूरा नाम

संलग्नकः

१- सचित्र जीवन परिचय २- जमा पर्ची की छाया प्रति, ३- उपाधि/सम्मान के अनुसार मांगी गई पुस्तक/रचना इत्यादि

स्वास्थ्य सूत्र

विश्व का कोई व्यक्ति नही है, जो रोगी बनकर जीना चाहता हो. स्वास्थ्य प्राप्त होता है निम्न सूत्रों के अनुपालन से. अतः हर व्यक्ति सतत् निम्न स्वास्थ्य सूत्रों के पालन करके स्वस्थ रहेः

■ प्रतिदिन सूर्योदय से पूर्व सोकर उठे. रात में अधिक देर तक जागरण न करें.

■ प्रतिदिन नियमित रूप से व्यायाम करें. सप्ताह में कम से कम एक बार पूरे शरीर की मालिश करें.

■सुबह-शाम टहलना लाभदायक है. नियमित रूप से टहलने से संपूर्ण शरीर की मांसपेशियां सक्रिय हो जाती है रक्तसंचार बढ़ता है, शरीर में चुस्ती-फुर्ती आती है, धमनियों में रक्त के थक्के नहीं बनते, हृदय, मधुमेह और उच्च्य रक्तचाप में लाभ होता है.

■धूप, ताजी हवा, साफ-स्वच्छ पानी और सादा-सात्विक भोजन स्वस्थ रहने के लिए जरूरी है.

■ नित्य योगासन-प्राणायाम करने से रोग नहीं होते और दीर्घायु की प्राप्ति होती है.

■ स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन निवास करता है. इसलिए शारीर को स्वस्थ रखें. सदाचारी, निरोगी व्यक्ति सदा सुखी रहता है.

■ स्नान करते समय पहले सिर पर जल डालना चाहिए, उसके बाद अन्य अंगो पर, जल न तो अतिशीतल हो न बहुत गर्म, स्नान के बाद किसी मोटे तौलिये से अच्छी तरह रगड़कर शरीर को पोछना चाहिए.

■ स्वाद के लिए नहीं, स्वस्थ रहने के लिए भोजन करना चाहिए.

■ भोजन न करने से तथा अधिक भोजन करने से पाचक अग्नि दीप्त नहीं होती. भोजन के आयोग, हीनयोग, मिथ्यायोग और अतियोग से भी पाचन शक्ति दीप्त नहीं होती है.

■ पानी या दूध तेजी से न पीयें, इन्हें धीरे-धीरे घूंट-घूंट कर पीयें.

■ भोजन के बाद दांतो को अच्छी तरह साफ करें, अन्यथा अन्नकणों के लगे रहने से उनमें सड़न पैदा होगी.

■ हल्का और जल्दी पचने वाला ही भोजन करना चाहिए. सड़ी-गली या बासी चीजें खाने से रोग होता है. अत्यधिक गर्म खाना खाने से दांत तथा पाचन शक्ति दोनों की हानि होती है. जरूरत से अधिक खाने से अजीर्ण होता है और यही अनेक रोगों की जड़ है.

■भोजन के बाद दिन में थोड़ा विश्राम और रात में टहलना अच्छा रहता है.

■ हमेशा शांत और प्रसन्न रहें. कम बोलने की आदत डालें, जितना जरूरी हो, उतना ही बोले.

■ चिंता से हानि होती है, लेकिन तत्व के चिंतन-मनन से बुद्धि का विकास होता है.

■प्रतिदिन आंखों में अंजन लगाने से आंखों की रोशनी बढ़ती है.

■रात में 10 ग्राम त्रिफला को 200ग्राम ठंडे पानी में भिगों दे, सुबह छान कर उससे आंखे धोएं और बचे हुए जल को पी जाएं.

■ हफ्ते-दस दिन में कानों में एक बार तेल की बूंदे डालें. इससे कान की मैल निकल जाती है.

■ सोने के स्थान को साफ-सुधरा रखें. नींद आने पर ही सोना चाहिए. बिस्तर पर पड़े-पड़े नींद की राह देखना रोग को आमंत्रित करना है. दिन में सोने की आदत न डालें.

■ मच्छरों को दूर करने के उपाय करें. वे रोगों को फैलाने में सहायक होते हैं.

■ अगरबत्ती, कपूर अथवा चंदन का धुंआ घर में प्रतिदिन करें, इससे घर का वातावरण पवित्र होता है.

■ सांस सदा नाक से और सहज ढंग से लें. मुंह से सांस न लें. इससे आयु कम होती है.

■ उत्तम तथा सकारात्मक विचारों से मानसिक सुख तथा स्वास्थ्य अच्छा रहता है.

■ अच्छा साहित्य पढ़े अश्लील एवं उत्तेजक साहित्य पढ़ने से बुद्धि भ्रष्ट होती है, दूसरों के गुणों को अपनाएं.

■सुबह उठते ही एक-दो गिलास ठंडा पानी पीना चाहिए. यदि पानी तांबे के पात्र में रखा हो तो अधिक लाभप्रद है.

■ धूप का सेवन अवश्य करना चाहिए, इससे शरीर को विटामिन डी की प्राप्ति होती है.

■ मैदे की बनी हुई और तली हुई चीजों से परहेज करना चाहिए.

■ हर समय माथा ठंडा तथा पेट गरम रखना चाहिए.

■सप्ताह में एक दिन केवल नींबू पानी पीकर उपवास करना चाहिए, इससे पाचनशक्ति सशक्त होती है और स्वास्थ्य भी ठीक रहता है. यदि पूरा उपवास न कर सकें तो फल खाकर या फल का रस पीकर उपवास करें.

समीक्षा

आचार्य भगवत दुबे प्रणीत दोहा संग्रह 'कोरोना विकराल' के बहाने

-डॉ० कौशलेन्द्र पाण्डेय

समीक्ष्य है देश के बहुविश्रुत कवि जबलपुरवासी आचार्य भगवत दुबे की काव्य कृति 'कोरोना विकराल'. इससे पूर्व के इनके अनेक दोहा संग्रह, काव्य कृतियों सहित दधीचि संज्ञापित एक महाकाव्य तथा अन्यान्य विविध कृतियां है.

कृतिकार ने 'अपनी बात' शीर्षकीय पुरोवाक के अतर्गत दोहा छंद के प्रति स्वयं की विशिष्ट अनुरक्ति के मूल में जो तर्क दिए वे संतोषजनक है. कहते है : 'अपभ्रंश काल का अत्यंत लोकप्रिय छंद दोहा ही रहा था. इसकी पुरातनता के प्रमाण हमें महाकवि कालिदास के अपभ्रंश काव्य में मिलते हैं. ग्राम्यांचलों की पगडण्डियों, चौपालों, खेत-खलिहानों और वानस्थलिक जनपदों से लेकर राजपथों तकक का सूक्ति सहचर यह छंद लोकरंजन का महत्वपूर्ण साधन तो रही ही, पथ प्रदर्शक के रुप में भी यही दिशा-संघान भी कराता था... मध्यकाल में तो इस छंद की तूती बोलती थी. कृतिकार कके ही शब्दों में-'मध्यकाल का सूरमा-दोहा काव्य-किरीट. धुरंधरों की गोटियां पल में देता पीट. श्रीराम चरित मानस में तो आद्योपानत इसी ने मूल कथानक को गति दी, नये-नये प्रकरणों को समायोजित करके ग्रन्थ को समापन के चरम तक पहुंचाया. अलबत्ता इस प्रक्रमम में सोरठे वाले कतिपय संस्कृत के छंदो ने भी काफी हद तक अपना योगदान किया. चन्द्रगुपत विक्रमादित्य के शासन काल में उनके नवरत्नों में चमत्कारी वैदुष्य सम्पन्न सुकवि कालिदास सिंहल नरेश के आमंत्रण पर उनके दरबार पहुंचे थे. बहुविध समाहत भी हुये वह, सिंहल नरेश ने उनकी अहर्निश देखरेख के लिए सर्वगुण एवं शीर्ष व्यक्तित्व सम्पन्न परिचायिका नियुक्त कर रखी थी-लिखित रुप में उसने विशिष्टतम भारतीय अतिथि से अनुरोध किया. काव्यपंक्ति 'कमले कमलोत्पतिः श्रूयते न तु दृश्यते' की पूरक पंक्ति सुलभ कराने के लिए.

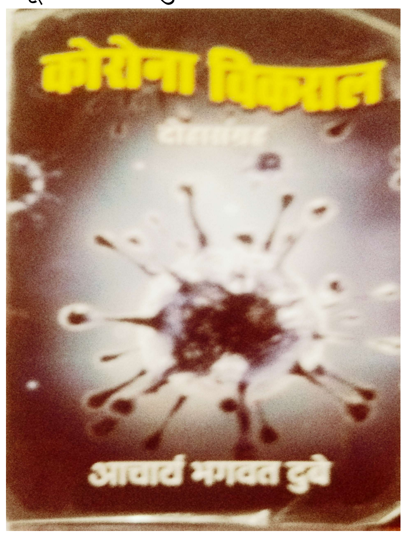

त्वरितरूपेण इन्होंने उसे सटीक पूरक पंक्ति सुलभ करा दी-'बाले! तब मुखाक्बोजे कत इन्दीवर द्वयम्!' विलक्षणता की मिसाल उस परिचारिका के निमित्त ऐसा अकल्पनीय मूल्यांकन पुलक-पूरित भी था-अभूतपूर्व और ऐतिहासिक महल वाला भी.

हम पृथ्वीवासी विश्व के किसी भी कोने में कहीं न कहीं आने भूकम्प, ज्वालामुखी-तूफान, सुनामी, अतिवर्षा, बाढ़ अथवा बादल फटने जैसी प्राकृतिक आपदाओं के काफी कुद अभ्यस्त हो ही चुके थे, किन्तु विगत कुद काल से चीन के वुहान शहर से तकरीबन सम्पूर्ण विश्व को निगल जाने के लिए अधीर कोरोना तथा उसकी विकरालता का ठीक-ठीक अनुमान ही नहीं कर पाये बात की बात में चीन समेत इससे इटली, अमरीका, स्पेन, फ्रांस, रूस, ब्राजील, भारत जैसे बहुतेरे समृद्ध और सम्पन्न देशों को भी अपनी चपेट में ले लिया. सर्वथा अनामंत्रित इस दुष्टा से विमुक्ति के लिए हम कटिबद्ध हो गये. शासन-प्रशासन के स्तर से सभी के संज्ञान में लाये जाने लगा कि क्या है...कैसे पहचाना जाये इसे, अनुभव सम्पन्न किसी चिकित्सक से मशविरा किया जाय, या फिर किसी हकीम से. 'कोरोना विकराल' के संवेदनशील रचयिता दुबे जी को या तो टेलीविजन की मार्फत प्रामाणिक मान्यतायें/ जानकारियां समझ में आई या फिर आहरित किया उन्होंने हम उमर भुक्त भोगियों से. सर्वश्री अश्वनी कुमार पाठक, हरेराम 'समीप', श्याम मनोहर शिरोठिया जय प्रकाश पाण्डेय प्रभृति स्थानीय लेखन धर्मियों की प्रेरणा से किंचिस्मान वक्त खोये बिना पांच सौ दस दोहे रच डाले, रुचि प्रिटर्स ने भी विषय की वैश्विक उपादेयता की दृष्टि से अपनी भूमिका का यथा विधि निष्पादन किया, जनसहयोग भावना से पृष्ठ-तीन की सजावट से ही सुस्पष्ट है. कृतिकार के मनस्ताप को नापने के लिए थर्मामीटर जैसे किसी विशिष्ट यंत्र की आवश्यकता नहीं-उसका प्रतिनिधित्व करने के निमित्त कविश्रेष्ठ की लेखनी अहर्निश रोई है-सुस्पष्ट है जो इनकी ही शब्द सम्पदा से. यथा 'इटली रूस, ब्रिटेन में कोविद हुआ प्रचण्ड.

अमरीका का कर दिया इसने चूर घमण्ड।

अमरिका में हो गये बीस लाख के पार
इटली रूस ब्रिटेन भी रहे रोग से हार।।
बड़े-बड़े जो देश थे वैभव से सम्पन्न।
कोरोना के सामने हैं असहाय विपन्न।।
समान रूप से सुकवि संवेछित रहे हैं स्वदेशान्तर्गत फल फूल रही अनेकानेक अपस्थितियों के अनियंत्रण से. यथा.
महाराष्ट्र के है अभी बहुत बुरे हालात्।
कोरोना से युद्ध में दूर रखे जज़्बात।।
साम्यवाद को कर रहा कोरोना साकार
मरते धनी गरीब सब सबकी एक कतार।।
सचिवालय तक जा घुसा यह कोरोना ब्याल।।
बचे वॉयरस से नहीं धरती नभ पाताल।।
हुए राष्ट्राध्यक्ष तक कोरोना से ग्रस्त
किये सभी के हौसले कोरोना ने पस्त।।
बचे वायरस से नहीं धरती नभ पाताल
वायुयान में चढ़ गया कोविड जंजाल।।
खाते-कुत्ते-बिल्लियां चमगादड़ का मांस
घात लगाकर वायरस छीनें इनकी सांस।।
अब तक तो विज्ञान भी दिखता है असहाय
अपने बस में है यही संयम एक उपाय।।
लम्बी डग भरने लगा कोरोना का प्रेत
छोड़ो लापरवाहियां, सम्हलो रहो सचेत।।
दोहा 508 से सलाह है कि हम सभी साहस संजोये रहें क्योंकि कोई भी युद्ध कभी भी उसी व्यक्ति या समुदाय ने जीता है जो जीवट भी हो और जुझारु होने के साथ-साथ समष्टि हितोपयोगी लड़ाई लड़े. विश्व के लगभग एक दर्जन देश मानवता के प्रति राक्षसी प्रकृति वाली कलियुग की इस महादेवी के रोष-शमन के लिए कोई वैक्सीन अन्वेषित करने में संलग्न है ही. अवश्यंभावी है इन्हीं में से कोई न कोई अपेक्षितत ख्याति का स्वामी आठवें दशक के अंतिम पावदान पर आसीन सरस्वती पुत्र आचार्य करके हौसले को आत्मसात करना होगा.... अक्षरशः जो इस प्रकार है-
कोविड है हत्यारा, दुनिया भर में इसने लाखों को है मारा।/यदि बचके रह पाये/ हो रोगी से दूरी/तो चेन तोड़ पाये।/यदि मास्क लगायेंगे-रोगी से दूर रहें/-तब ही बच पायेंगे दुर्दिन भी बीतेंगे, हारेगा कोरोना, इक दिन हम जीतेंगे।।

—130, मारुतिपुरम, लखनऊ-222616, उ.प्र.

बाबरा मन का फरेब.....

डॉ० ज़ेबा रशीद लेखन की दुनिया में वो नाम है जो किसी परिचय का मुहताज नहीं है. आपका एक उपन्यास 'क्योंकि औरत ने प्यार किया' मैंने पूर्व में पढ़ी थी और उस पर अपनी समीक्षा भी लिखी थी. उस उपन्यास की मेरे पास तीन प्रतियां थी जो मैंने संस्थान के आयोजन साहित्य मेला की पुस्तक प्रदर्शनी में रखवाई थी और तीनों ही पुस्तकें निकल गई. लोगों ने और मांग की थी लेकिन उपलब्ध नहीं थी. अभी कुछ माह पूर्व आपका दूसरा उपन्यास 'बाबरा मन का फरेब....' मुझे बहन डॉ० ज़ेबा की कृपा से प्राप्त हुई. मैंने तीन बार पढ़ी, पढ़कर ऐसा प्रतीत हुआ कि आज भी अच्छे लेखक है जिनको लोग पसंद करेगे और अवश्य ही पढ़ना चाहे. हम लोग कहते है कि पाठक कम हो गये है लेकिन सत्य यह है कि पाठक आज भी है बशर्ते पढ़ने लायक कुछ लिखा जाए. अगर अच्छा लिखा जाएगा तो पाठक उसे अवश्य खरीदेगे और पढ़ेगे भी.

प्रस्तुत उपन्यास में लेखिका बहन डॉ० जेबा रसीद जी, जजो स्वयं एक भावुकतता, करुणा, नम्रता एवं कोमलता को धारण की हुई नारी है. वे अपने उपन्यास के माध्यम से नारी के शारीरिक, मानसिक स्तर पर किए गये शोषण को बेबाक तरीके से प्रस्तुत की है. अपने व्यवसायिक लाभ के लिए पतिव्रता पत्नी को पार्टियों के बहाने नुमााईश लगाकर शोषण को किया जानना, विवाहेत्तर सम्बंधो को लेकर काफी कुछ लिखती है. आज हर सामाजिक व्यक्ति परिवार नाामक सामाजिक संस्था को लेकर चितिंत है, परिवार टूटते व विखरते जा रहे है. परम्परा रही है परिवार नामक संस्था, इन सभी सवालों के जबाब लेखिका ने काफी गहनता से जांच पड़ताल करती नजर आती है.

नारी समाज की धूरी है, वह समाज को बांधे रखती है. वह सारे अभाव, कष्ट, प्रताड़ना झेलते हुए अपने आंसुओं से समाज के लिए गौरव प्रदान करती है. लेखिका ने स्त्री मन की भाव विवल भगिगाओं को उद्वेलित करती हुई सहेलियों के माध्यम से अपने नारीत्व की रक्षा का बहुत ही सरल एवं सहज तरीके से बचाव करती है.

लेखिका को इस सुन्दर सामाजिक उपन्यास लिखने की बधाई. आशा में भविष्य में आपकी लेखनी और भी पढ़नीय उपन्यास प्रदान करेगी.

लेखकः डॉ० ज़ेबा रशीद, मूल्यः २५०/रुपये, प्रकाशकः मिनर्वा पब्लिकेशन

सम्मानार्थ प्रस्ताव आमंत्रित हैं

साहित्य जगत् में लोकप्रिय, विश्वसनीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर चर्चित विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, 2003 से लगातार साहित्यिकारों/पत्रकारों/समाजसेवियों/कलाकारों को सम्मानित करता आ रहा है. इस वर्ष निम्नांकित सम्मान प्रस्तावित है-

1– 20 वर्ष से कम उम्र वालों के लिए: पं. नेहरु सम्मान, श्रीमती चन्द्रावती देवी स्मृति सम्मान, श्री गोरखनाथ दुबे स्मृति सम्मान, बचपना सम्मान

2– 20 से 40 वर्ष के लिए: काका कलाम सम्मान, कल्पना चावला सम्मान, निर्भया सम्मान, पत्रकारश्री

3– 40 वर्ष से ऊपर के लिए: डॉ. होमी जहांगीर भाभा सम्मान, पत्रकार रत्न, समाज शिरोमणि, काव्य शिरोमणि, साहित्य शिरोमणि

4– सभी आयु वर्ग के लिए: विशिष्ट हिन्दी सेवी/हिंदी सेवी सम्मान, राष्ट्रभाषा सम्मान, राजभाषा सम्मान, शिक्षकश्री, विधिश्री

5– समग्र साहित्य के लिए संस्थान की सबसे बड़ी उपाधियां क्रमशः साहित्य रत्न(डी.लिट), साहित्य गौरव (डाक्टरेट/पीएचडी), साहित्यश्री हैं.

अन्य किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए ईमेल करे, या व्हाट्सएप करें:

अंतिम तिथि: 15 फरवरी 2021

संपर्क कार्यालय:

सचिव, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान

अनिल चक्की के सामने, लक्सो कंपनी के पहले, रामचन्द चन्द्र मिशन रोड,
मुंडेरा, धूमनगंज, इलाहाबाद (प्रयागराज)-211011
ईमेल: sahityaseva@rediffmail.com, hindiseva15@gmail.com, 9335155949

तृतीय लघु कथा प्रतियोगिता

पुरस्कार राशि 5000/- रुपये मात्र

देश-विदेश का कोई भी लेखक इसमें प्रतिभाग कर सकता है. इस प्रतियोगिता में उम्र का कोई बंधन नहीं है. आपको अपनी एक लघु कथा पठनीय हस्तलिपि अथवा टंकित कराकर भेजनी होगी। रचना के साथ अपना पूरा नाम, पता, एक फोटो, ह्वाट्सएप नंबर अगर ई-मेल हो ईमेल आईडी भेजना होगा। इस बात का विशेष ध्यान रखें कि लघु कथा 300 (तीन सौ) शब्दों से अधिक की न हो।

नियम एवं शर्तें:

१. रचना मौलिक होनी चाहिए. इसके लिए मौलिकता का प्रमाण देना आवश्यक होगा। किसी भी स्तर पर मौलिकता में कमी सिद्ध होने पर प्रतिभागिता रद्द कर दी जाएगी।

२. प्रतियोगिता तीन चरणों में होगी. प्रत्येक चरण के विजयी प्रतिभागियों को ह्वाट्स समूह, ई-मेल के माध्यम से जानकारी दी जाएगी.

३. प्रथम चरण के प्रतिभागियों को विश्व स्नेह समाज की मासिक पत्रिका एक वर्ष की सदस्यता निःशुल्क दी जाएगी।

४. द्वितीय चरण के लिए चयनित प्रतिभागियों को विश्व स्नेह समाज की मासिक पत्रिका दो वर्ष की सदस्यता निःशुल्क दी जाएगी।

५. तृतीय एवं अंतिम चरण के लिए एक रचनाकार का चयन किया जाएगा. जिसे इलाहाबाद में आयोजित होने वाले साहित्य मेला में पुरस्कार राशि और प्रमाण पत्र स्वयं उपस्थित होकर ग्रहण करना होगा। विजेता को विश्व स्नेह समाज की मासिक पत्रिका पंचवर्षीय सदस्यता निःशुल्क दी जाएगी।

६. प्रतिभागियों को मांगे गये विवरण के साथ रुपये दो सौ पचास का चेक/डीडी/आरटीजीएस/नेफ्ट/आन लाईन अथवा सीधे संस्थान के खाते में जमा कर जमा रसीद की प्रति भेजना अनिवार्य होगा।

खाता धारक का नाम: 'सचिव विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद'
बैंक का नाम : युनियन बैंक ऑफ इंडिया शाखा : प्रीतम नगर, इलाहाबाद
खाता संख्या: **538702010009259** आई.एफ.एस. कोड: यूबीआईएन **0553875**

आवेदन की अंतिम तिथि 15 फरवरी 2021

सचिव, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान

65ए/2, रामचन्द्र मिशन रोड, लक्सों कंपनी के सामने, मुण्डेरा, इलाहाबाद-211011

ह्वाटसएप नं0: 9335155949, sahityaseva@rediffmail.com, hindiseva15@gmail.com

*** नियमों एवं शर्तों में आंशिक परिवर्तन अनुमन्य होगा।**